हिन्दुओं की पोथी

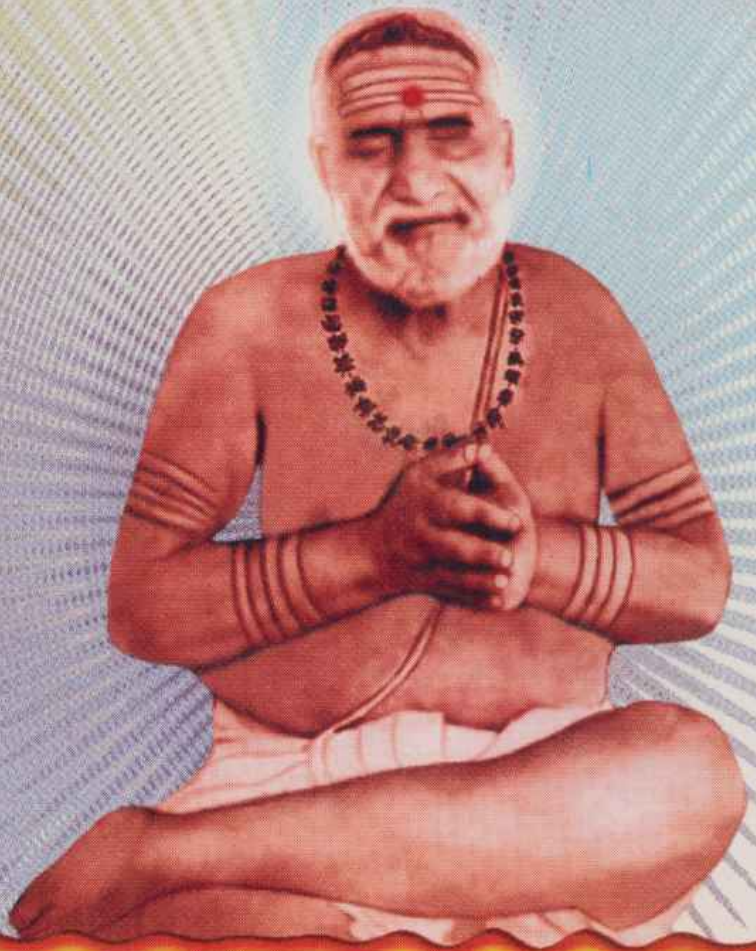

लेखक

पं० देवीदत्त शुक्ल

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६ ☎ ०९२३५९१००७१

★ हिन्दुओं के प्रामाणिक शास्त्र का परिचय ★

★ हिन्दुओं की पूजा-विधि ★

★ हिन्दुओं के दश संस्कार ★

★ हिन्दुओं के नित्य-कर्म ★

★ सर्व-देव-पूजा-विधि ★

★ सिद्ध - स्तोत्र - संग्रह ★

★ पितृ-पूजा, व्रत, स्नान-पर्व ★

★ शव-दाह एवं दश-गात्र-विधि ★

हिन्दुओं की पोथी

★

लेखक

'कौल - कल्पतरु' पण्डित देवीदत्त शुक्ल

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज (उ.प्र.)-२११००६
दूर-भाष : ०५३२-२५०२७८३

सर्वाधिकार सुरक्षित

चतुर्थ संस्करण,
पौष पूर्णिमा, सं० २०६३ वि०
३ जनवरी, २००७

अनुदान : २५.००

मुद्रक
परा-वाणी प्रेस
चण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग,
प्रयाग-राज - २११००६
उ०प्र० (भारत)

भूमिका

(प्रथम संस्करण, सं० १९९८, सन् १९४१ ई० में प्रकाशित)

हिन्दू-जाति का यह पराभव-काल है। उसके इस पराभव के अनेक कारण बताए गए हैं। उनमें एक कारण यह बताया जाता है कि हिन्दू अपना **'धर्म'** भूल गए हैं। यह कथन अधिकांश में सत्य है। जिस **'वेद'** को हिन्दू **'अपौरुषेय'** एवं **'भगवान् का स्वरूप'** मानते हैं, उसे वे अब केवल नाम से जानते हैं। ऐसी दशा में यदि उनका पराभव हो गया है, तो इसमें आश्चर्य क्या?

हिन्दुओं की तरह ईसाइयों और मुसलमानों के अपने-अपने धर्म-ग्रन्थ हैं, जिनके प्रति उनकी असीम और अटूट श्रद्धा है। अपने इसी **'धर्म-प्रेम'** के बल से वे संसार में अपना महत्त्व बनाए हुए है, परन्तु हिन्दुओं ने **'वेद'** से विमुख होकर अपना सब कुछ गँवा दिया है।

सन्तोष की बात है कि हिन्दू अपनी दयनीय अवस्था का अनुभव करते हैं और इस बात के लिये यत्नवान् भी हैं कि उनकी उन्नति हो। इसके लिए जहाँ वे अन्य बातों का सुधार करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वहाँ उनका ध्यान अपने **'धर्म'** की ओर भी है। तथापि **'धर्म की ग्लानि'** से वे कुछ ऐसे फेर में पड़ गए हैं कि उन्हें उचित मार्ग नहीं सूझ रहा है। कौन ऐसा हिन्दू होगा जो **'श्रीमद्-भगवद्-गीता'** के प्रति

श्रद्धा न रखता हो? परन्तु उसमें भगवान् कृष्ण-चन्द्र ने जो उपदेश दिया है, उसकी क्या कोई परवा करता है? भगवान् कृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि **'जो शास्त्र की विधि को न मानकर मन माने ढङ्ग का आचरण करता है, उसका न इह-लोक बनता है, न पर-लोक!'** कितनी सीधी और स्पष्ट बात है! परन्तु यह एक मुख्य बात भी हिन्दुओं के ध्यान में नहीं धँसती!!

आज हिन्दू सदियों से भगवान् कृष्ण के शब्दों में **'मन-माना'** आचरण करते चले आ रहे हैं। ऐसी दशा में उनके इह-लोक और साथ ही पर-लोक का बिगड़ जाना सर्वथा अनिवार्य है।

भगवान् कृष्ण ने **'शास्त्र'** की मर्यादा पर बल दिया है। यही नहीं, प्रसङ्ग-वश उन्होंने कुछ शास्त्रीय कर्मों का उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए हम **'यज्ञ'** को लेते हैं। शास्त्रों में **'यज्ञों'** की बड़ी महिमा है। हिन्दू - धर्म में **'यज्ञ'** का सर्वोच्च स्थान है। **'गीता'** में उस **'यज्ञ'** का बार-बार उल्लेख किया गया है। भगवान् ने कहा है कि —

'यज्ञ - सहित प्रजा को उत्पन्न कर प्रजापति ने कहा कि इससे तुम देवताओं को सन्तुष्ट करो और देवता तुम्हारी इच्छाएँ पूर्ण करें। कर्म 'वेद' से उत्पन्न हुए हैं और 'वेद' ब्रह्म से, इसलिए सर्व-व्यापक 'ब्रह्म' नित्य 'यज्ञ' में प्रतिष्ठित है। जो 'ब्रह्म' के प्रवर्तित इस चक्र का अनुभव नहीं करता, वह पातकी है।''

भगवान् ने **'यज्ञ'** के महत्त्व को ऐसे ही रूप में ग्रहण

किया है। उन्होंने यहाँ तक कह दिया है कि **'जो केवल अपने ही लिए पकाते हैं, वे पाप ही को खाते हैं। जो विद्वान् 'यज्ञ' का बचा हुआ भाग ही खाते हैं, वे पापों से छूट जाते हैं।'** इसी प्रकार भगवान् ने तप, दान आदि शास्त्रीय धर्म-कृत्यों का भी महत्त्व स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है और शास्त्र के प्रामाण्य में कह दिया है कि **'इसलिए शास्त्र का प्रमाण है, क्योंकि उसमें 'विधि' और 'निषेध' की व्यवस्था है। अतएव उसे जानकर 'शास्त्र-विधि' के अनुसार कर्म करना चाहिए।'**

परन्तु हम हिन्दू ऐसे स्पष्ट **'भगवद्-वाक्य'** पर आस्था न कर अपने उद्धार के लिए गली-गली ठोकरें खाते फिरते हैं, यद्यपि हमारे शास्त्रों में मानव-जाति के उद्धार के लिए ऐसे सुगम मार्ग निर्दिष्ट हैं कि उनका अनुसरण करके कोई भी अपने लक्ष्य को अनायास ही प्राप्त कर सकता है।

यह हम मानते हैं कि ये **'शास्त्र'** एक ऐसी भाषा में हैं, जिसे अधिकां श हिन्दू नहीं जानते , किन्तु यह बहाना ही माना जाएगा। अधिकांश मुसलमान न 'अरबी' जानते हैं, न अधिकांश ईसाई 'हिब्रू' भाषा जानते हैं, तथापि उनमें अपने **'धर्म'** का अनुराग किसी 'अरबी-भाषी' या 'हिब्रू-भाषी' से कम नहीं है। सत्य बात यह है कि हिन्दू **'धर्म-ग्लानि'** के आखेट हो गए हैं और जब आज उन्हें चेतना हुई है, तब भी **'शास्त्र'** का राज-मार्ग नहीं पकड़ते हैं।

हमारे शास्त्र-कारों ने हमारे अभ्युदय के लिए सब कुछ स्पष्ट लिख दिया है और वह सब हमारी पहुँच में है। उन्हीं

महत्त्व की बातों का इस पुस्तक में संक्षेप में सङ्कलन किया गया है।

इस पुस्तक के प्रारम्भ में **'हिन्दुओं के प्रामाणिक शास्त्र'** का परिचय दिया गया है। इस प्रकरण में यह बताया गया है कि **'हिन्दू-शास्त्र'** में कौन-कौन प्रधान ग्रन्थ हैं। फिर यह बताया गया है कि हिन्दुओं के कुछ विशेष मन्तव्य हैं, जिनका सदैव स्मरण रखना प्रत्येक हिन्दू का प्रधान कर्तव्य है।

इसके बाद उस **'पूजा-विधि'** का वर्णन किया गया है, जिसका उपयोग सभी धार्मिक कृत्यों के प्रारम्भ और अन्त में समान रूप से होता है। यह **'पूजा-विधि'** सनातन से प्रचलित है और यह एक विशुद्ध **'वैदिक पूजा'** है। यह पूजा इतनी सरस और रोचक है कि इसे तो समस्त धार्मिक हिन्दुओं को मुखस्थ (याद) रखना चाहिए।

तदनन्तर **'दश संस्कारों'** का प्रकरण आता है। हिन्दू को धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए उसकी तैयारी जन्म-ग्रहण करने के पहिले से करनी पड़ती है। उसके लिए शास्त्रों में **संस्कार** निर्दिष्ट किए गए हैं। यहाँ केवल कुछ प्रारम्भ के **'संस्कारों की विधियाँ'** दी गई हैं, जो एक प्रकार से अब कहने भर को ही किए जाते हैं, यद्यपि उनके शास्त्रीय रीति से करने में कुछ भी कठिनाई नहीं है, जैसा कि उस प्रकरण के पढ़ने से आप ही ज्ञात हो जाएगा।

संस्कारों के वर्णन के बाद **नित्य - कर्म** के प्रकरण में

'सन्ध्योपासन' और **'पञ्च-महा-यज्ञों की विधियाँ'** ऐसे ढङ्ग से लिखी गई हैं कि प्रत्येक हिन्दू उन्हें बहुत सरलता से कर सकता है। तदनन्तर **'सर्व-देव-पूजा' की वैदिक तथा पौराणिक विधियाँ** बहुत ही संक्षेप में दी गई हैं, जिनके अनुसार लोग अपने-अपने **'इष्ट-देवता'** की पूजा-अर्चा सुगमता से कर सकते हैं। इस अध्याय में **'पञ्च-देवता'** के जो तान्त्रिक मन्त्र दिए गए हैं, उनमें **'वन-दुर्गा'** का दुर्लभ मन्त्र दिया गया है, जो साधकों के लिए विशेष रूप से कल्याण-प्रद है। इसके अनन्तर ही कुछ मुख्य **'सिद्ध स्तोत्रों का संग्रह'** एक पृथक् अध्याय में किया गया है।

इसके बाद उस **'पितृ-पूजा'** अर्थात् **'श्राद्ध'** का परिचय दिया गया है, जो सारे भू-मण्डल के सभी लोगों में मान्य होते हुए भी आज के हिन्दुओं में अत्यधिक उपेक्षित है। कहाँ तो मनुष्य को **'विघसासी'** होना चाहिए अर्थात् पितरों को दे चुकने पर जो शेष रहे, उसका भोजन करना चाहिए किन्तु आज यह दशा है कि इस **'शास्त्रादेश'** को जानता भी कदाचित् ही कोई होगा — इसको आचरण में लाने की बात तो अलग रही!

'पितृ-पूजा' के बाद एक पृथक अध्याय में **'विशेष पूजाओं तथा दूसरे धार्मिक कृत्यों की क्रियाएँ'** दी गई हैं, फिर भिन्न-भिन्न देवताओं के सम्बन्ध के **व्रतों** और **पूजा-दिवसों** तथा **'स्नान-पर्वों'** का वर्णन किया गया है। इसके बाद **'शास्त्रादेशों का उल्लेख'** एक पृथक् अध्याय में किया गया

है।

पुस्तक के अन्त में एक **'परिशिष्ट'** दिया गया है, जिसमें **'शव-दाह'** तथा उसके बाद की क्रिया अर्थात् **'दश-गात्र की विधि'** दी गई है।

इस प्रकार इस पुस्तक में उन सभी बातों के देने का प्रयत्न किया गया है, जो हिन्दू करते रहते हैं। हमें विश्वास है, इस छोटी-सी पुस्तक से उन्हें **'शास्त्रानुसार'** आचरण करने में बहुत कुछ सहायता मिलेगी। इसमें केवल उन्हीं धार्मिक कृत्यों की विधियाँ दी गई हैं, जो उन्हें **'शास्त्रीय रीति'** से ही करनी चाहिए। वे इस पुस्तक में इस ढङ्ग से लिखी गई हैं कि कोई भी पढ़ा-लिखा आदमी इसके द्वारा अपने सभी धार्मिक कृत्य सरलता से कर सकता है। आवश्यकता है — केवल **'श्रद्धा'** और **'विश्वास'** की।

१९४१, प्रयागराज (उ०प्र०) — **देवीदत्त शुक्ल**

★ ★ ★

विषय-सूची

पहला अध्याय – धर्म का आधार ... १–८

वेद ... १ | पुराण ... ६

स्मृति ... ५ | आगम या तंत्र-शास्त्र ... ८

दूसरा अध्याय—हिन्दू-धर्म का रूप ९

तीसरा अध्याय—सामान्य पूजा-विधि १३

१ आत्म-शोधन ... १३ | ७ नवग्रह-पूजनम् ... १९

२ आसन-शोधन ... ” | ८ षोडशमातृकापूजा ... २०

३ संकल्प ... १४ | ९ हवन-कर्म ... २१

४ शान्तिपाठ ... ” | १० पुष्पाञ्जलि ... २३

५ कलश-स्थापन ... १५ | ११ तिलक ... ”

६ कलश-पूजा ... १७ | १२ विसर्जन ... ”

चौथा अध्याय—दश संस्कार २४

१ गर्भाधान ... २५ | ६ अन्नप्राशन ... ३३

२ पुंसवन ... २६ | ७ चूडाकर्म ... ३४

३ सीमन्तोन्नयन ... २७ | ८ कर्णवेध ... ३६

४ जातकर्म ... २८ | ९ उपनयन ... ”

५ नामकरण ... ३२ | १० विवाह ... ३७

पाँचवाँ अध्याय—नित्यकर्म ३८

१ सन्ध्योपासन ... ३८ | (३) पितृयज्ञ ... ५०

२ पञ्च महायज्ञ ... ४६ | (४) भूतयज्ञ ... ५५

(१) ब्रह्मयज्ञ ... ” | (५) नृयज्ञ ... ५६

(२) देवयज्ञ ... ४९

छठाँ अध्याय—सर्वदेवपूजा ५७

१ पञ्चायतन-पूजा ... ५७
२ वैदिक षोडशोपचार-पूजा ५८
३ एकमंत्रात्मक षोडशोपचार ६०
४ पुराणोक्त सर्वदेवपूजाविधि ६१
५ पार्थिवपूजन ... ६५
६ पंचदेवों के तांत्रिक मंत्र ६९
(१) नारायण ... ,,
(२) शिव ... ,,
(३) दुर्गा ... ७०
(४) गणेश ... ७१
(५) सूर्य ... ,,

सातवाँ अध्याय—स्तोत्र-संग्रह ७२

१ सुप्रभातचिन्तनम् ... ७२
२ श्रीसूक्तम् ... ७३
३ विष्णुपंजरस्तोत्रम् ... ७५
४ महामृत्युञ्जयस्तोत्रम् ... ७७
५ रात्रिसूक्तम् ... ७९
६ सूर्यस्तोत्रम् ... ८०
७ संकटनाशनगणेशस्तोत्रम् ८२
८ सरस्वतीस्तोत्रम् ... ,,
९ इन्द्राक्षीस्तोत्रम् ... ८४
१० रामाष्टकम् ... ८६
११ श्रीकृष्णस्तवराजः ८७

आठवाँ अध्याय—पितृपूजा अर्थात श्राद्ध ९०

१ श्राद्ध-भेद ... ९०
२ मुख्य श्राद्ध-दिन ... ९१
३ चार श्राद्धों की विधियाँ ९२
(१) नान्दीमुख श्राद्ध ,,
(२) सक्तुकान्न श्राद्ध ... ९४
(३) दीपक श्राद्ध ... ९५
(४) कृशरान्न श्राद्ध ... ९६

नवाँ अध्याय—विशेष पूजा-कृत्य ९८

१ नवरात्र-देवीपूजन ... ९८
२ खड्ग-पूजा ... १०१
३ वर्ष-गाँठ ... १०२
४ अश्वत्थ-पूजा-प्रदक्षिणा १०४
५ पतिव्रता-पूजा ... १०६
६ नागपञ्चमी की पूजा ... १०७
७ तुलादान ... १०८
८ होलिका-पूजन ... १०९
९ शमी-पूजन ... ११०
१० गङ्गा-स्नान ... ,,

११ भस्मधारण-विधि ... १११
१२ पादोदक-ग्रहण-मंत्र... ११२
१३ भोजन-विधि ... ११२
१४ यज्ञोपवीत-धारण ... ११३
१५ गोग्रास-दान का मंत्र ११४
१६ सोमवती-अमावास्या का संकल्प ... ”
१७ पंचगव्य-निर्माण ... ११५
१८ ग्रह-पूजा ... ”

दसवाँ अध्याय—व्रत, पूजा और स्नान के दिन ११६

१ विष्णु-सम्बन्धी व्रत ... ११६
२ शिव-सम्बन्धी व्रत ... ११७
३ देवी-सम्बन्धी व्रत ... ११९
४ सूर्य के पर्व ... १२१
५ चन्द्र-सम्बन्धी दिन ... १२२
६ ग्रह-सम्बन्धी ... ”
७ स्नान और दान के कुछ पर्व १२३
८ फुटकर ... १२४

ग्यारहवाँ अध्याय—शास्त्र का आदेश १३०

१ स्मृति का सदाचार ... १३०
२ तन्त्र का उपदेश ... १३३

परिशिष्ट

१ शवदाह ... १३८
२ दशगात्र-विधि ... १४०
३ प्रेतलोक-दीपकदान १४६
४ वैतरणी-गोदान ... ”
५ आराध्य देव ... ”

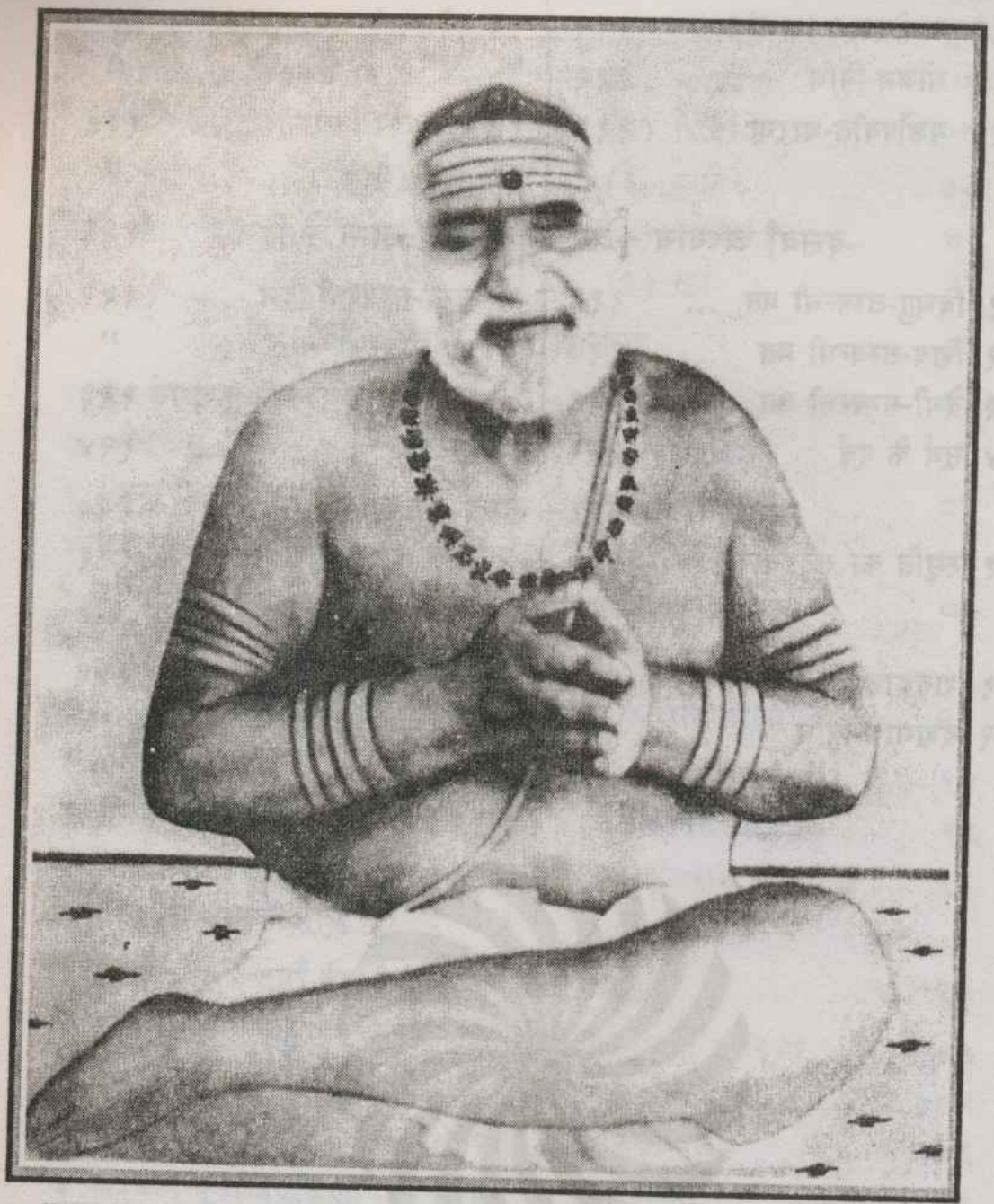

'कौल - कल्पतरु' पण्डित देवीदत्त शुक्ल

श्री गणेशायनमः

हिन्दुओं की पोथी

पहला अध्याय

धर्म का आधार

हिन्दू-धर्म व्यक्ति-प्रवर्तित धर्म नहीं है। उसका आधार वेदादि धर्मग्रन्थ हैं, जिनकी संख्या बहुत बड़ी है। वे सब दो विभागों में विभक्त हैं। एक श्रेणी के ग्रन्थ 'श्रुति' कहलाते हैं। ये अपौरषेय माने जाते हैं। दूसरी श्रेणी के ग्रन्थ 'स्मृति' कहलाते हैं। ये ऋषि-प्रणीत माने जाते हैं। श्रुति में वेद की चार संहिताओं, ब्राह्मणों, उपनिषदों आदि की गणना की जाती है। आगम ग्रन्थ भी श्रुति-श्रेणी में माने जाते हैं। स्मृति-श्रेणी में अठारह स्मृतियाँ मानी जाती हैं। इनके सिवा १८ पुराण तथा रामायण और महाभारत ये दो इतिहास भी स्मृति-श्रेणी में ही गिने जाते हैं। इस प्रकार ४ वेद, १८ स्मृतियाँ, १८ पुराण और २ इतिहास—सब मिलाकर ४२ ग्रन्थ हिन्दू-धर्म के मुख्य ग्रन्थ हैं। इनमें महाभारत तो इतना बड़ा ग्रन्थ है कि संसार की किसी भी भाषा के भाण्डार में उतना बड़ा ग्रन्थ न होगा। यही सब ग्रन्थ हिन्दू-धर्म के आधार हैं।

वेद

वेद हिन्दुओं की दृष्टि में अत्यन्त पवित्र हैं। हजारों वर्ष से वे अपने

असली रूप में रक्खे गये हैं और उनमें कहीं एक शब्द का हेर-फेर होने नहीं पाया है। संसार में शायद ही ऐसे प्राचीन ग्रंथ हों जो इतनी सावधानी से अपने विशुद्ध रूप में हों।

यों वेद से ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद की संहिताओं का ही बोध होता है। परन्तु हिन्दू लोग इन संहिताओं के सिवा ब्राह्मण-ग्रन्थों, आरण्यकों तथा उपनिषदों को भी वेद ही मानते हैं। इनमें ऋक् आदि संहितायें स्तुति-प्रधान हैं, ब्राह्मण-ग्रन्थ यज्ञ-कर्म-प्रधान हैं और आरण्यक तथा उपनिषद् ज्ञानचर्चा-प्रधान हैं।

ऋग्वेद-संहिता—यह चारों संहिताओं में प्रथम गिनी जाती है। अन्य संहिताओं में इसके अनेक सूक्त संग्रह किये गये हैं। यह अष्टकों और मण्डलों में विभक्त है, जो फिर वर्गों और अनुवाकों में विभक्त हैं। इसमें १० मण्डल हैं, जिनमें १०१७ सूक्त हैं। इन सूक्तों में शौनक की अनुक्रमणी के अनुसार १०,५८० मंत्र हैं। यह संहिता सूक्तों अर्थात् स्तोत्रों का भाण्डार है। इसके सूक्तों में भिन्न भिन्न देवताओं की स्तुतियाँ हैं तथा बहुतेरी सामाजिक बातों का भी वर्णन किया गया है।

सामवेद-संहिता—यह कोई स्वतन्त्र संहिता नहीं है। इसके अधिकांश मन्त्र ऋग्वेद के ही हैं। केवल ७२ मंत्र इसके अपने हैं। शेष सब ऋग्वेद के हैं। कुल मंत्र १५४९ हैं। यह संहिता दो भागों में विभक्त है—१ पूर्वार्चिक, २ उत्तरार्चिक। पूर्वार्चिक—छः प्रपाठकों में विभक्त है। इसे 'छन्द' और 'छन्दसी' भी कहते हैं। पूर्वार्चिक को 'प्रकृति' भी कहते हैं और उत्तरार्चिक को 'ऊह' और 'रहस्य' कहते हैं।

यजुर्वेद—इस वेद की दो संहितायें हैं—एक शुक्ल, दूसरी कृष्ण। शुक्ल यजुर्वेद याज्ञवल्क्य को प्राप्त हुआ। उसे वाजसनेयि-संहिता भी कहते हैं। कृष्ण-यजुर्वेद-संहिता उसके पहले की है। उसे तैत्तिरीय संहिता भी कहते हैं। यजुर्वेद के कुछ मन्त्र ऋग्वेद के हैं तो कुछ अथर्ववेद के हैं।

वाजसनेयि संहिता की १७ शाखायें हैं। उसमें ४० अध्याय हैं। उसका

प्रत्येक अध्याय कण्डिकाओं में विभक्त है, जिनकी संख्या १९७५ है। इसके पहले के २५ अध्याय प्राचीन माने जाते हैं और पीछे के १५ अध्याय बाद के। इसमें दर्श पौर्णमास, अग्निष्टोम, वाजपेय, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अश्वमेध, पुरुषमेध आदि यज्ञों के वर्णन हैं।

तैत्तिरीय संहिता ७ अष्टकों या काण्डों में विभक्त है। इस संहिता में मन्त्रों के साथ ब्राह्मण का मिश्रण है। इसमें भी अश्वमेध, ज्योतिष्टोम, राजसूय, अतिरात्र आदि यज्ञों का वर्णन है।

अथर्ववेद-संहिता—यह संहिता २० काण्डों में विभक्त है। प्रत्येक कांड अनुवाकों और अनुवाक ७६० सूक्तों में विभक्त हैं। इस संहिता में १२०० मन्त्र ऋक् संहिता के हैं। कुल मन्त्र-संख्या ६०१५ है।

ब्राह्मण—इस श्रेणी के ग्रन्थ वेद के अंग ही माने जाते हैं। ये दो विभागों में विभक्त हैं। एक विभाग के कर्मकाण्ड-सम्बन्धी हैं, दूसरे विभाग के ज्ञानकाण्ड सम्बन्धी हैं। ज्ञानकाण्ड-सम्बन्धी ब्राह्मण-ग्रन्थ 'उपनिषद्' कहलाते हैं।

प्रत्येक ब्राह्मण-ग्रन्थ में एक न एक उपनिषद् अवश्य है, परन्तु स्वतन्त्र उपनिषद् ग्रन्थ भी हैं, जो किसी भी ब्राह्मण का भाग नहीं हैं और न 'अरण्यकों' के ही भाग हैं। कुछ उपनिषद् अरण्यकों में भी पाये जाते हैं।

ब्राह्मण-ग्रन्थों में यज्ञ-विषय का वर्णन है। अरण्यकों में वानप्रस्थ-आश्रम के नियमों का वर्णन है। उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान का निरूपण किया गया है।

प्रत्येक ब्राह्मण किसी न किसी वेद से सम्बन्ध रखता है। ऋग्वेद के ब्राह्मण—ऐतरेय और कौशीतकि हैं; सामवेद के ब्राह्मण—ताण्ड्य, षड्विंश, सामविधान, वंश, आर्षेय, देवताध्याय, संहितोपनिषत्, छान्दोग्य, जैमिनीय, सत्यायन और भल्लवी हैं; कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण तैत्तिरीय है और शुक्ल यजुर्वेद का शतपथ है; अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है। ये कुछ मुख्य मुख्य ब्राह्मणों के नाम हैं।

आरण्यक—इस विभाग के ग्रन्थों में ऐतरेय, कौशीतकि और बृहदारण्यक मुख्य हैं।

उपनिषद्—इस विभाग के ग्रंथों की संख्या १२३ से लेकर ११९४ तक बताई गई है, परन्तु उनमें दस ही मुख्य माने गये हैं, जिनके नाम—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य और बृहदारण्यक हैं। इनके सिवा श्वेताश्वतर और कौशीतकि को भी महत्त्व दिया गया है।

ये तो हुए श्रुति-ग्रन्थ। परन्तु इनके सिवा कुछ ऐसे ऋषि-प्रणीत ग्रंथ हैं जिनका श्रुति-ग्रंथों से घनिष्ट सम्बन्ध है। उनमें (१) वेदांग और (२) सूत्र ग्रन्थ हैं।

वेदांग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त—ये छः वेदाङ्ग हैं।

(१) शिक्षा—इसमें वेद-मंत्रों के उच्चारण करने की विधि बताई गई है।

(२) कल्प—वेदों के किस मंत्र का प्रयोग किस कर्म में करना चाहिए, इसका कथन इसमें किया गया है। इसकी तीन शाखायें हैं, अर्थात् श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र।

(३) व्याकरण—इससे प्रकृति और प्रत्यय आदि के योग से शब्दों की सिद्धि और उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों की स्थिति का बोध होता है।

(४) निरुक्त—वेदों में जिन शब्दों का प्रयोग जिन जिन अर्थों में किया गया है उनके उन उन अर्थों का निश्चयात्मक रूप से उल्लेख निरुक्त में किया गया है।

(५) ज्योतिष—इससे वैदिक यज्ञों और अनुष्ठानों का समय ज्ञात होता है। यहाँ ज्योतिष से मतलब 'वेदाङ्ग ज्योतिष' से है।

(६) छन्द—वेदों में प्रयुक्त गायत्री, उष्णिक् आदि छन्दों की रचना का ज्ञान छन्दशास्त्र से होता है।

सूत्र-ग्रन्थ—

(१) श्रौत सूत्र—इनमें मुख्य मुख्य यज्ञों की विधियाँ बताई गई हैं।

(२) धर्म-सूत्र—इनमें समाज की व्यवस्था के नियम बताये गये हैं। आश्रम, भोज्याभोज्य, ऊँच-नीच, विवाह, दाय एवं अपराध आदि विषयों का वर्णन इनमें किया गया है।

(३) गृह्यसूत्र—इनमें गृहस्थों के आह्निक कृत्य एवं संस्कार तथा वैसी ही दूसरी धार्मिक बातें बताई गई हैं।

इन सभी सूत्र-ग्रन्थों का आधार वेद ही हैं। इनमें जो धार्मिक कृत्य बताये गये हैं उन सभी में वेदों के मंत्रों का ही प्रयोग है। इन्हीं ग्रन्थों के प्रभाव से वेद के मंत्रों का उपयोग हिन्दुओं के जीवन में आज तक होता जा रहा है। इस दृष्टि से भी ये ग्रन्थ बड़े महत्त्व के हैं और इसी कारण वेद की कोटि में माने जाते हैं।

ऋग्वेद के सांख्यायन और आश्वलायन नाम के श्रौत सूत्र हैं। सामवेद के मशक, कात्यायन और द्राह्यायन के श्रौत सूत्र हैं। शुक्ल यजुर्वेद का कात्यायन श्रौत सूत्र और कृष्ण यजुर्वेद के आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, बोधायन, भारद्वाज आदि के ६ श्रौत सूत्र हैं। अथर्ववेद का वैतान सूत्र है।

धर्मसूत्रकारों में आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, बोधायन, गौतम, वशिष्ठ आदि मुख्य हैं।

गृह्यसूत्रों में सांख्यायन, शाम्बव्य तथा आश्वलायन के गृह्यसूत्र ऋग्वेद के हैं। सामवेद के गोभिल और खदिर गृह्यसूत्र हैं। शुक्ल यजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र है और कृष्ण यजुर्वेद के ७ गृह्यसूत्र हैं जो उसके श्रौत सूत्रकारों के ही नाम पर हैं। अथर्ववेद का कौशिक गृह्यसूत्र है।

स्मृति

जिन महर्षियों ने श्रुति के मन्त्रों को प्राप्त किया है उन्हींने अपनी स्मृति की सहायता से जिन धर्मशास्त्र के ग्रन्थों की रचना की है वे 'स्मृति' ग्रन्थ कहे

गये हैं। इनमें समाज की धर्ममर्यादा बताई गई है, अर्थात् वर्णधर्म, आश्रम-धर्म, राजधर्म तथा साधारणधर्म का निरूपण किया गया है। प्रातः से सन्ध्या तक और सन्ध्या से प्रातः काल तक किस किस प्रकार के मनुष्यों का क्या क्या कर्तव्य है, वह सब स्मृति-ग्रन्थों में बताया गया है। ब्राह्मण आदि चार वर्णों के स्त्री-पुरुषों का क्या कर्तव्य है, आदि सबका निरूपण इन ग्रन्थों में किया गया है।

मुख्य स्मृतिकार ये हैं और इन्हीं के नाम पर इनकी स्मृतियाँ हैं—

(१) मनु, (२) अत्रि, (३) विष्णु, (४) हारीत, (५) याज्ञवल्क्य, (६) उशना, (७) अंगिरा, (८) यम, (९) आपस्तम्ब, (१०) संवर्त, (११) कात्यायन, (१२) बृहस्पति, (१३) पराशर, (१४) व्यास, (१५) शंख, (१६) लिखित, (१७) दक्ष, (१८) गौतम, (१९) शातातप, और (२०) वशिष्ठ।

इनके सिवा निम्नलिखित ऋषि भी स्मृतिकार माने गये हैं और उनकी स्मृतियाँ 'उपस्मृतियाँ' मानी जाती हैं। इनके नाम ये हैं—

(१) गोभिल, (२) जमदग्नि, (३) विश्वामित्र, (४) प्रजापति, (५) वृद्धशातातप, (६) पैठीनसि, (७) आश्वलायन, (८) पितामह, (९) बौद्धायन, (१०) भरद्वाज, (११) छागलेय, (१२) जाबालि, (१३) च्यवन, (१४) मरीचि, (१५) कश्यप आदि आदि।

पुराण

पुराणों में सृष्टिक्रम, राजवंशावली, मन्वन्तर-क्रम और मुख्य मुख्य राजवंशों व ऋषिवंशों के प्रधान व्यक्तियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इनके सिवा पञ्चदेवताओं व अवतारों की उपासना, तीर्थों, व्रतों और दानों का माहात्म्य भी विस्तार से बताया गया है। उनमें प्राचीन सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक आचारों, नियमों और क्रियाओं का वर्णन है। निर्गुण ब्रह्मोपासना व सगुण ईश्वरोपासना, मूर्तिपूजा आदि की व्यवस्था दी गई है।

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के धर्मकर्म, लोकाचार, राजधर्म, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि विषय विस्तार से बताये गये हैं। आदर्श व्यक्तियों के विस्तृत चरित्र-वर्णनों से धर्म के भिन्न भिन्न स्वरूपों का उनमें सुन्दर ढङ्ग से स्पष्टीकरण किया गया है।

व्रतों का तो इतना अधिक महत्त्व स्थापित किया गया है कि वे वर्षों तक किये जाते हैं और उनके उद्यापन का विधान बहुत विस्तार के साथ कहा गया है। कुछ व्रत जैसे सावित्री और अनन्तव्रत १४ वर्ष तक चलते हैं। कुछ व्रत जैसे कृष्ण-जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, शिवरात्रि, रामनवमी आदि जीवन-पर्यन्त किये जाते हैं। इस प्रकार पुराणों में व्रतों एवं तीर्थ-माहात्म्यों आदि का भी बहुत अधिक वर्णन किया गया है। इस प्रकार पुराणों में हिन्दू-धर्म का विस्तार से ललित रूप में वर्णन किया गया है।

पुराण १८ हैं। विष्णु-पुराण में उनके ये नाम दिये गये हैं—

१ ब्रह्म, २ पद्म, ३ विष्णु, ४ शिव, ५ भागवत, ६ नारद, ७ मार्कण्डेय, ८ अग्नि, ९ भविष्य, १० ब्रह्मवैवर्त्त, ११ लिंग, १२ वराह, १३ स्कन्द, १४ वामन, १५ कूर्म, १६ मत्स्य, १७ गरुड, १८ ब्रह्माण्ड।

इनके सिवा उपपुराण भी हैं। देवी भागवत में १८ उपपुराणों के ये नाम हैं—

१ सनत्कुमार, २ नरसिंह, ३ बृहन्नारदीय, ४ शिव अथवा शिवधर्म, ५ दुर्वासा, ६ कपिल, ७ मानव, ८ औशनस, ९ वरुण, १० कालिका, ११ साम्ब, १२ नन्दिकेश्वर, १३ सौर, १४ पराशर, १५ आदित्य, १६ महेश्वर, १७ भागवत, १८ वाशिष्ट।

इनके सिवा ब्रह्माण्ड, कौर्म, भार्गव, आदि, मुद्गल, कल्कि, देवीपुराण, महाभागवत, बृहद्धर्म, परानन्द, पशुपति पुराण नाम के ११ उपपुराण या 'अति पुराण' और भी मिलते हैं।

इस प्रकार उपपुराणों या अति पुराणों के २९ नाम मिलते हैं। उनकी संख्या ४६ के लगभग बताई गई है।

आगम या तन्त्रशास्त्र

इस शास्त्र में हिन्दू-धर्म के देवताओं की साधना की विधियाँ बताई गई हैं, यही इसकी विशेषता है। परन्तु इनके सिवा इसमें अन्य विषयों का भी वर्णन किया गया है। यह शास्त्र तीन भागों में विभक्त है, जो आगम, तंत्र और यामल कहलाते हैं। आगम नाम के तंत्रों में—सृष्टि, प्रलय, देवताओं की पूजा तथा साधन-विधि, पुरश्चरण, षट्कर्म-साधन, चतुर्विध ध्यान-योग आदि विषयों का वर्णन किया गया है। तंत्र कहे जानेवाले ग्रन्थों में—सृष्टि, प्रलय, मंत्र-निर्णय, देवताओं का संस्थान, तीर्थवर्णन, आश्रमधर्म, विप्र-संस्थान, भूतादि का संस्थान, मंत्र-निर्णय, देवताओं की उत्पत्ति, कल्प-वर्णन, ज्योतिष-संस्थान, पुराणाख्यान, कोष, व्रत, शौचाशौच, स्त्री-पुरुष-लक्षण, राजधर्म, दानधर्म, युग-धर्म-व्यवहार, अध्यात्म आदि विषयों का वर्णन किया गया है। यामल नाम के ग्रन्थों में सृष्टि-तत्त्व, ज्योतिष, नित्यकृत्य, कल्पसूत्र, वर्णभेद, जातिभेद और युगधर्म आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

तंत्र-शास्त्र सम्प्रदायात्मक है। वैष्णवों, शैवों, शाक्तों के अलग अलग तंत्र-ग्रन्थ हैं। इन सबके ग्रन्थों की संख्या बहुत बड़ी है। अकेले शाक्तों के केवल आगम ग्रन्थों की ही संख्या ६४ है।

इन्हीं ग्रन्थों में आर्यों की परम साधना वीराचार का प्रामाणिक रूप से निरूपण किया गया है।

इस ऊपर के वर्णन से हिन्दू-धर्म के प्रमुख धर्म-ग्रन्थों का वर्णन आ गया है। इस वर्णन में दर्शन-ग्रन्थों का वर्णन नहीं किया गया है, यद्यपि उनका महत्त्व किसी भी भाँति कम नहीं है। दर्शनों में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त आदि माने जाते हैं। इनमें तत्त्व-निरूपण किया गया है। इनकी विचार-पद्धति संसार में आज भी बेजोड़ है।

दूसरा अध्याय

हिन्दू-धर्म का रूप

वेद में अनेक देवताओं के सूक्त हैं। उन देवताओं में वरुण, अग्नि, इन्द्र और सूर्य प्रधान हैं। शेष देवता या तो इन में से किसी एक के विकसित रूप हैं या सखा हैं। वायु, मरुत और रुद्र इन्द्र के घनिष्ठ सखा हैं और यह भी कि ये इन्द्र के दूसरे स्वरूप हैं। इसी तरह वरुण, मित्र और विष्णु सूर्य के रूपान्तर हैं।

वेद में यज्ञ-धर्म की बहुत महिमा है। देवताओं की स्तुति करना तथा उन्हें भेट-स्वरूप प्रिय वस्तु का प्रदान करना यज्ञ के मुख्य अंग हैं। देवताओं को प्रसन्न करने, उनकी कृपा से अपनी आवश्यकतायें पूरी करने तथा कष्टों को दूर करने के लिए यज्ञ किये जाते हैं। यज्ञ की अग्नि में देवताओं के लिए घी और धान्य छोड़ा जाता है। इनके सिवा सोम का रस भी छोड़ा जाता है। और जो बच रहता है उसे यज्ञ करनेवाले खाते और पीते हैं।

यज्ञ के द्वारा देवताओं को प्रसन्न तो किया ही जाता है, परन्तु उसका मुख्य उद्देश स्वर्ग प्राप्त करना भी है।

प्राचीन काल में तो यज्ञ ही होते थे, परन्तु अब यदा-कदा ही होते हैं। उस समय अग्निहोत्र की बड़ी महिमा थी। सब द्विजातियों के घरों में अग्नि-कुण्ड रहता था, जिसमें अग्नि बराबर बनी रहती थी। इसे गृहाग्नि कहते थे और इसी की आग से गृहस्थ अपने दूसरे धार्मिक कृत्य तथा गृह-सम्बन्धी कार्य करते थे। अधिक धार्मिकों के यहाँ यज्ञशाला अलग रहती थी और उसमें तीन कुण्ड होते थे। प्रत्येक कुण्ड की अग्नि के अलग अलग नाम थे। एक अहवनीय, दूसरी गार्हपत्य और तीसरी दक्षिण कहलाती थी।

प्रत्येक दिन सवेरे और सन्ध्या को कुटुम्ब का प्रधान अपनी स्त्री और बच्चों के साथ जाकर हवनकुण्डों में पलाश की लकड़ी और अक्षत-घी का हवन करता था। अक्षत-घी का जो भाग बच जाता था उसे होता खाता था।

यज्ञकुण्डों की अग्नि बराबर जलती रहती थी। यदि कभी बुझ जाती थी तो प्रायश्चित्त करके फिर जला ली जाती थी।

प्रतिदिन के अग्निहोत्र के सिवा अन्य अवसरों पर भी लोग हवन करते थे। प्रत्येक चतुर्दशी, अमावस्या (दर्श) और पूर्णिमा को विशेष धार्मिक कार्य किये जाते थे। अमावस्या और पूर्णिमा को प्रत्येक गृहस्थ अपनी पत्नी के साथ साधारण वस्त्र पहन कर जंगल में जाता और वहाँ से समिध और कुश एकत्र कर सिर पर लाद कर लाता। इसके बाद पाक्षिक धार्मिक कृत्य की तैयारी करता। वह पहले समिध को संस्कृत करता, मृगचर्म बिछाता, यज्ञ-सम्बन्धी पात्र यथा स्थान वेदी पर रखता। इसके बाद वह अपनी स्त्री के साथ पुरोडाश बनाता। वह यथा परिमाण चावलों को यथा विधि पीसकर उसे अपने हाथ से सानकर एक पिण्ड बनाता। इसे वह ईंट के आठ टुकड़ों पर रखता, जो एक विशेष ढंग से गोलाकार आग पर रक्खे होते थे। इसके बाद वह पिंड चौकोर रोटी के रूप में कछुए की पीठ जैसे में परिणत किया जाता। जब वह रोटी पक जाती तब आग से निकाल ली जाती। इसके बाद लकड़ी के स्रुवा से आग में पाँच बार घी छोड़ा जाता। वह घी भिन्न भिन्न देवताओं के नाम पर छोड़ा जाता। इसे पंच प्रयाग कहते थे। इसके बाद पुरोडाश के टुकड़े किये जाते और उन टुकड़ों पर घी छोड़ा जाता। फिर एक-एक टुकड़ा भिन्न भिन्न देवताओं के नाम पर अग्नि में छोड़ा जाता। जो टुकड़े बच रहते उन्हें सब एकत्र कुटुम्बी खाते और देवताओं के प्रसन्नार्थ और अपने पन्द्रह दिन के पापों के क्षमार्थ सूक्तों का पाठ करते। यह पाक्षिक कर्म धनी लोग पुरोहितों से भी करवाते थे। प्रायः चार व्यक्ति मिलकर इस कृत्य को करते थे।

इसी प्रकार प्रत्येक चौथे महीने चातुर्मास्य और उत्तरायण तथा दक्षिणायन के आरम्भ के षट् मासिक याग भी किये जाते थे। षट्मासिक याग में पशुवध भी होता था और यह कृत्य अधिक धूमधाम से किया जाता था।

इसी प्रकार प्रत्येक धनी गृहस्थ वर्ष में एक बार सोमयाग भी करता था। यह याग खुली जगह में होता था और इसमें कम से कम १६ पुरोहित भाग लेते थे। साधारण वार्षिक सोमयाग भी होता था। इसे अग्निष्टोम कहते थे और यह पाँच दिन तक होता था। दूसरे सप्ताहों और महीनों तक होते रहते थे। ऐसे भी याग (सत्र) होते थे जो वर्षों तक होते रहते थे। और इन सार्वजनिक-श्रौत कर्मों में बलि किये गये पशुओं का मांस और सोमरस का उपयोग किया जाता था। एक समय सभी प्रकार के पशुओं की बलि दी जाती थी, परन्तु बाद को बलि-पशु अकेला बकरा ही मान लिया गया। बलि किये गये पशु के विशेष अंग देवताओं के लिए अग्नि में छोड़े जाते थे और उसके जो भाग बच रहते थे उन्हें पुरोहित लोग खाते थे।

परन्तु इन यागों का मुख्य अंग सोम-रस का प्रदान करना होता था। इसका कुछ अंश देवताओं के लिए छोड़ा जाता था और कुछ अंश पुरोहित और यजमान स्वयं पान करते थे। यह कृत्य पाँचवें दिन सवेरे, मध्याह्न और सायंकाल किया जाता था।

परन्तु कालान्तर में वेद-विद्या का प्रचार सीमित हो गया, अतएव उसके स्थान में स्मृतियों तथा पुराणों में वर्णित धर्मों का प्रचार हो गया। और यद्यपि समाज में वैदिक-कर्मकाण्ड की महिमा बराबर बनी हुई है, तथापि इष्ट-साधना अब लोग पुराण आदि के ही अनुसार करते हैं।

वर्तमान समय में भी हिन्दू धार्मिक कार्यों में अपना पर्याप्त समय लगाते हैं। वे अपने धार्मिक जीवन के नियमों को यथा साध्य बराबर पालन करते हैं, जो मुख्यतः इस प्रकार हैं—(१) स्नान २ सन्ध्योपासन, ३ पितृ तर्पण, ४ अग्निहोत्र, ५ बलिवैश्यदेव, ६ इष्टदेव-पूजा।

उपर्युक्त धार्मिक कृत्यों के सिवा और भी कुछ कृत्य हैं जिन्हें धर्मभीरु

लोग नित्य करते हैं; जैसे अनाहूत अर्थात् स्वेच्छा से आये हुए व्यक्ति को भोजन देना, किसी मन्दिर में देवता के दर्शनार्थ जाना, महीने के मुख्य मुख्य दिनों या तिथियों पर व्रत करना, किसी पुराण आदि धर्म-ग्रन्थ का पढ़ना आदि।

हिन्दू निर्गुण-निराकार ब्रह्म, सगुण-सृष्टिकर्ता ईश्वर, सगुण-साकार ईश्वर की ब्रह्मा, विष्णु और महेश नाम की शक्तियों तथा उनके अवतारों, तेंतीस कोटि देवताओं, स्वर्ग, नरक आदि नाना लोकों, श्राद्ध-तर्पण, कर्म-सिद्धान्त, पुनर्जन्म और मोक्ष, फलित ज्योतिष, वैज्ञानिक विद्याओं, पातिव्रत-धर्म, तीर्थ, व्रत और मूर्तिपूजा, जाति-गुण-कर्मानुसार समाज-श्रेणियों, षोडश संस्कारों को मानता है। वह गोरक्षा करना परमधर्म समझता है। स्पर्शा-स्पर्श, भक्ष्याभक्ष्य, ऊँच-नीच, रक्त शुद्धता आदि भी उसके धर्म के अङ्ग हैं। हिन्दू का यह दृढ़ विश्वास है कि उसकी यह धर्मभावना वेद-शास्त्र-सम्मत है। आस्तिक हिन्दू का तथा उसके धर्म का ऐसा ही भव्य रूप है।

तीसरा अध्याय

सामान्य पूजा-विधि

सभी धार्मिक या सामाजिक कृत्यों के प्रारम्भ में कुछ क्रियायें समान रूप से की जाती हैं। वे हैं—आत्म-शोधन, आसन-शोधन, संकल्प, स्वस्ति-पाठ, पुण्याहवाचन, मंगल-पाठ, घटस्थापन-पूर्वक गणेश, वरुण आदि पूजन। इनके सिवा किसी-किसी कर्म में नवग्रह-पूजन, मातृका-पूजन, कुश-कण्डिका-कर्म अर्थात् हवन एवं नान्दीमुखश्राद्ध भी किया जाता है। यहाँ इनमें से कुछ विशेष क्रियायें दी गई हैं।

१ आत्मशोधन

स्नान आदि करके कर्त्ता शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। तब—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

यह मंत्र पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़के और अपने को पवित्र समझे। बाद को ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः पढ़कर तीन बार आचमन करे।

२ आसन-शोधन

इसके बाद हाथ में जल लेकर यह विनियोग पढ़े—

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

फिर यह मंत्र पढ़ कर आसन पर जल छिड़के—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

३ संकल्प

अपने दाहने हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करे–

ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रहरार्धे श्रीश्वेत वाराह-कल्पे जंबुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे—अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामशर्माहं* (अमुकनाम्नः प्रतिनिधित्वेन वा) अमुककामना-सिद्ध्ये (अमुकनामाख्यकर्मणि) तदंगतया विहितं निर्विघ्नतार्थं यथासंपादितसामग्र्या स्वस्तिवाचनं गणेश-वरुण-सूर्यादिनवग्रह-षोडशमात्रिका-पूजनं च करिष्ये+ ।

४ शान्तिपाठ

इसके बाद शान्ति-पाठ के ये मन्त्र पढ़े—

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतासः उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्न प्रायुवोरक्षितारो दिवे-दिवे ॥१॥

ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो निवर्तताम् । देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥

ॐ तान्पूर्वयानि विदाहूमहे वयं भगं मित्रमदीतिन्दक्षमस्रजम् । अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः शुभगामयस्करत् ॥३॥

ॐ तन्नो वातो मयो भुवः भेषजं तन्माता पृथ्वीत्तत्पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्यो युवम् ॥४॥

* ब्राह्मण शर्माहं, क्षत्रिय वर्माहं, वैश्य गुप्तोऽहं, ऐसे बोले;
+ दूसरे के बदले किया जाय तो करिष्यामि कहना होगा ।

ॐ तमीशानं जगतः तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥

ॐ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरं शुभं यावानोद्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽवसागमन्निह ॥७॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ८ ॥

ॐ शतमिन्नु शरदोऽन्ति देवाः यत्रा नश्चक्राजरसं तनूनां। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी ऋषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥

ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिः। माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः। पञ्चजनाः अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥

शान्तिपाठ से शरीर सब प्रकार से शुद्ध हो जाता है तथा अकल्याण और अशुभ दूर हो जाता है।

५ कलश-स्थापन

शान्ति-पाठ कर चुकने पर कर्त्ता कलश की स्थापना करे।

(१) मंगल-पाठ—हाथ में अक्षत या पुष्प लेकर मंगल की कामना से स्तुति करे—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ १ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ २ ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे गमने तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥ शुक्लांबर-

धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ ६ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः ॥७॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारा-बलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥८॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवर-श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥९॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥१०॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥११॥ सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान-जनार्दनाः ॥१२॥

मंगल-पाठ कर चुकने पर कर्त्ता कलश में जल भर कर उसे वेदी पर स्थापित करे। फिर उस पर एक पात्र में यव भर कर रक्खे, जिसके ऊपर घी का दीपक जलाकर रखे। कलश पर रोचना से गणेश की आकृति बनावे। भूमि पर ग्रहों और मातृकाओं की पूजा के लिए उनके 'चक्र' बनावे। इसके बाद पूजन आरम्भ करे। पहले गणेश की पूजा करे।

(२) गणेश-पूजा—ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे। निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि- गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

इस मंत्र से अक्षत छोड़कर गणेश की स्थापना करे।

ॐ भुर्भुवःस्वःश्रीगणपते ! इहागच्छ इह तिष्ठ—इस मंत्र से आवाहन करे। गणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि, शिरसि अर्घ्यं स०, मुखे आचमनीयं०, स्नानं०, वस्त्रं०, यज्ञोपवीतं०, गन्धं०, अक्षतानि०, पुष्पाणि०, दूर्वाकुरांणि०, धूपं०, दीपं०, नैवेद्यं०, आचमनीयं०, तांबूलं०, पूगीफलं०, दक्षिणां समर्पयामि। अनेन पूजनेन श्रीगणपतिः प्रीयताम्।

६ कलश-स्थापन पूजा

कलश की जगह की पृथ्वी को हाथ से स्पर्श करे और यह मंत्र पढ़े।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः॥

कलश की जगह पर मिट्टी और यव छोड़े और यह मंत्र पढ़े—

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता। हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

कलश को धीरे से उठाकर उसी जगह रख दे और यह मंत्र पढ़े—

ॐ आ जिघ्र कलशंमह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

कलश में जल छोड़े और यह मंत्र पढ़े—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

कलश के गले में लाल वस्त्र या मोली लपेटे तथा यह मंत्र पढ़े—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः॥

कलश में सुपारी छोड़े और यह मंत्र पढ़े-

ॐ याः फलिनीर्य्याऽ अफलाऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसुता स्तानो मुंचंत्वꣳहसः॥

कलश में दो पैसा चढ़ावे और यह मंत्र पढ़े—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

गंध, रोली आदि चढ़ावे और यह मंत्र पढ़े—

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

सर्वौषधि छोड़ कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ।
मनैनु बभ्रूणा महꣳशतन्धामानि सप्त च ॥

सप्तमृतिका छोड़ कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ स्योना पृथिवि नोभवा न्नृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥

दूर्वा चढ़ा कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ काण्डात्कांडात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानोदूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

आम, बड़, गूलर या पीपल के पत्ते डाल कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ अश्वत्थेवो निषदनम्पर्णेवोवसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्स नवथ पूरुषम् ॥

कुशा छोड़कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

यव या चावलों से भरा पात्र कलश पर रख कर यह मंत्र पढ़े—

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणा वहा इष मूर्ज्जꣳशतक्रतो ॥

यह मन्त्र पढ़े और अक्षत छोड़कर वरुणास्थापन करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोइम्प्रतिष्ठ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ—इस मन्त्र से आवाहन करे । वरुणाय नमः—इस मन्त्र से षोडशोपचार पूजा करे ।

पूजा कर चुकने पर नीचे के मन्त्रों से प्रार्थना करे—

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानिजलदानदाः। आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥१॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥२॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोप्यथर्वणः ॥३॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥४॥ उत्पन्नोसि तदा कुंभ विधृतो विष्णुना स्वयम्। त्वत्तः सर्वाणि तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥५॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥६॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥७॥ त्वत्प्रसादादिमं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव। सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥८॥

७ नवग्रह-पूजनम्

बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहने से नीचे लिखे मंत्रों को पढ़कर ग्रह-चक्र में प्रत्येक ग्रह पर क्रम से छोड़ता जाय—

सूर्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

चन्द्र—ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते जैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा॥ चन्द्राय नमः चन्द्रमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

मंगल—ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ भौमाय नमः भौममावाहयामि। गंधाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

बुध—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ बुधाय नमः बुधमावाहयामि। गन्धाक्षत पुष्पादि समर्पयामि।

बृहस्पति—ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ गुरवे नमः गुरुमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

शुक्र—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

शनिश्चर—ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तु नः॥ शनिश्चराय नमः शनिश्चरमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

राहु—ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ राहवे नमः राहुमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

केतु—ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ केतवे नमः केतुमावाहयामि। गन्धाक्षतपुष्पादि समर्पयामि।

सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि एवं अर्घ्यं० आचमनीयं० स्नानं० वस्त्रं० यज्ञो० गन्धं० अक्षतानि० पुष्पाणि० धूपं० दीपं० नैवेद्यं० आचमनीयं० ताम्बूलं० दक्षिणां०।

फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वेग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

८ षोडशमातृकापूजन

दाहने हाथ में कुछ अक्षत ले षोडश मात्रिकाचक्र पर ॐ गौरी मातृकायै नमः, ॐ पद्मा मातृकायै नमः—आदि मंत्रों से क्रमानुसार चढ़ावे—

गौरी[१] पद्मा[२] शची[३] मेधा[४] सावित्री[५] विजया[६] जया[७]।
देवसेना[८] स्वधा[९] स्वाहा[१०] मातरो[११] लोकमातरः[१२]।
हृष्टिपुष्टिस्तथा[१३] तुष्टि[१४] रात्मनःकुलदेवता[१५] [१६]॥

इन मातृकाओं का षोडशोपचार से पूजा कर प्रार्थना करे —

ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः। धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदारायेषां सदाभ्युदयदाभवती प्रसन्ना॥

६ हवन-कर्म

संस्कार आदि कर्मों में जो हवन-क्रिया की जाती है उसे 'कुशकण्डिका' कहते हैं। वह एक आदमी नहीं कर सकता है और वह कर्म आवश्यक है, अतएव उसकी एक साधारण विधि यह है।

कर्त्ता चौकोर वेदी बनाकर उस पर जल छिड़क कर आम की लकड़ियाँ रक्खे और अग्नि रखकर नीचे के मंत्र से अग्नि देवता का ध्यान करे—

ॐ चत्वारि शृंगा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश॥

इसके बाद नीचे के मंत्र से अग्नि देवता का आवाहन करे–

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥

फिर अग्नि को प्रज्वलित कर निम्न मंत्र से अग्नि का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे—

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा। पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने पादयोः पाद्यं समर्पयामि इत्यादि।

इसके बाद नीचे के मंत्रों से स्रुवा से घी की आहुतियाँ अग्नि में छोड़े—

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। (इस मंत्र को मन में उच्चारण कर आहुति छोड़े)

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय। (इस मंत्र से आधार पर आहुति छोड़े)

अब आगे के मंत्रों से अग्नि में आहुतियाँ छोड़े—

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये।

ॐ भुवः स्वाहा इदं सूर्याय।

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानोविश्वाद्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्ति पाश्च सत्यमित्त्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा। इदमग्नये अयसे॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसोऽअदितये स्यामः स्वाहा। इदं वरुणाय॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। (यह मंत्र मन में कहे)

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते॥

ॐ सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा।

इस प्रकार यह सामान्य पूजा करके जो मुख्य कर्म करना हो उसे यथा विधि करे। उसकी समाप्ति के बाद नीचे के अनुसार पुष्पाञ्जलि आदि क्रियायें करके पूजा का विसर्जन करे।

(१०) पुष्पाञ्जलि

किसी भी कर्म की समाप्ति पर देवता के लिए पुष्पाञ्जलि अर्पित की जाती है। वह पुष्पाञ्जलि नीचे के मन्त्र पढ़कर अर्पित की जाती है—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥२॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्य राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समंतपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात ॥३॥

ॐ तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षतस्य कामप्रे विश्वेदेवा सभासदः ॥४॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् संबाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः ॥५॥

११ तिलक

पुष्पाञ्जलि छोड़ चुकने पर तिलक लगाये—

ॐ युञ्जन्ति ब्रध्न मरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि। तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥

१२ विसर्जन

तब हाथ में अक्षत लेकर विसर्जन करे, यथा—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामप्रदानाय पुनरागमनाय च ॥

***

चौथा अध्याय

—:○:—

दश संस्कार

समाज की सुव्यवस्था के लिए हिन्दू-धर्म-शास्त्र में वर्ण-धर्म और आश्रम-धर्म की व्यवस्था की गई है। सारा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में बँटा हुआ है। यह वर्ण-विभाग जाति, गुण और कर्म के अनुसार निर्धारित है। प्रत्येक वर्ण के लिए अलग अलग धर्म निर्दिष्ट हैं, जो परम्परा से व्यवहार में प्रचलित हैं।

इसी प्रकार आश्रम की व्यवस्था समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए की गई है। आश्रम चार हैं—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास। उपनयन-संस्कार के बाद बालक ब्रह्मचर्य-आश्रम में प्रवेश करता है। इस काल में उसे चरित्र-निर्माण और ज्ञानवृद्धि की शिक्षा दी जाती है, जिससे विवाह होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने पर वह अपना जीवन सफलता-पूर्वक व्यतीत कर सके। गृहस्थाश्रम का काल समाप्त होने पर वानप्रस्थ-आश्रम ग्रहण किया जाता है, जिससे चौथे संन्यासाश्रम की मोक्षसिद्धि के लिए पूरी तैयारी हो जाय। वर्ण और आश्रम की यह व्यवस्था हिन्दू-धर्म-शास्त्र की विशेष बात है और इन दोनों में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए हिन्दू-शास्त्रकारों ने संस्कारों की व्यवस्था बाँधी है।

गृह्यसूत्रों में ४० संस्कार बताये गये हैं। उनमें १८ शारीरिक संस्कार हैं और २२ यज्ञ-सम्बन्धी हैं।

पुंसवन आदि शारीरिक और पञ्चमहायज्ञ, सपिण्डीकरण आदि याज्ञिक हैं। हिन्दू के लिए उपर्युक्त संस्कार करना अति आवश्यक है।

शारीरिक संस्कारों में निम्नलिखित १० संस्कार मुख्य हैं—

(१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) सीमन्तोनयन, (४) जातकर्म, (५) नामकरण, (६) अन्नप्राशन, (७) चूडा-कर्म, (८) कर्णवेध, (९) उपनयन, (१०) विवाह ।

१ गर्भाधान

ऋतु-स्नान के बाद चौथे दिन या फिर अन्य किसी शुभ दिन पर यह संस्कार किया जाता है ।

मध्याह्न के बाद (गणेश-पूजन, स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन) १६ मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध (और वृद्धिश्राद्ध) कर चुकने पर पति-पत्नी दोनों—

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् । परिवृङ्धि हरसा माभि मंस्थाः शायायुषं कृणुहि चीयमानः ॥

यह मंत्र पढ़कर सूर्य का दर्शन तथा नमस्कार करें ।

इसके बाद सायं-सन्ध्या तथा भोजन कर चुकने तथा एक पहर रात बीत जाने पर पति-पत्नी शुद्ध वस्त्र पहन कर शयनागार में जायँ । वहाँ पत्नी के पूर्व की ओर सिर करके लेट जाने पर पति उत्तर की ओर मुँह करके बैठे । फिर वह पत्नी के नाभि-देश पर हाथ रख कर—

ॐ पूषा भगं सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम् । ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं ददातु ते ।

इस मंत्र को पढ़े ।

इसके बाद पति पूर्व की ओर मुँह करके बैठे और पत्नी की ओर देखते हुए—

ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके । गर्भं ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजा । तेजो वैश्वानरो दद्यादथ ब्रह्मानु मन्त्रयेत । ब्रह्मागर्भं दधातु ते—इस मंत्र को पढ़े ।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र पढ़े—

ॐ गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि।

ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियं गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥

तदन्तर पति-धर्म करे। उसके बाद निम्नलिखित मंत्र पढ़े—

ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद् विद्यात्॥ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः। शतं शृणुयाम शरदः शतम्।

इस मंत्र को पढ़कर बैठी हुई पत्नी के हृदय-देश का स्पर्श करे। और ऐसा ही समंत्र स्पर्श प्रत्येक ऋतु-समागम में करे।

---

२ पुंसवन

गर्भ की रक्षा तथा पुत्र की कामना के लिए यह संस्कार किया जाता है। गर्भ रहने से तीसरे महीने के दस दिन के भीतर पुंसवन-संस्कार किया जाता है। इस अवसर पर पति-पत्नी दोनों स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर पूर्वामुख होकर आसनों पर बैठें। फिर पति आचमन, प्राणायाम आदि कर इस संस्कार के करने का संकल्प पढ़े। तदन्तर गणपति-पूजन मातृका-पूजन आदि के बाद (स्वस्ति, पुण्याहवाचन और) नान्दी श्राद्ध करे। तत्पश्चात् (रात्रि होने पर) वटवृक्ष की जटा (वटाङ्कुर), कुश की जड़ का अग्रभाग और सोम (अभाव में गुड़च या ब्राह्मी) लेकर ठंडे जल से पीसकर रस निकाले। फिर उस जल को पत्नी की नाक के दाहने छिद्र में सुँघाता हुआ (डालता हुआ) निम्न मंत्र पढ़े—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥

इसके बाद पत्नी की गोद में जल से भरा हुआ एक घट रखकर पति अपनी दाहनी अनामिका के अग्रभाग से पत्नी के उदर को स्पर्श करे और यह मंत्र पढ़े—

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोम आत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम । साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥

---

३ सीमन्तोनयन

यह गर्भस्थ बालक का संस्कार है । गर्भ रह जाने के छठे या आठवें महीने में किया जाता है ।

संकल्प, स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणेशपूजन, मातृकापूजन (वृद्धि), नान्दी-श्राद्ध तथा कुशकण्डिका-कर्म आदि कर चुकने पर सीमन्तोन्नयन का कार्य करे । नवीन वस्त्र पहनाकर गर्भवती स्त्री को लाकर कुशकण्डिका की अग्नि के पश्चिम में कोमल आसन पर बिठावे । फिर दो फल (और सुवर्ण) से युक्त उदुम्बर की शाखा, तेरह तेरह कुशों की तीन पञ्जुलियाँ, (सफेद) साही का एक कांटा, पीले सूत से युक्त एक लौह तकुआ और पीपल की लकड़ी की एक शकुइन । इन पाँच वस्तुओं से पति-पत्नी के सिर के बाल दाहने-बायें दोनों ओर हटाता हुआ नीचे का मंत्र पढ़े—

ॐ भूर्भुवः स्वः राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना । सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदाय मुक्थ्यम् ॥

यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि । ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे ररारणा ॥

फिर उन पाँच वस्तुओं को पत्नी की वेणी में या जैसी रीति हो नीचे का मंत्र पढ़ कर बाँध देवे । मंत्र यह है—

ॐ अयमूर्ज्जावतो वृक्ष ऊर्ज्जीव फलिनी भव ।

इसके बाद यही ऊपर का मंत्र पढकर पति-पत्नी को आठ लोटे जल से स्नान करावे । उसी समय वीणा के साथ दो व्यक्ति नीचे के मंत्र का गान करें —

सोमएव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः ।
अविमुक्त चक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यं असौ ॥

(इसके बाद संस्कार की अङ्ग-पूर्ति के लिए दस ब्राह्मण-भोजन का संकल्प कर मातृकाविसर्जन करे)

इसके बाद पत्नी से पूर्णाहुति करावे ।

फिर स्रुवा के मूल से अग्नि की भस्म लेकर दाहने हाथ की अनामिका से वह भस्म—

ॐ त्र्यायुषे जमदग्नेः—यह कहकर ललाट में, ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—इस मंत्र से ग्रीवा में, ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम्—इस मंत्र से दक्षिण बाहु के मूल में, ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्—इस मंत्र से हृदय में लगावे और इसी क्रम से पत्नी के भी भस्म लगावे। परन्तु 'तन्नोऽस्तु' की जगह पर 'तत्तेऽस्तु' ऐसा पढ़े ।

---

४ जातकर्म

सन्तान का जन्म होने के बाद ही यह संस्कार किया जाता है । इस संस्कार के कृत्य नाडी-छेदन के पहले ही हो जाने चाहिए, क्योंकि नाडी-छेदन के बाद अशौच लग जाता है । नाडी-छेदन जन्म के १२ या १६ घड़ी बाद किया जाता है ।

इस संस्कार में शुभ दिन पर नान्दी-श्राद्ध, गणेश-पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृकापूजन आदि करे। इनके बाद मेधाजनन-क्रिया तथा आयुष्य-मंत्र-जप करे।

पहले मेधाजनन-क्रिया करे। दाहने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में मधु और घृत के साथ घिसा हुआ सुवर्ण लगा कर उसे शिशु की जीभ में लगावे और ये मंत्र पढ़े—

ॐ भूः त्वयि दधामि; ॐ भुवः त्वयि दधामि; ॐ स्वः त्वयि दधामि; ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि।

इसके बाद आयुष्यकरण-क्रिया करे। शिशु के दक्षिण कर्ण अथवा नाभि के समीप मुख कर नीचे के आठ मंत्र तीन बार पढ़े—

ॐ अग्निरायुष्मान् स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥१॥ ॐ सोम आयुष्मान् स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥२॥ ॐ ब्रह्मा आयुष्मत् तद् ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वायुषा युष्मन्तं करोमि ॥३॥ ॐ देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥४॥ ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥५॥ ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥६॥ ॐ यज्ञ आयुष्मान् स दक्षिणाभिरायुस्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥७॥ ॐ समुद्र आयुष्मान् स स्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥८॥

इन मंत्रों के पढ़ चुकने पर नीचे का मंत्र तीन बार पढ़े—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥

इसके बाद पुत्र की पूर्ण आयु की कामना करता हुआ पिता शिशु के हृदय को स्पर्श कर नीचे के ग्यारह मंत्र पढ़े—

ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परिजात वेदाः। तृतीयमप्सु नृम्णा अजस्रमिंधान एनं जरते स्वाधीः ॥१॥ ॐ विद्मा ते अग्ने

त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा। विद्मा ते नाम परमं गुहा यद् विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ ॥२॥ ॐ समुद्रे त्वा नृम्णा अप्स्वंतर्नृ-चक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्। तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन् ॥३॥ ॐ अक्रंददग्निस्तनयन्निव द्यौः क्षामारे रिहद्-वीरुधः समंजन्। सद्यो जजानो विहीमिद्धो अख्यदारोदसी भानुना भात्यंतः ॥४॥ ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोम-गोपाः। वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजाविभात्यग्र उषसामिधानः ॥५॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भआरोदसी अपृणाज्जायमानः। वीडुं-चिदद्रिमभिनत्परायंजना यदग्निमयजन्त पंच ॥६॥ ॐ उशिक् पावको सुरतिः अमेधा मर्त्येष्वग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूममरुषंभरिभ्रदु-च्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥७॥ ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौ-दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभव द्वयोभिर्यदेनंद्यौरजनयत्सु-रेताः ॥८॥ ॐ यस्ते अद्य कृणवद् भद्र शोचेऽपूपंदेव घृतवन्तमग्ने। प्र तन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नंदेवभक्तं यविष्ठ ॥९॥ ॐ आ तंभज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥१०॥ ॐ त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजंगो मंत मुशिजो विवव्रुः ॥११॥

इसके बाद बालक के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में चार ब्राह्मण बैठावे। उनके बीच में एक और पाँचवाँ ब्राह्मण बैठावे जो ऊपर की ओर देखता रहे। तब पिता पूर्व की ओर के ब्राह्मण को देखकर—इममनुप्राणि-तेति—कहे। इस पर वह ब्राह्मण—प्राणेति—कहे। दक्षिण की दिशा में बैठा ब्राह्मण—व्यानेति—कहे। पश्चिम दिशा में बैठा ब्राह्मण—अपानेति—कहे। उत्तर दिशा में बैठा ब्राह्मण—उदानेति—कहे। बीच में बैठा ब्राह्मण—समानेति—कहे। यदि ब्राह्मण न मिल सकें तो पिता स्वयं उन के स्थानों में जाकर उन पदों का उच्चारण करे।

इसके बाद बालक के जन्म की जगह पर जाकर उसे आगे का मंत्र पढ़ कर अभिमंत्रित करे--

ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतम्।

फिर आगे का मंत्र पढ़कर बालक का स्पर्श करे—

अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव। आत्मा वै पुत्र नामासि त्वं जीव शरदःशतम॥

इसके बाद—इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः। सा त्वं वीरवती भव यास्मान्वीरवतोऽकरत्—यह मंत्र पढ़कर बालक की माता को अभिमंत्रित करे।

तब बालक का नाल-छेदन करावे। फिर बालक को माता का दाहना स्तन धुलावे और बालक को दूध पिलावे। जब बालक माता का दूध पीना प्रारम्भ करे तब यह मंत्र पढ़े–

ॐ इमꣳ स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने शरीरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व।

फिर बायें स्तन को धुलाकर मंत्र पढ़कर दूध पिलावे। इस बार ऊपर के सिवा यह दूसरा मंत्र भी पढ़े--

यस्ते स्तनः शशयो योमयो भूर्योरत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वीर्याणि सरस्वती तमिह धातवे कः॥

इसके बाद—आपो देवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ। एवमस्याꣳसूतिकायाꣳसपुत्रिकायां जाग्रथ—यह मंत्र पढ़कर जल से भरा हुआ एक पात्र बालक की माता के सिरहाने रख दे और इस प्रकार दस दिन तक बराबर वहाँ रक्खा रहने दे।

फिर सूतिकागृह के दरवाजे पर पञ्च भूसंस्कारपूर्वक अग्नि की स्थापना करे, जो दस दिन तक उस स्थान पर बराबर बनी रहे। उस अग्नि में प्रातः-

सायं दोनों समय धान की भूसी, चावल के कण और सरसों की आहुति नित्य दस दिन तक निम्न मंत्रों से दी जाय–

पहिली आहुति का मंत्र—ॐ शण्डामर्काउपवीरः शौंडिकेयऽउलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्चवनो नश्यतादितः स्वाहा। इदं शंडामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय॥

दूसरी आहुति का मंत्र—ॐ आलिखन्ननिमिषः किं वदन्त उपश्रुतिः। हर्यक्षः कुम्भी शत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्पपारुणश्चवनोनश्यतादितः स्वाहा। इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदद्भ्यः उपश्रुत हर्यक्षाय कुम्भीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हंत्रीमुखाय सर्पपारुणाय॥

---

५ नामकरण

इस संस्कार में शिशु का नाम रखा जाता है। जन्म की दस रात्रियों के बीत जाने पर शुभ मुहूर्त में यह संस्कार किया जाता है। यदि जाति-कर्म में नान्दी-श्राद्ध न हो सका हो तो इस अवसर पर किया जाता है और यदि किया गया हो तो इस संस्कार के समय वह नहीं किया जाता है।

संकल्प, गणेश-पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृकापूजन करने के बाद तीन ब्राह्मणों को भोजन करावे। फिर नामाधिष्ठात्री देवता का विधिवत् पूजन करे।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्ठं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वे देवास इहमादयन्तामो इम्प्रतिष्ठ। सर्वं वै विश्वेदेवाः सर्वेणैतत्संदधातु। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तेन सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवतु। नामाधिष्ठात्री देवता इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु।

इस ऊपर के मंत्र से देवता की प्रतिष्ठा और नीचे के मंत्र से षोडशोपचार पूजा करे—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

इसके बाद दक्षिण की ओर मुँह करके माता बालक को गोद में लेकर बैठे। तब पिता बालक के दाहने कान के पास मुँह ले जाकर कहे—

हे कुमार त्वं नक्षत्रनाम्ना चन्द्रकान्तोऽसि त्वं व्यवहारनाम्ना भानुदत्तोऽसि।

तब ब्राह्मण मनोजूति आदि मंत्र पढ़कर 'नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु' कहकर नाम की प्रतिष्ठा करें। इसके बाद पिता बालक से ब्राह्मणों का अभिवादन करावे। ब्राह्मण—

ॐ ब्राह्मण वेदोऽसि वेद

यह मंत्र पढ़कर बालक को आशीर्वाद करें। फिर नामकर्ता देवता और ब्राह्मणों को नमस्कार करे और मातृका-विसर्जन करे।

---

६ अन्नप्राशन

पुत्र के जन्म के छठे या आठवें महीने में और कन्या के जन्म के पाँचवें या सातवें महीने में यह संस्कार होता है। इसमें संकल्प, गणेश-पूजा, पुण्याहवाचन आदि कर्मों के बाद वेदी-निर्माण, पञ्च भूसंस्कार, ब्रह्मावरण आदि के बाद हवन होता है।

इसके बाद मधुर, लवणादि षड् रस तथा उत्तम अन्न पाक करके सुपात्र में रखकर सन्तान को पिता खिलावे। पहले बालक या बालिका को स्नान कराकर नये वस्त्र व आभूषण पहना कर उसे पिता गोद में लेकर या आसन पर बिठाकर अन्न खिलावे। खिलाते समय यह मंत्र पढ़े—

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जे नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

इसके बाद बालक को भूमि पर बिठाकर जीविका की परीक्षा करे।

उसके आगे पुस्तक, शस्त्र, वस्त्र आदि वस्तुएँ रख दे। जिस वस्तु को वह पहले ग्रहण करेगा, भविष्य में वही उसकी जीविका का साधन होगा।

इसके बाद बालक का हाथ-मुँह धुला दे। फिर पिता स्रुवा में फल और पुष्प रख कर पूर्णाहुति देने के लिए स्रुवा को लेकर खड़ा होकर नीचे का मंत्र पढ़कर अग्नि में पूर्णाहुति दे—

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कवि सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।

फिर बैठकर स्रुवा के मूल से वेदी से भस्म लेकर दाहने हाथ की अनामिका से--ॐ त्र्यायुषम् जमदग्नेः—इस मंत्र से माथे में,—ॐकश्यपस्य त्र्यायुषम्—इस मंत्र से कण्ठ में,—ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—इस मंत्र से दक्षिण बाहु के मूल में और—ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—इस मंत्र से हृदय में लगावे। इसी क्रम से बालक के भी भस्म लगानी चाहिए, किन्तु तन्नोऽस्तु के स्थान पर तत्तेऽस्तु कहे।

तदनन्तर ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद लेकर संकल्प छोड़कर ब्राह्मणों को भोजन करावे। इसके बाद मातृका का और अग्नि का विसर्जन करे।

---

७ चूडाकर्म

गर्भ या जन्म से तीसरे वर्ष में तथा पांचवें या सातवें वर्ष में यह संस्कार किया जाता है।

यज्ञवेदी बनाकर शुभ मुहूर्त में यह संस्कार किया जाता है। प्रथम, बालक को स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र पहनाकर माता गोद में लेकर यज्ञ-वेदी के पश्चिम में बैठे। इसके बाद संकल्प, गणेश-पूजा, पुण्याहवाचन आदि के बाद संकल्प छोड़कर तीन ब्राह्मणों को भोजन करावे। फिर हवन आदि कर्म करे।

तदनन्तर पूर्व की ओर मुँह किये बालक का चूडा-संस्कार करे। उसके सिर के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर ओर पहले से बँधे जूड़ों में से पहले दाहने जूड़े को—

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु। ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चसे॥

यह मंत्र पढ़कर घी मिले हुए जल से भिगोवे। फिर उस जूड़े को खोल कर सेही के काँटे से सुलझाकर बालों को तीन भागों में अलग अलग कर दे। फिर तीन कुश लेकर उनके अग्र भाग से उन केशों के तीन भागों में से पहले भाग के केशों के मूल में—

ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः—

यह मंत्र पढ़कर स्पर्श करे। फिर—

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते मामा हि श्ँ सीः—

इस मंत्र को पढ़कर हाथ में छुरा ले। इसके बाद—

ॐ निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय-सुवीर्याय—यह मंत्र पढ़कर उक्त तीन भाग के केशों में से पश्चिम-भाग के केशों को उनसे लगे कुशों के सहित काट दे।

इसी प्रकार पश्चिम-भाग के जूड़ा के और तब उत्तर ओर के जूड़ा के केशों की क्रिया करे। उत्तर ओर के जूड़ा के बालों के काटने के समय यह मंत्र पढ़े—

ॐ येन भूरिश्चरादिवं ज्योक् च पश्याद्धि सूर्यम्।
तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये॥

काटे हुए केशों को उनके कुशों के साथ गोबर पर रखता जाय। जूड़ों के केश कट जाने पर सारे सिर को भिगो कर तीन बार प्रदक्षिणा के क्रम से आगे का मंत्र पढ़ता हुआ छुरे को घुमा दे।

ॐ यत्क्षुरेण मर्चयता सुपेशसा वप्ता वपसि केशान्। शुन्धि शिरो मास्यायुः प्रमोषीः।

इसके बाद—ॐ आक्षिणवन् परिचय—यह मंत्र पढ़कर छुरा नाई

को दे दे और वह कुल धर्मानुसार शिखा रखकर सिर के कुल बाल बना दे। बनाये हुए केशों को एक नये कपड़े में लपेट कर बालक की माता दही-दूध के सहित उक्त गोबर के पिण्ड पर धरे।

फिर पूर्ववत् अग्नि में आहुति देकर स्रुवा से भस्म लेकर मंत्र पढ़कर अनामिका के अग्र भाग से अपने अंगों और उसके बाद बालक के अंगों में लगावे। इसके बाद गोबर के सहित केशों को ले जाकर गोशाला में या नदी के या तालाब के किनारे गाड़ दे। इसके बाद बालक का पिता एक गोदान करे और मातृका-विसर्जन करके ब्राह्मणों को भोजन करावे।

---

८ कर्णवेध

यह संस्कार तीसरे या पाँचवें वर्ष में किया जाता है।

पूर्वाह्न में बालक का पिता बालक को गोद में लेकर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे। वह बालक के हाथ में मिष्ठान्न देकर—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

यह मंत्र पढ़कर दाहने कान को अभिमंत्रित करे, फिर—

ॐ वद्यन्तीवेदागनीगंति कर्णं प्रिय ꣳ सखायं परिषस्वजाना योषेव शिक्ते वितताविधन्वन्ज्या इय ꣳ समने पारयंति—यह मंत्र पढ़कर बायें कान को अभिमन्त्रित करे। इसके बाद स्वर्णकार से दोनों कानों को छिदवावे। फिर ब्राह्मण-भोजन करावे।

---

९ उपनयन

यह संस्कार बड़े महत्त्व का है। इस संस्कार के होने पर ही बालक द्विज की श्रेणी में आता है और उसे वेदाध्यन आदि वैदिक कर्म करने का अधि-

कार प्राप्त होता है। यह संस्कार गर्भ से आठवें वर्ष में ब्राह्मण-बालक का, ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय-बालक का, बारहवें वर्ष में वैश्य-बालक का होता है।

यह संस्कार विद्वान् कर्मकाण्डी के द्वारा ही कराया जाता है। इसमें बालक को गायत्री-मंत्र प्राप्त होता है तथा उसे ब्रह्मचारी होने तथा सदाचार से रहने का व्रत ग्रहण करना पड़ता है परन्तु इस संस्कार के अनुसार ब्रह्मचर्य धारण कर आचार्य के घर में रहकर वेदाध्ययन की परिपाटी टूट गई है, अतएव उस काल के वेदारम्भ तथा समावर्तन आदि संस्कार उपनयन-संस्कार के ही साथ कर दिये जाते हैं।

---

१० विवाह

इस संस्कार की विधि बहुत ही रोचक साथ ही लम्बी भी है। इसे विद्वान् कर्मकाण्डी ही करा सकते हैं। इस संस्कार के हो जाते ही वर-बधू गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं और यहीं से उनकी संसार-यात्रा प्रारम्भ होती है।

ऊपर के संस्कारों की जो संक्षिप्त विधियाँ दी गई हैं उनके प्रारम्भ की कलशादि की पूजा 'सामान्य पूजा' की विधि के अनुसार तथा विसर्जन भी उसी की विधि से करना चाहिए। संस्कारों के प्रारम्भ तथा अन्त में कुछ नई क्रियाओं का भी उल्लेख किया गया है। यदि सम्भव हो तो उन्हें भी कर्त्ता कर ले।

पाँचवाँ अध्याय

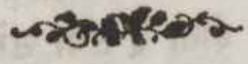

नित्य-कर्म

हिन्दुओं के नित्य-कर्म में सन्ध्या-काल की उपासना का प्रमुख स्थान है। यह उपासना तीन सन्ध्याओं में अर्थात् सवेरे, दोपहर और सायंकाल में की जाती है। इसकी विधि इस प्रकार है।

१ सन्ध्योपासन

स्नान करने के बाद शुद्ध स्थान पर आसन पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे। अपने दाहने पूजा के लिए जल रख ले तथा जल छोड़ने के लिए सामने दूसरा पात्र रख ले। इसके बाद आत्मशोधन का मंत्र पढ़ कर अपने सिर पर जल छिड़के।

आत्मशोधन-मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः॥

इसके बाद संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में—ममोपात्तदुरितक्षयाय परमेश्वर प्रीतये प्रातः सन्ध्यामुपास्ये—यह पढ़ कर जल छोड़ दे। फिर नीचे का विनियोग पढ़े—

ॐ पृथ्वीत्यस्य मंत्रस्य मेरूपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः—यह पढ़ कर जल छोड़े। फिर यह आसन-शोधन-मन्त्र पढ़ कर पृथिवी का नमस्कार करे—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके बाद गायत्री-मन्त्र पढ़कर शिखा को गाँठ दे। तब यह विनियोग पढ़कर जल छोड़े—

ॐ अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाव वृतं दैवतमश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥

इसके बाद नीचे का मंत्र पढ़ कर आचमन करे—

ॐ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत। दिवञ्चपृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

इसके बाद प्राणायाम के ४ विनियोग पढ़कर जल छोड़े—

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥१॥

ॐ सप्त व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥२॥

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताऽग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥३॥

ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्याः देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः ॥४॥

अब आगे के मंत्र से प्राणायाम करे—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

विधि—ऋषि-देवता आदि का स्मरण कर आसन पर स्थित हो और नेत्रों को बंद कर मौन हो ऊपर के मंत्र से प्राणायाम करे। कर्त्ता नासिका के दाहिने छिद्र को अँगूठे से मूँद कर चतुर्भुज-श्यामस्वरूप-विष्णु भगवान्

का अपने नाभि-कमल में ध्यान करता हुआ मन में मन्त्र को पढ़ता हुआ नासिका के बायें छिद्र से श्वास खींचता रहे। इस प्राणायाम को पूरक कहते हैं। अनन्तर श्वास को दोनों छिद्रों से रोककर अपने हृदय में कमलासन पर विराजमान रक्तवर्ण-चतुर्मुख ब्रह्माजी का ध्यान करता हुआ मंत्र को पढ़े। इसका नाम कुम्भक प्राणायाम है। उपरान्त दाहनी नासिका के छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोड़ता हुआ अपने मस्तक में श्वेतवर्ण-त्रिनेत्र-शिवजी का ध्यान करके मंत्र को पढ़े। इस प्राणायाम को रेचक कहते हैं। मंत्र तीनों प्राणायामों में तीन-तीन बार पढ़े।

इसके बाद नीचे का विनियोग पढ़ कर जल छोड़े—

ॐ सूर्यश्चमेति मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्योदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

तब यह मंत्र पढ़कर आचमन करे—

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्राज्या पापमकार्षं मनसावाचा-हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्नारात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिदुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

अब यह विनियोग छोड़े—

ॐ आपोहिष्ठेत्यादि मंत्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द आपोदेवता मार्जने विनियोगः।

अब मार्जन करे—

१—ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवः। २—ॐ तान ऊर्जे दधातनः। ३—ॐ महेरणाय चक्षसे। ४—ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५—ॐ तस्य भाजयते हनः। ६—ॐ उशतीरिव मातरः। ७—ॐ तस्मा अरङ्गमामवः। ८—ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९—ॐ आपो जनयथा च नः।

विधि—बायें हाथ में जल लेकर इन नव मंत्रों को पढ़ते हुए पहले सात

मंत्रों से दूसरे हाथ से सिर पर जल छिड़के, आठवें से पृथिवी पर और नौवें से फिर सिर पर जल छिड़के।

इसके बाद यह विनियोग पढ़कर जल छोड़े—

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

यह मंत्र पढ़कर सिर पर जल छिड़के—

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नःस्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

अब यह विनियोग छोड़े—

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवताश्वमेधावभृथे विनियोगः।

तब अघमर्षण-मंत्र पढ़े—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

विधि यह है—हाथ में जल लेकर और नासिका से लगा कर तीन बार वा एक बार प्राणों को रोके हुए वा न रोके हुए उपर्युक्त अघमर्षण सूक्त को जप कर जल को बाईं ओर फेंक देवें।

इसके बाद यह विनियोग छोड़े—

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीनऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः।

अब यह मन्त्र पढ़कर आचमन करे—

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतीरसोमृतम्।

अब खड़ा होकर दोनों हाथों में जल लेकर सूर्य को गायत्री मंत्र से जल देवे। सायं-प्रातः तीन और मध्यान्ह-सन्ध्या में एक अञ्जलि देवे।

इसके बाद यह विनियोग छोड़े—

ॐ उद्वयन्तमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःसूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्गाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक् छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

इसके बाद उपस्थान के ये चारों मन्त्र खड़े होकर सूर्य के सम्मुख प्रातः और सायंकाल हाथ जोड़ कर और मध्यान्ह में दोनों भुजाएँ ऊँची करके पढ़े—

ॐ उद्वयन्तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदःशतम् जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्चशरदः शतात्।

अब नीचे के मन्त्रों से न्यास करे—

ॐ हृदयाय नमः। ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ॐ भुवः शिखायै वषट्। ॐ स्वः कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौ षट्। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

इन मंत्रों को पढ़ता हुआ हृदय, सिर, शिखा, दोनों बाहों, नेत्रों को स्पर्श करे और दायें हाथ की दो अंगुलियों को बायें हाथ की तली पर मार कर फटकार करे।

अब ये विनियोग छोड़े—

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः जपे विनियोगः॥

ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांस्यग्नि-वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।

ॐ गायत्र्याविश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छंदः सविता देवता जपे विनियोगः॥

अब गायत्री का ध्यान करे—

ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः युक्तामिन्दुनिबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्। गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणम्। शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

अब यह विनियोग छोड़े—

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयो गायत्री छंदः शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः।

निम्न मंत्र पढ़ गायत्री का आवाहन करे—

ॐ तेजोसि शुक्रमस्य मृतमसि। धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्ट देवयजनमसि।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय पदाय परो रजसे सावदोमा प्रापत्।

इसके बाद गायत्री-मन्त्र का जप करे। गायत्री-मंत्र यह है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

माला गोमुखी में डालकर हृदय से लगाकर प्रातःकाल और मध्याह्न

को खड़ा होकर और सायंकाल को बैठकर गायत्री-मन्त्र का जितना हो सके उतना जप करना चाहिए। कम से कम एक माला होनी चाहिये यह भी न हो सके तो १० बार तो अवश्य ही जप करनी चाहिए।

तत्पश्चात् गोमुखी सिर पर धर कर प्राणायाम और अंग-न्यांस करके जप का समर्पण करे, यथा—

अनेन कृतेन गायत्रीजपेन श्री सविता देवता प्रीयतां नमम।

अब परिक्रमा-मन्त्र पढ़े—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे॥

इसके बाद विसर्जन करे। यथा—

ॐ उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्॥

विधि—हाथ जोड़कर नमस्कार करके इस मन्त्र से गायत्री का विसर्जन करे।

इति प्रातः-सन्ध्या

मध्याह्न-सन्ध्या

मध्याह्न की सन्ध्या में भेद केवल आचमन-मन्त्र और उसके विनियोग का है जो प्राणायाम के पीछे आता है, अर्थात् (सूर्यश्च०) के स्थान में (आपः०) मन्त्र पढ़ना चाहिये। और संकल्प में प्रातः सन्ध्या के स्थान में मध्याह्न सन्ध्या पढ़ना चाहिये। और गायत्री-मन्त्र से सूर्य को एक अर्घ्य देना चाहिये और उपस्थान के मन्त्र पढ़ते समय दोनों भुजाएं ऊपर करनी चाहिये शेष सब प्रातः सन्ध्या के समान है।

विनियोग—ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन-मन्त्र—ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वीं पृथ्वी पूता पुनातु मां

पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म पूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वंपुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳस्वाहा।

सायं-सन्ध्या

सायं-सन्ध्या भी प्रातः-सन्ध्या के समान है। भेद केवल यह है कि संकल्प में प्रातः-सन्ध्या के स्थान में सायं-सन्ध्या पढ़ना चाहिये और प्राणायाम के पश्चात् निम्न लिखित विनियोग तथा मन्त्र पढ़ना चाहिये॥

विनियोग—ॐ अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः

आचमन मन्त्र—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिदुरितं मयि इदमहमापोमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

२ पञ्च महायज्ञ

गृहस्थ के नित्य के कर्म में पाँच यज्ञों की गिनती की गई है। ये पाँचों कर्म गृहस्थ को नित्य करने चाहिए। इनके महत्त्व के कारण इनको यज्ञ ही नहीं, महायज्ञ कहा है। ये हैं—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, और नृयज्ञ। सन्ध्या-वन्दन व तर्पण करने के बाद पञ्च महायज्ञ के कर्म किये जाते हैं।

ब्रह्मयज्ञ के सम्बन्ध में संकल्प करके वेद आदि का नियमपूर्वक पाठ किया जाता है। संकल्प के अन्त में—श्री परमेश्वर-प्रीत्यर्थं ब्रह्मयज्ञ कर्म करिष्ये—यह वाक्य पढ़ा जाता है। फिर दोनों हाथों में कुश लेकर और उन्हें दाहनी जानु पर रखकर तीन बार प्रणव और व्याहृतियों सहित गायत्री पढ़ते हैं। इसके बाद वेदादि ग्रन्थों का नियम के साथ पाठ करते हैं। जो लोग समय के अभाव के कारण उतना अधिक नित्य वेद-पाठ नहीं कर सकते उनके लिए यह नियम है कि वे प्रत्येक मुख्य ग्रन्थ के प्रारम्भ के मंत्र सूत्र वा श्लोक का ही पाठ कर लिया करें। उन सबका सङ्कलन भी कर दिया गया है, जो इस प्रकार है—

(१) ब्रह्मयज्ञ

हाथ में जल लेकर पहले विनियोग छोड़े तब स्वाध्याय करे।

ॐ इषेत्वादिषु मंत्रेषु खंब्रह्मान्तेषु दशप्रणवसहितेषु याक्रियास्तत्र विवस्वानृषिः प्रजापतिर्देवता सर्वाणि छन्दांसि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्गोक्ता देवता ब्रह्मयज्ञे विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय-कर्मण आप्यायद्ध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा

मावस्तेनइशतमाघशं सोद्ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारम् । वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

ॐ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । यो सावादित्ये पुरुषः सोसावहम् ।

ॐ खं ब्रह्म ।

ॐ व्रतमुपैष्यन्नन्तरेणाहवनीयञ्च गार्हपत्यं च प्राङ्क्तिष्ठन्नप उपस्पृशति । तद्यदप उपस्पृशत्यमेध्यो वै पुरुषोयदन्नतं वदति तेन पूतिरन्तरतो मेध्या वा आपो मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति पवित्रम् । वा आपाः पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति तस्माद्वा अय उम्पृशति । सोऽग्निमेवाभीक्षमाणो व्रतमुपेति ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ।

ॐ खं ब्रह्म । ॐ वायुरेव खमिति । हस्माहकौरव्यायणी पुत्रो वेद यं ब्राह्मणा विदुर्वेदेन न यद्वेदितव्यम् ।

ॐ प्राश्रीपुत्रादासुरिवासिनः प्राश्रीपुत्र आसुरायणादासुरायण आसुरेरासुर्याज्ञवल्क्याद् याज्ञवल्क्य उद्दालकादुद्दालकोऽरुणादरुण उपवेशेरुपवेशिः कुश्रेः कुश्रिर्वाजश्रवसो वाजश्रवा जिह्वावतो वाध्योगाज्जिह्वावान् वाध्योगोऽसिताद्वार्षगणादसितो वार्षगणो हरितात् कश्यपाद्धरितः कश्यपः शिल्पात् कश्यपाच्छिल्पः कश्यपः कश्यपान्नैध्रुवेः कश्यपो नध्रुविर्वाचोवागम्भिण्या अम्भिण्यादित्यादादित्यानीमानि शुक्लानि यजूँषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।

ॐ इषेत्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु । श्रेष्ठतमायकर्मण आप्यायद्ध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा-

मावस्तेन ईशतमाघशंस सोद्ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि। (सामः)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवंतुपीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु न। (अथर्व)

अथानुवाकान् वक्ष्यामि। मण्डलं दक्षिणमक्षिहृदयम्। (ऐतरेय ब्राह्मण)

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि। (शिक्षा)

अथातो अधिकारः फलयुक्तानि कर्माणि। (कल्पसूत्रम)

अथातो गृह्यस्थाली पाकानां कर्म। (गृह्यसूत्रम)

वृद्धिरादै च। (व्याकरणम्)

समाम्नायः समाम्नातः। (निरुक्तम्)

मयरसतजभनलगसंमितम्। (छन्दः)

पञ्च संवत्सरमयं युगाध्यक्षम्। (ज्योतिषम्)

गौः ग्माः। (निघण्टु)

अथातो धर्मजिज्ञासा। (कर्ममीमांसा)

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा। (ब्रह्ममीमांसा)

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः।
प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्। (स्मृतिः)

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥ (इतिहास)

तपः स्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्॥ (आदिकाव्यम्)

ॐ स्वस्ति।

इति विद्या तयोयोनिरयोनिर्विष्णुरीडितः।

वाग्यज्ञेनार्चितो देवः प्रीयतां मे जनार्दनः ॥
ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

इन सबका पाठ करके अपने हाथ के कुशों को अपने पूर्व ओर डाल दे। इसके बाद —अनेन ब्रह्मयज्ञेन परमात्मा प्रीयताम्--यह वाक्य कहकर जल छोड़े।

---

२ देवयज्ञ

पहले संकल्प पढ़े। संकल्प में इस वाक्य की अन्त में योजना करे—

अन्न संस्कारार्थं आत्मसंस्कारार्थं पञ्चसूनादोषपरिहारार्थं सायं-प्रातर्वैश्वदेवयज्ञ करिष्ये।

इसके बाद--

ॐ जुष्टोदमूना आत्रेयो वसुश्रुतो अग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः —यह मन्त्र पढ़कर विनियोग करे।

फिर निम्न मंत्र पढ़कर अग्नि का आवाहन करे—

ॐ जुष्टोदमूना अतिथिर्दुरोण इमन्नो यज्ञमुपयाहि विद्वान् विश्व अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयता मा भरा योजनानि।

फिर निम्न मंत्र से अग्नि को कुण्ड में स्थापित करे--

ॐ समस्त व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती अग्निष्ठापने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वरोम् पावकनामानं अग्निं प्रतिष्ठापयामि।

इसके बाद कुण्ड के चारों ओर पृथ्वी पर सजल हाथ फेरे। फिर अग्नि के चारों ओर जल छिड़के। इसके बाद सिद्ध अन्न पात्र में रख उसमें घृत मिला और उसे अग्नि से स्पर्श कर अपने सामने रक्खे और निम्न मंत्रों से अग्नि में आहुतियाँ छोड़े—

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ प्रजापतये स्वाहा, ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, ॐ

कश्यपाय स्वाहा, ॐ अनुमतये स्वाहा, ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ।

इस प्रकार छः आहुतियाँ छोड़ कर पहले की तरह अग्नि-कुण्ड के चारों ओर फिर सजल हाथ फेरे और जल छिड़के ।

इसके बाद निम्न मंत्रों से अग्नि की प्रार्थना करे—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम् ।

ॐ चमे स्वरञ्चमे यज्ञोपचिते नमश्च यत्ते न्यूनं तस्यैत उपयत्तेऽतिरिक्तं तस्मै ते नमः ।

इसके बाद निम्न मन्त्र से अग्नि का विसर्जन करे—

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

विसर्जन के बाद निम्न मन्त्र से यज्ञ की समाप्ति करे—

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतम् ॥
अनेन वैश्वयज्ञेन पुरुषः प्रीयताम् ।

---

३ पितृयज्ञ अर्थात् पितृ-तर्पण

(१) त्रिकुश—तीन कुश लेकर एक साथ बाँध लेना ।

(२) मोटक—तीन कुशों को बटकर रस्सी की तरह कर लेना ।

(३) पवित्री—तीन कुशों को बटकर दोहरी करके सिरे पर गाँठ देना और अँगूठी की तरह अँगूठे से चौथी दोनों अगुलियों में पहनना । तिल, यव, अक्षत भी रखना होता है ।

तर्पण के पहले गायत्री पढ़कर शिखा बाँधना और तिलक लगाना चाहिए । तब प्राणायाम करे ।

आचमन – फिर तीन बार आचमन करना चाहिए। इस तीन बार के लिए तीन मन्त्र हैं—(१) ॐ केशवाय नमः, (२) ॐ माधवाय नमः; (३) ॐ नारायणाय नमः।

हाथ में कुश, यव और अक्षत लेकर संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में यह वाक्य पढ़े—देवर्षिपितृतर्पणमहं करिष्ये।

देवतर्पण—संकल्प कर चुकने पर एक पात्र में चन्दन, जौ या अक्षत पुष्प, तुलसी-दल छोड़े। फिर उसपर तीन कुश रक्खे और नीचे का मन्त्र पढ़ता हुआ उस पात्र में जल छोड़ता हुआ विश्वेदेवों का आवाहन करे—

ॐ विश्वेदेवान् आवाहयिष्ये। ॐ आवाहय। ॐ विश्वेदेवास आगत शृणुता म इमꣳ हवम्। एदं बर्हिनिषीदत।

ॐ ब्रह्मादयो विश्वेदेवा अत्रागच्छत। ॐ विश्वे देवाः शृणुते मꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठ। ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्।

फिर नीचे के मंत्रों से अँजुली से एक एक अञ्जुलि जल दे—

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्, ॐ विष्णुः०, ॐ रुद्रः०, ॐ प्रजापतिः०, ॐ देवाः तृप्यन्ताम्, ॐ छन्दांसि०, ॐ वेदाः०, ॐ पुराणाचार्याः०, ॐ गन्धर्वाः० ॐ इतराचार्याः०, ॐ संवत्सरःसावयवाः०, ॐ देव्यः०, ॐ अप्सरसः०, ॐ देवानुगाः०, ॐ नागाः०, ॐ सागराः०, ॐ पर्वताः०, ॐ मनुष्याः०, ॐ यक्षाः०, ॐ रक्षांसि० ॐ पिशाचाः०, ॐ सुपर्णाः०, ॐ भूतानि०, ॐपशवः०, ॐ वनस्पतयः०, ॐ औषधयः०, ॐ भूतग्रामचतुर्विधः०।

ऋषितर्पण—ऋषि-तर्पण करते समय यज्ञोपवीत (जनेऊ) और उत्तरीय (गमछा) कण्ठी के समान कर, उत्तरमुख बैठ, हाथ में कुश लेकर जौ के साथ दो दो अँजुली जल देना चाहिए।

आवाहन – ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदम-

प्रमादम्। सप्तापः स्वपतो लोकमीयुः तत्र जाग्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ। ॐ सनकाद्याः सप्त ऋषयः अत्रागच्छत।

ॐ सनकस्तृप्यताम्, ॐ सनन्दनः०, ॐ सनातनः०, ॐ कपिलः०, ॐ आसुरिः०, ॐ वोढुः०, ॐ पञ्चशिखः०।

पितृतर्पण—दिव्य पितरों को जल देते समय अपसव्य होकर (यज्ञोपवीत और गमछा दाहने कंधे पर कर), हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर तीन तीन अञ्जलि जल-दान करना चाहिए।

आवाहन—ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु ते वन्त्वस्मान्। ॐ कव्यवाडनलादयो दिव्य पितरः अत्रागच्छत।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः।

ॐ सोमः०, ॐ यमः०, ॐ अर्यमा०, ॐ अग्निष्वात्ताःतृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः। ॐ सोमपाः०, ॐ बर्हिषदः पितरः०

अब बाँयें घुटने को जाँघ के नीचे दबाकर, दक्षिण मुख बैठ, अपसव्य होकर तीन तीन अँजुली जल, कुश और तिल से चौदह यमों को देना।

आवाहन—ॐ यमादिचतुर्दशदेवा आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान् जलाञ्जलीन्।

ॐ यमाय नमः, ॐ धर्मराजाय नमः, ॐ मृत्यवे नमः, ॐ अन्तकाय नमः, ॐ वैवस्वताय नमः, ॐ कालाय नमः, ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः, ॐ औदुम्बराय नमः, ॐ दध्नाय नमः, ॐ नीलाय नमः, ॐ परमेष्ठिने नमः, ॐ वृकोदराय नमः, ॐ चित्राय नमः, ॐ चित्रगुप्ताय नमः।

अब अपने पितरों को मोटक, कुश और तिल से ऊपर की तरह जल देना।

आवाहन—ॐ पितॄन् आवाहयिष्ये आवाहय।

पिता—ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

दादा—ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुक शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं०।

परदादा—ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं०।

माता—ॐ अमुकगोत्रास्मन्माता अमुकी देवी गायत्रीरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः।

दादी—ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्रीरूपा०।

परदादी—ॐ अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वतीरूपा०

नाना—ॐ अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुक शर्मा वसुस्वरूपः। सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

परनाना—ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत्प्रमातामहोऽमुक शर्मा रुद्रस्वरूपः सपत्नीकस्तृप्यतामिदं०।

वृद्ध परनाना—ॐ अमुकगोत्रोऽस्मन्वृद्धप्रमातामहोऽमुक शर्मा आदित्यस्वरूपः सपत्नीकः तृप्यतामिदं०।

इसके बाद पत्नी, सुत, कन्या, पितृव्य, मातुल, भ्राता, सापत्न भ्राता, पितृभगिनी, मातृभगिनी, आत्मभगिनी, सापत्नभगिनी, श्वशुर, गुरु, शिष्य, मित्र, आप्तजन को क्रम से एक एक अञ्जलि जल-दान किया जाता है।

इसके बाद नीचे के मन्त्रों से सब को एक एक अञ्जलि जल-प्रदान करे—

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहोदयाः॥
ॐ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
मया दत्तेन तोयेन तृप्यन्तु भुवनत्रयम्॥
ॐ ये बान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मदत्तेनाम्बुना सदा॥

इसके बाद अँगौछे की चार तह कर नीचे के मंत्र को पढ़कर जल छोड़ कर निचोड़ दे—

ॐ ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते तृप्यन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

अब सव्य होकर भीष्मपितामह को तर्पण करे—

ॐ वैयाघ्रपद्गोत्राय सांकृतिप्रवराय च ॥
अपुत्राय ददाम्येतद्सलिलं भीष्मवर्मणे ॥

इसके बाद जल, चन्दन, पुष्प लेकर सूर्य को अर्घ्य दे—

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

जलदान कर चुकने पर दिग्पालों का नमस्कार करे। यथा—

प्राच्य में—ॐ इन्द्राय नमः। आग्नेय कोण में—ॐ अग्नये नमः।
दक्षिण में—ॐ यमाय नमः। नैर्ऋत्य कोण में—ॐ नैर्ऋत्यै नमः।
पश्चिम में—ॐ वरुणाय नमः। वायव्य कोण में—ॐ वायवे नमः।
उत्तर में—ॐ सोमाय नमः। ईशान कोण में—ॐ ईशानाय नमः।
ऊर्ध्व में—ॐ ब्रह्मणे नमः। अधो में—ॐ विष्णवे नमः।

इसके बाद अवाच्य में—ॐ अनन्ताय नमः। जल के मध्य में—ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ ओषधिभ्यो नमः, ॐ वाचे नमः, ॐ वाचस्पतये नमः, ॐमहद्भ्यो नमः, ॐ विष्णवे नमः।

इसके बाद नीचे के मंत्र से विसर्जन करे—

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञं स्वाहा वातेधाः।

इसके अनन्तर नीचे का वाक्य पढ़कर अर्पण करे—

अनेन यथाशक्ति देव-ऋषि-पितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृ-स्वरूपी जनार्दन वासुदेवःप्रीयतां नमम।ॐतत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।

---

४ भूतयज्ञ

पहले संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में निम्न वाक्य की योजना करे—

परमेश्वर प्रीत्यर्थं पञ्चसूनादोष परिहारार्थं च भूतयज्ञैर्यक्ष्ये।

फिर देवयज्ञ से बचे हुए सिद्ध अन्न से भूत-यज्ञ करे। पहले अपने सामने पूर्व से पश्चिम की ओर जलसिञ्चनपूर्वक एक रेखा खींचे। उस पर—ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः—इस मंत्र से सिद्धअन्न का कुछ अंश समर्पण करे। फिर इसी मंत्र से उस सिद्धअन्न के बलिभाग पर जल छोड़े।

फिर उस रेखा के उत्तर में एक अन्य रेखा खींचे और उसपर—ॐ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः—इस मंत्र से बलिभाग और जल-प्रदान करे।

तदनन्तर दक्षिण मुख हो वामजानु के बल बैठ अपने सामने एक रेखा खींचे और उसपर—ॐ पितृभ्यः स्वाहा—इस मन्त्र से पितृतीर्थ-द्वारा बलि-भाग और जल-प्रदान करे।

इसके बाद उत्तर की ओर एक रेखा खींचे और दक्षिण जानु के बल बैठ उसपर—ॐ यक्षन् नमस्तेऽस्तु मा मा हिंसीः—इस मन्त्र को पढ़कर बलि-प्रदान करे और—ॐ यक्षाय नमः—पढ़कर जल छोड़े।

इसके बाद यक्षबलि के पश्चिम में जलद्वारा एक उत्तराग्र रेखा खींचे और उसपर बलिभाग रखकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्याः विभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः।
प्रयान्तु ते तृप्तिमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं मुदिता भवन्तु॥
येषां न माता न पिता न बन्धुर्नैवान्नसिद्धिर्न तथान्नमस्ति।
तत्तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तमेतत् प्रयान्तु तृप्तिं सुखिनो भवन्तु॥
भूतानि सर्वाणि तथान्नमेतत् अहं च विष्णुर्नयतोऽन्यदस्ति।
तस्मादहं भूतनिकायभूतमन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्॥
चतुर्दशो भूतगणो य एषः तत्र स्थिता येऽखिल भूतसंघाः।

तृप्त्यर्थमन्नं हि मया विसृष्टं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ॥

इस प्रकार बलि-प्रदान के मन्त्र पढ़ चुकने पर बलिभाग पर—ॐ देवादिभ्यो नमः—यह मन्त्र पढ़कर जल छोड़े। तदनन्तर—

ॐ चाण्डालपतितपापरोगिभ्यो नमः।

ॐ धर्मराजचित्रगुप्ताभ्यां नमः।

ॐ वायसेभ्यो नमः।

इन तीन मन्त्रों से भूमि पर तीन बार जल-प्रदान करे।

फिर—

ऐन्द्रवारुणवायव्याः याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ॥

यह पढ़कर—ॐ वायसेभ्यो नमः—इस मंत्र से बलि प्रदान करे।

फिर—

श्वानौ द्वौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातायेतावहिंसकौ ॥

यह पढ़कर—ॐ श्वभ्यां नमः—इस मन्त्र से बलि-प्रदान करे।

---

५ नृयज्ञ

वैश्वदेवयज्ञ के अन्त में अपने घर जो मनुष्य आ जाय उसे बिना देश, नाम, कुल, विद्या आदि पूछे, नारायण समझकर उसका आदर-सत्कार कर भोजन करावे। उसकी सेवा करने के पहले संकल्प छोड़े। संकल्प में—परमेश्वर प्रीत्यर्थं नृयज्ञैर्यक्ष्ये—इस वाक्य की अन्त में योजना करे।

छठाँ अध्याय

सर्वदेवपूजा

सन्ध्या-वन्दन, पितृतर्पण आदि तो प्रधान नित्य-कर्म हैं। परन्तु इनके सिवा इष्ट-देव की पूजा का भी प्रचार है। यह पूजा लोग अनेक तरह से करते हैं। वे सब प्रणालियाँ पुराणों तथा तंत्रों में विस्तार के साथ दी गई हैं। उन सब प्रणालियों में इष्ट-देवता की विग्रह-रूप में षोडशोपचार से पूजा करना अधिक प्रशस्त है। और यह इष्टदेव-पूजा भी 'नित्य-कर्म' का प्रधान अंग है।

१ पञ्चायतन-पूजा

सर्वदेवपूजा में पञ्चायतन-पूजा का अधिक महत्त्व है। इसमें पाँच देवता शिव, विष्णु, देवी, सूर्य और गणेश एक साथ पूजे जाते हैं। इस पूजा में (१) विष्णु के लिए शालग्राम-शिला और गोमती-चक्र,' (२) शिव के लिए वाणलिंग, (३) गणेश के लिए लाल पत्थर, (४) देवी के लिए कच्ची धातु का टुकड़ा, (५) सूर्य के लिए स्फटिक, पूजा के आधार माने गये हैं। इनमें शालग्राम-शिला और वाणलिंग के संस्कार की आवश्यकता नहीं है, किन्तु शेष का संस्कार करना पड़ता है।

ये पाँचों देव-चिह्न एक गोल थाली के बीच में पूजा करने वाले के इष्ट-देवता के अनुसार इस प्रकार रक्खे जाते हैं—

१ वैष्णव—विष्णु को बीच में, शिव को ईशान में, गणेश को आग्नेय में, सूर्य को वायव्य में और देवी को नैर्ऋत्य कोण में स्थापित करेगा।

२ शैव—शिव को बीच में, विष्णु को नैर्ऋत्य में, सूर्य को आग्नेय में, गणेश को वायव्य में, देवी को ईशान में।

३ सौर—सूर्य को मध्य में, शिव को ईशान में, गणेश को आग्नेय में, विष्णु को वायव्य में, देवी को नैर्ऋत्य में।

४ शाक्त—देवी को मध्य में, विष्णु को ईशान में, शिव को आग्नेय में, गणेश को वायव्य में, सूर्य को नैर्ऋत्य में।

५ गाणपत्य—गणेश को मध्य में, विष्णु को ईशान में, शिव को आग्नेय में, सूर्य को वायव्य में, देवी को नैर्ऋत्य में।

परन्तु यह पञ्चायतन-पूजा उतनी लोकप्रिय नहीं है। उसकी अपेक्षा उन पाँच देवताओं में से किसी एक देवता की पूजा का ही अधिक प्रचार है।

---

२ वैदिक षोडशोपचार-पूजा

हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प पढ़े। उसके अन्त में यह वाक्य कहे —

अमुक देवता प्रीत्यर्थं यथामिलितोपचारद्रव्यैः षोडषोपचारैः पूजां करिष्ये।

संकल्प कर चुकने पर देवता का ध्यान करता हुआ आवाहन करके १६ प्रकार से उनकी पूजा करे। इस पूजा के वैदिक मन्त्र क्रम-पूर्वक इस प्रकार हैं—

आवाहन—ॐ सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षःसहस्रपात्। सभूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। नमः आवाहनपूर्वकं ध्यानं समर्पयामि।

ॐ पुरुषः एवेद ꣳ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति। नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य—ॐ एतावानस्यमहिमाऽतोजायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि। नमः पाद्यं समर्पयामि पादयोः।

अर्घ्य—ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनानशनेभिः। नमः अर्घ्यं समर्पयामि शिरसि।

आचमन— ॐ ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातोऽत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः। नमः आचमनीयं समर्पयामि मुखे।

स्नान—ॐ तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृपदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्च ये। नमः स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र—ॐ तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद् यजुः तस्मादजायत। नमः वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्राभावे अक्षतानि)

यज्ञोपवीत—ॐ तस्मादश्वाऽजायन्त ये के चोभयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः। नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीताभावे अक्षतानि)

गन्धाक्षत—ॐ तं यज्ञं बर्हिषिप्रौक्षन् पुरुषंजातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये। सर्वालङ्काराभूषणं भूषितं भूत्वा नमः गन्धं अक्षतं सहितं समर्पयामि।

पुष्प—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहूः किमूरू पादाउच्येते। नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

धूप—ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत। नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीप—ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत। नमः घृतपूरित दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य—ॐ नाभ्याऽसीदंतरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोका ꣳ अकल्पयन्। नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ततः आचमनीयं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः। नमः लवंगादि फलयुक्तं ताम्बूलं समर्पयामि।

इसके बाद यथाशक्ति देवता का मंत्र-जाप करे।

आरती-प्रदक्षिणा—ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद् यज्ञं तन्वानाऽबध्नन् पुरुषं पशुम्। नमः आरार्तिक्यसहितां प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलियुक्त नमस्कार—ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। नमः मंत्रपुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं समर्पयामि।

इन मंत्रों के द्वारा विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश की षोडशोपचार से पूजा की जाती है। देवी की पूजा के लिए श्रीसूक्त के मंत्रों का इसी प्रकार उपयोग होता है।

---

२ एकमंत्रात्मक षोडशोपचार

एक यह विधि भी है कि एक ही मंत्र से देवता की षोडशोपचार से पूजा की जाती है। कुछ देवताओं के ऐसे मंत्र इस प्रकार हैं—

(१) गणेश का मन्त्र—ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधम् त्वमजासि गर्भदम्। श्री गणेशायनमः।

इस मंत्र से गणेश का ध्यान करे और इसी मंत्र से आवाहन आदि षोडशोपचारों से गणेश का पूजन करे।

(२) विष्णु का मन्त्र—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। श्री विष्णवे नमः।

इस मंत्र से विष्णु का ध्यान करे और इसी मंत्र से आवाहन आदि षोडशोपचारों से विष्णु का पूजन करे।

(३) शिव का मंत्र—ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च। ॐ शाम्भवे नमः।

इस मंत्र से शिव का ध्यान और षोडशोपचार से पूजा करे।

(४) लक्ष्मी का मंत्र—ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं इषाण सर्वलोकं म इषाण। श्री महालक्ष्म्यै नमः।

इस मंत्र से लक्ष्मी का ध्यान और पूजन करे।

---

४ पुराणोक्त सर्वदेवपूजा-विधि

आसन पर बैठकर शुद्ध होकर निम्न मंत्रों से सब देवताओं का नमस्कार करे—

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः। ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः।

इसके बाद 'मंगल-पाठ' करे। तब इष्ट-देवता के पूजन का संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में यह वाक्य जोड़ दे—आत्मनः पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं अस्माकं सकुटुम्बानां सपरिवाराणां द्विपदचतुष्पदसहितानां क्षेमस्थैर्याभयायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं समस्तमंगलावाप्त्यर्थं अमुक देवता प्रीत्यर्थं यथामिलितो पचारद्रव्यैः ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः पूजां करिष्ये तथा ममइहजन्मनि जन्मान्तरेषु च अखंड सौभाग्यादिमनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थं अमुक देवपूजनमहं करिष्ये।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः—यह मंत्र पढ़कर पूजा-द्रव्य पर और अपने ऊपर जल छिड़के। फिर इष्टदेवता का ध्यान करता हुआ आवाहन करे। यथा—

आगच्छ देव देवेश (देवी पक्षे-देवदेवेशि) तेजोराशे जगत्पते। क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम (देवीपक्षे-सुरसत्तमे)। अमुकं देवं (अमुका देवीं) आवाहयामि।

आवाहन करने के बाद नीचे का मंत्र पढ़ आसन के लिए पुष्पांजलि छोड़े—

नानारत्न समायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्। आसनं देवदेवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्। अमुकदेवाय आसनार्थेपञ्चपुष्पाणि समर्पयामि।

स्वागत—अमुकदेवस्वागतम्—यह वाक्य कहे।

पाद्य—पाद्यं गृहाण देवेश सर्वक्षेमसमर्थ भोः। भक्त्या समर्पितं देव लोकनाथ नमोऽस्तु ते। अमुक देवाय पाद्यं नमः।

अर्घ्य—नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर। नमस्ते जगदाधार अर्घ्यो नः प्रतिगृह्यताम। गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं फलद्रव्यसमन्वितम्। गृहाण तोयमर्घ्यर्थं परमेश्वरवत्सल। अमुकदेवाय अर्घं स्वाहा।

मधुपर्क—कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहितम्। आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः। अमुक देवाय आचमनं स्वधा।

मधुपर्कं सदा हृद्यं देवर्षीणां प्रियंकरम्। मया निवेदितं भक्त्या गृहाण तुष्टिदो भव। अमुक देवाय मधुपर्कं स्वधा।

आचमन—पुनः आचमनं स्वधा।

स्नान—गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव अतः शान्ति कुरुष्व मे। अमुक देवाय स्नानीयं समर्पयामि।

वस्त्र—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। अमुक देवाय वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत—देवदेव नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्। ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पुरुषोत्तम। अमुक देवाय यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

आभूषण—अलंकारो मया देव सुवर्णेन विनिर्मितः। प्रीत्यर्थं देव देवेश भूषार्थं प्रतिगृह्यताम्। अमुक देवाय भूषणानि समर्पयामि।

चन्दन—श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । अमुकदेवाय चन्दनं समर्पयामि ।

*अक्षत—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर । अमुक देवाय अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्प—सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः । पुन्नागजातिकरवीर-रसाल पुष्पैः । विल्वप्रवालतुलसीदलमल्लिकाभिस्त्वां पूजयामि जग-दीश्वर मे प्रसीद । अमुक देवाय पुष्पं समर्पयामि ।

---

*देवी जी पूजा में ये उपचार अधिक हैं । यथा स्थान ऊपर के पूजाक्रम में इन्हें जोड़ ले ।

अक्षत—अक्षतास्तण्डुलाः शुभ्राः कुंकमेन विराजिता । मया निवे-दिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि । अमुक देव्यै अक्षतान् समर्पयामि ।

हरिद्रा—हरिद्रा स्वर्णवर्णाभा सर्वसौभाग्यदायिनी । सर्वालंकार-मुख्या हि देवि त्वं प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै हरिद्रां समर्पयामि ।

कुंकुम—हरिद्राचूर्णसंयुक्तं कुंकुमं कामदायकम् । वक्त्रालंकरणं सर्वं देव्येतत्प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै कुंकुमं समर्पयामि ।

कज्जल—कज्जलं कामिकं रम्यं कामिनीकामसम्भवम् । नेत्रयोर्भूषणा-र्थाय कज्जलं प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै कज्जलं समर्पयामि ।

सिन्दूर—उदितारुणसंकाशं जवाकुसुमसन्निभम् । सीमन्तभूषणा-र्थाय सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै सिन्दूरं समर्पयामि ।

कंठ-सूत्र—माङ्गल्यतन्तुमणिभिर्मुक्ताफलविराजितम् । कंठस्य भूष-णार्थाय प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै कण्ठ-सूत्रं समर्पयापि ।

कंकण—काञ्चनैर्निर्मितं दिव्यं कंकणं च सुरेश्वरि । हस्तालंकरणा-र्थाय कंकणं प्रतिगृह्यताम् । अमुक देव्यै कंकणं समर्पयामि ।

ताटंक—नानाभरणशोभाढ्यं नानारत्नोपशोभितम् । अर्पितञ्च मया देवि तालपत्रं प्रगृह्यताम् । अमुक देव्यै ताटंकं समर्पयामि ।

धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। अमुक देवाय धूपं समर्पयामि।

दीप—साज्यञ्च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्। भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोरादीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। अमुक देवाय दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य—शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारो भक्ष्य-भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ यथांशतः अमुक देवाय नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ प्रणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ततः पानीयं समर्पयामि इति उत्तरापोशानम्। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। मुखप्रक्षालमं करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफलं महादिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। अमुक देवाय मुखवासार्थं पूगीफलयुक्तं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदंअमतः शान्ति प्रयच्छ मे। अमुक देवाय सुवर्णपुष्पदक्षिणां समर्पयामि।

इसके बाद देवता का मंत्र यथाशक्ति जपे।

प्रदक्षिण—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं प्रभो। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर॥ अमुक देवताय प्रदक्षिणं समर्पयामि।

वन्दना—करचरणकृतं वा कायजं कर्म्मजं वा। श्रवणनयनजं

वा मानसं वापराधम्। विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ अमुकदेवताय मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥ नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये। सहस्रपादाक्षि-शिरोरुबाहवे—यह पढ़कर नमस्कार करे।

प्रार्थना—आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्ज्जनम्। पूजाकर्म न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। मया यत्पूजितं देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥ अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।

अनेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतपूजनेन अमुकदेवः प्रीयताम्। आराध्यदेवतार्पणमस्तु।

---

५ पार्थिव-पूजनम्

शिव के उपासकों में पार्थिव-पूजन का बड़ा प्रचार है। उसकी विधि इस प्रकार है—

सूखी शुद्ध मिट्टी को कूटकर शुद्ध जल से सानकर रख ले। फिर—ॐ हराय नमः—यह मंत्र पढ़कर अपने हाथ में सानी हुई मिट्टी लेवे। फिर—ॐ महेश्वराय नमः—यह मन्त्र पढ़कर उस मिट्टी का सुन्दर-सुडौल शिव-लिङ्ग बनावे। फिर—ॐ शूलपाणये नमः—यह मन्त्र पढ़कर उस शिवलिङ्ग को पूजा-पात्र में रखकर उसके चारों ओर आठ पार्थिव मूर्तियाँ बनाकर रक्खे। इसके बाद अपने सिर पर एक पुष्प रख कर शिव का इस प्रकार ध्यान करे—

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराऽभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

फिर शिवलिङ्ग पर पुष्प रखकर प्राणप्रतिष्ठा करे । यथा—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः शूलपाणेः इह सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं घ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ ।

फिर यह पढ़कर शिवलिंग पर पुष्पांजलि छोड़े—

स्वामिन्सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत् त्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥

इसके बाद नीचे का मन्त्र पढ़े—

ॐ शूलपाणये नमः इह प्रतिष्ठो भव भो पिनाकधृक् तिष्ठ सन्निहितो वरदो भव अत्राधिष्ठानं कुरु कुरु मम पूजां गृहण यावत्पूजां करोम्यहम् तावदिहाधिष्ठानं कुरु कुरु स्वाहा ।

इसके बाद संकल्प पढ़े । संकल्प के अन्त में यह वाक्य जोड़ ले—

सकलपापक्षयपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे श्री शिवलिंगपूजनमहं करिष्ये ।

फिर—ॐ पशुपतये नमः आसनार्थं पुष्पं समर्पयामि नमः—यह मन्त्र पढ़कर आसन के लिए एक पुष्प शिवलिंग पर रक्खे ।

ॐ पशुपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि नमः—यह मन्त्र पढ़कर पाद्य के लिए पैरों पर जल छोड़े ।

ॐ पशुपतये नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि नमः—यह मंत्र पढ़कर हाथ में अर्घ्य के लिए जल छोड़े ।

ॐ पशुपतये नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि नमः—यह मन्त्र पढ़ कर मुख में आचमन के लिए जल छोड़े ।

ॐ पशुपतये नमः सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि नमः–यह मन्त्र पढ़कर जल से स्नान करावे।

ॐ नमः शिवाय वस्त्रकौपीनोपवीतार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः–यह मन्त्र पढ़कर वस्त्र, कोपीन और यज्ञोपवीत के लिए गन्ध, अक्षत और पुष्प छोड़े।

ॐ नमः शिवाय गन्ध विलेपयामि नमः–यह मन्त्र पढ़कर चन्दन लगावे।

ॐ नमः शिवाय अक्षतान् समर्पयामि नमः—यह मन्त्र पढ़कर अक्षत चढ़ावे।

ॐ नमः शिवाय पुष्पाणि समर्पयामि नमः–यह मन्त्र पढ़कर पुष्प चढ़ावे।

ॐ नमः शिवाय बिल्वदलानि समर्पयामि नमः—यह मन्त्र पढ़कर बिल्वपत्र चढ़ावे।

ॐ नमः शिवाय धूपं आघ्रापयामि नमः—यह मंत्र पढ़कर धूप दे।

ॐ नमः शिवाय एषः दीपः –यह मंत्र पढ़कर दीप-प्रदान करे।

ॐ नमः शिवाय इदं नैवेद्यम्—यह मंत्र पढ़कर नैवेद्य देवे।

ॐ नमः शिवाय आचमनताम्बूलपूंगीफलादीनि समर्पयामि नमः—यह मंत्र पढ़कर आचमन के लिए मुख में जल छोड़कर ताम्बूल, पूंगी, फल आदि प्रदान करे।

फिर वाम-क्रम से आठों पार्थिवों की एक एक करके जल-चन्दन-अक्षत से नीचे लिखे मंत्रों से पूजा करे—

(१) ॐ सर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, (२) ॐ रूद्रायअग्निमूर्तये नमः, (३) ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, (४) ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः, (५) ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः, (६) ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः, (७) ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, (८) ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।

इस प्रकार पूजा कर चुकने पर १०८ बार शिव-मंत्र का जप करे।

मंत्र—ॐ नमः शिवाय।

इसके बाद निम्न स्तोत्र से शिव की स्तुति करे—

सर्वज्ञानप्रविज्ञानप्रदायैक महात्मने।
नमस्ते देव देवेश सर्वभूतहिते रतः॥

अनन्तकान्तिसम्भोग परमेश नमोस्तु ते।
अनन्तकान्तिसम्पन्न अनन्तासन संस्थिते॥

परापर परातीत उत्पत्तिस्थितिकारक।
सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोस्तु ते॥

सर्वार्थे निर्मला भोग सर्वव्याधिविनाशन।
योगि योगि महायोगि योगीश्वर नमोस्तु ते॥
कृत्वा लिंगप्रतिष्ठां च ध्यात्वा देवं सदाशिवम्।
पूजयित्वा विधानेन स्तवमेतदुदीरयेत्॥
लिंगस्तवं महापुण्यं यः शृणोति सदा नरः।

नोत्पद्यते च संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम्।
पापकंचुकनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम्॥

इसके बाद—

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

—यह मन्त्र पढ़कर सदाशिव के हाथ में जल छोड़े। फिर संहारमुद्रा से विसर्जन करे और नीचे का मन्त्र पढ़े—

ॐ गच्छ गच्छ महादेव गच्छ गच्छ पिनाकधृक्।
कैलासादि पीठे गच्छन्तु यत्र तिष्ठति पार्वती॥

६ पंचदेवों के तांत्रिक मन्त्र

१ नारायण

ॐ अस्य अष्टाक्षर नारायण-मन्त्रस्य साध्यनारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री नारायणो देवता अकारो वीजं उकारः शक्तिः मकारः कीलकं अष्टाक्षर नारायणमंत्रजपकर्मणि विनियोगः।

करन्यासः—ॐ क्रुद्धोल्काय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महोल्काय स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ वीरोल्काय स्वाहा मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ व्युल्काय स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं। ॐ यज्ञोल्काय स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। ॐ सहस्रोल्काय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥ एवं अंगंन्यासः अस्त्राय फट् इति विशेषः।

उद्यत्कोटिदिवाकरानमनिशं शंखं गदां पंकजम्।
चक्रं विभ्रतमिन्दिरावसुमती संशोभिपार्श्वद्वयम्।
कोटीरांगदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभो
द्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्री वत्सचिह्नं भजे॥
मंत्रः—ॐ नमो नारायणाय।

---

२ शिव

ॐ अस्य श्री शिवपञ्चाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्री सदाशिवो देवता मं वीजं नं शक्तिः जपे विनियोगः।

करन्यासः—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं अंगंन्यासः।

ध्यानम्—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पो-ज्वलांगं परशुमृगवराऽभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

मंत्रः— ॐ नमः शिवाय।

---

३ दुर्गा

ॐ अस्य श्री वनदुर्गामन्त्रस्य आरण्यक ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री वनदुर्गा देवता हूँ वीजं स्वाहा शक्तिः जपे विनियोगः।

करन्यासः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दां ज्वल ॐ उत्तिष्ठ पुरुषि अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ दीं ज्वालिनीं ॐ किं स्वपिषि तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ दूं प्रज्वालिनीं ॐ भयं मे समुपस्थितं मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ दैं शूलिनीं ॐ यदि शक्यमशक्यं हूँ अनामिकाभ्मां हुं। ॐ दः कपर्दिनी ॐ दुर्गे भगवति शमय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं अंगन्यासः।

ध्यानम्—ध्यायेत्सुवर्णवर्णाभां त्रिनेत्रां चारुहासिनीम्। सर्वलक्षण सम्पन्नामर्द्धेन्दुकृतशेखराम्॥ चतुर्भुजां शंखचक्रधरां वालां सुरूपिणीम्। उद्यत्त्रिशूलनिभिन्न महिषां सिंहवाहिनीम्॥ मुक्तादामलसत्कंठां मुनिभिः स्तुतिपाठकैः। सिद्धैर्देवगणैर्युक्तांकुमारीभिश्च सेविताम्॥ सर्वकामप्रदां दुर्गां वरदां भक्तवत्सलाम्॥

मंत्रः—ॐ उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं हूँ दुर्गे भगवति शमय स्वाहा।

---

४ गणेश

ॐ अस्य षडक्षरवक्रतुण्डमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीवक्रतुण्डो देवता जपे विनियोगः।

करन्यासः—ॐ वं वक्रतुण्डाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रं एकदन्ताय तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ तुं लम्बोदराय मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ डां चलत्कर्णाय अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ यं गजवक्त्राय कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। ॐ हूं सर्वविघ्नेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं अंगन्यासः।

ध्यानम्—पाशाङ्कुशाभयकरं वरदं दधानम्। मृद्विन्नशोणमरविन्द-दलायताक्षम्॥ अम्भोजिनीस्फुटगतं गणनाथ मेव। ध्यायेत्प्रसन्नवत नाम्बुजमिन्दिरायै॥

मंत्रः। ॐ वक्रतुण्डाय हूँ।

---

५ सूर्य

ॐ अस्याष्टाक्षर सूर्यमंत्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसूर्यो-देवता जपे विनियोगः।

करन्यासः—ॐ सत्याय तेजो ज्वालामालिने हूँ फट् स्वाहा अंगु-ष्ठाभ्यां नमः। ॐ ब्रह्मणे तेजो ज्वालामालिने हूँ फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ विष्णवे तेजो ज्वालामालिने हूँ फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ रुद्राय तेजो ज्वालामालिने हूँ फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ अग्नये तेजो ज्वालामालिने हुँ फट् स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। ॐ स्वर्गाय तेजो ज्वालामालिने हूँ फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं अंगन्यासः।

ध्यानम्—पद्माक्षयुग्माभयदानहस्तम्। केयूरहाराङ्गदकुंडलाढ्यम्। माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे। बन्धूककान्तिं विलसत्त्रिनेत्रम्॥

मंत्रः। ॐ घृणिः सूर्य आदित्याय स्वाहा।

***

सातवाँ अध्याय

स्तोत्र-संग्रह

हिन्दू-धर्म में स्तोत्रों का बड़ा महात्म्य है। समग्र ऋग्वेद एक प्रकार का स्तोत्र-संग्रह ही है। अतएव स्तोत्रों की महिमा आज तक ज्यों की त्यों बनी है। वैदिक सूक्तों में श्रीसूक्त, लक्ष्मी-सूक्त, पुरुष-सूक्त आदि का बराबर लोग पाठ करते हैं। इसी तरह भगवद्गीता, दुर्गा सप्तशती, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्र-मोक्ष, नृसिंह-स्तोत्र, श्री राम-स्तोत्र, नीलकंठाष्टक, शिवसहस्रनाम, देवीसहस्रनाम, आदित्य-हृदय, त्रिपुरा-प्रसाद, इन्द्राक्षी-स्तोत्र आदि का नैष्ठिकों में बड़ा प्रचार है और अपने इष्टानुसार लोग नित्य स्तोत्रों का पाठ करते हैं। यहाँ कुछ ऐसे स्तोत्र संग्रह किये गये हैं जो अधिक लोकप्रिय हैं या जिनके पाठ करते रहने से पाठ-कर्ता को अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

१ सुप्रभातचिन्तनम्

श्रीगणेशायनमः

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारिः
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रःशनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥१॥
भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरंगिराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैम्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥२॥

सनत्कुमारः सनकः सनंदनः
सनातनोऽप्यासुरिपिंगलौ च ।
सप्तस्वराः सप्तरसातलानि
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥३॥
सप्तार्णवाः सप्तकुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥४॥
पृथ्वी सगंधा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुज्वलितं च तेजः ।
नभः स शब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥५॥
इत्थं प्रभाते परमं पवित्रम्
पठेत्स्मरेद्वा शृणुयाच्च तद्वत् ।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातम्
भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥६॥

---

२ श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य सूक्तस्य आनंदकर्दमचिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः श्रीर्देवता आद्यास्तिस्रोनुष्टुभः कांसोस्मितामितिप्रस्तारपंक्तिः उत्तरेत्रिष्टुभौअष्टावनुष्टुभोंत्या प्रस्तारपंक्तिः पाठे विनियोगः ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विंदेयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेऽस्मिन कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः स्रजंतुस्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततंजपेत ॥१६॥

इति श्रीसूक्तं समाप्तम ।

---

३ विष्णुपञ्जरस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः । ॐ अस्य श्री विष्णुपञ्जरस्तोत्रमन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री विष्णुः परमात्म देवता अहं बीजं सोऽहं शक्तिः ॐ ह्रीं कीलकम् मम सर्वदेहरक्षणार्थं जपे विनियोगः । अथ न्यासः—नारद ऋषये नमः मुखे । श्री विष्णुपरमात्मदेवतायै नमः हृदये । अहं वीजं गुह्ये । सोऽहं शक्तिः पादयोः । ॐ ह्रीं कीलकं पादाग्रे ।

करन्यासः —ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडंग-न्यासः—ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै व षट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुँ । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौ षट् । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ अहं—इस मंत्र से तीन प्राणायाम करे ।

ध्यानम्—परं परस्मात्प्रकृतेरनादिमेकं निविष्टं बहुधा गुहायाम् । सर्वालयं सर्वचराचरस्थं नमामि विष्णुं जगदेकनाथम् ॥

ॐ विष्णुपञ्जरकं दिव्यं सर्वदुष्टनिवारणम् ।
उग्रतेजो महावीर्यं सर्वशत्रुनिकृन्तनम् ॥१॥
त्रिपुरं दहमानस्य हरस्य ब्रह्मणोदितम् ।
तदहं संप्रवक्ष्यामि आत्मरक्षाकरं नृणाम् ॥२॥
पादौ रक्षतु गोविन्दो जंघे चैव त्रिविक्रमः ।
उरू मे केशवः पातु कटिं चैव जनार्दनः ॥३॥

नाभिं चैवाच्युतः पातु गुह्यं चैव तु वामनः ।
उदरं पद्मनाभश्च पृष्ठं चैव तु माधवः ॥४॥
वामपार्श्वं तथा विष्णुर्दक्षिणं मधुसूदनः ।
बाहू वै वासुदेवश्च हृदि दामोदरस्तथा ॥५॥
कण्ठं रक्षतु वाराहः कृष्णश्च मुखमण्डलम् ।
माधवः कर्णमूले तु हृषीकेशश्च नासिके ॥६॥
नेत्रे नारायणो रक्षेल्ललाटं गरुडध्वजः ।
कपोलौ केशवो रक्षेद् वैकुण्ठः सर्वतो दिशम् ॥७॥
श्रीवत्साङ्कश्च सर्वेषामङ्गानां रक्षको भवेत् ।
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्ष आग्नेय्यां श्रीधरस्तथा ॥८॥
दक्षिणो नारसिंहश्च नैर्ऋत्यां माधवोऽवतु ।
पुरुषोत्तमो मे वारुण्यां वायव्यां च जनार्दनः ॥९॥
गदाधरस्तु कौबेर्यामीशान्यां पातु केशवः ।
आकाशे च गदा पातु पाताले च सुदर्शनम् ॥१०॥
सन्नद्धः सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपञ्जरः ।
विष्णुपञ्जरविष्टोऽहं विचरामि महीतलं ॥११॥
राजद्वारेऽपथे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे ।
नदीषु च रणे चैव चौरव्याघ्रभयेषु च ॥१२॥
डाकिनीप्रेतभूतेषु भयं तस्य न जायते ।
रक्ष रक्ष महादेव रक्ष रक्ष जनेश्वर ॥१३॥
रक्षन्तु देवताः सर्वे ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः ॥१४॥
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ।
दिवा रक्षतु मां सूर्यो रात्रौ रक्षतु चन्द्रमाः ॥१५॥
पन्थानं दुर्गमं रक्षेत्सर्वमेव जनार्दनः ।
रोगविघ्नहतश्चैव ब्रह्महा गुरुतल्पगः ॥१६॥

स्त्रीहन्ता बालघाती च सुरापी वृषलीपतिः ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो यः पठेन्नात्र संशयः ॥१७॥
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥१८॥
आपदो हरते नित्यं विष्णुस्तोत्रार्थसंपदा ।
यस्त्विदं पठते स्तोत्रं विष्णुपञ्जरमुत्तमम् ॥१९॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।
गोसहस्रफलं तस्य वाजपेयशतस्य च ॥२०॥
अश्वमेध सहस्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः ।
सर्वकामं लभेदस्य पठनान्नात्र संशयः ॥२१॥
जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके ।
ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥२२॥

इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे इन्द्रनारदसंवादे श्री विष्णुपञ्जरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

४ महामृत्युञ्जयस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयस्तोत्रमंत्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री मृत्युञ्जयो देवता गौरी शक्तिः मम सर्वारिष्ट समस्त मृत्युशान्त्यर्थं सकलैश्वर्यप्राप्त्यर्थं च जपे विनियोगः ।
ध्यानम्—चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तस्थितम् ।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्र विलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ॥
कोटीन्दुप्रगलत्सुधाप्लुततनुं हारादि भूषोज्ज्वलम् ।
कान्तं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥
ॐ रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१॥

नीलकंठं कलामूर्तिं कालज्ञं कालनाशनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥२॥
नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयप्रभम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥३॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥४॥
देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥५॥
गंगाधरं महादेवं सर्वाभरणभूषितम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥६॥
अनाथपरमानन्दं कैवल्यपददायिनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥७॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थितिविनाशकम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥८॥
उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्तारमीश्वर गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥९॥
मार्कण्डेय-कृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥१०॥
शतावर्तं प्रकर्तव्यं संकटे कष्टनाशनम् ।
शुचिर्भूत्वा पठेत्स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥११॥
मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥१२॥
तावतस्त्वद्गतः प्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकाख्यमनुं जपेत् ॥१३॥
नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः ॥१४॥

शताङ्गायुर्मंत्रः। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रों ह्रें ह्रः हन हन दह दह पच पच गृहाण मारय मारय मर्दय मर्दय महामहा भैरव भैरवरूपेण धुनय धुनय कम्पय कम्पय विद्रय विद्रय विश्वेश्वरी क्षोभय क्षोभय कटु कटु मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा।

इति श्री मार्कंडेयपुराणे मार्कंडेयकृत महामृत्युञ्जयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

---

५ रात्रिसूक्तम्

श्रीगणेशाय नमः

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
स्तौमि निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलतेजसः ॥१॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधामात्रात्मिका स्थिता ॥२॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥३॥
त्वयैव धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥४॥
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ॥६॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥७॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥८॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शंखिनी चापिनी बाणा भुशुंडी परिघायुधा ॥९॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी ।
परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया॥११॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।
सोपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥१२॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥१३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥
इति श्री मार्कण्डेयपुराणे रात्रिसूक्तं नाम देवीस्तुतिः सम्पूर्णम् ।

६—सूर्य्यस्तोत्रम्

श्रीगणेशायनमः

यदेतन्मण्डलं शुक्लं दिव्यं चाजरमव्ययम् ।
युक्तं मनोजवैरश्वैर्हरितैर्ब्रह्मवादिभिः ॥१॥
आदिरेषहिं भूतानामादित्य इति संज्ञितः ।
त्रैलोक्यचक्षुरेषोऽत्र परमात्मा प्रजापतिः ॥२॥
य एष मण्डले ह्यस्मिन् पुरुषो दीप्यते महान् ।
एष विष्णुरचिन्त्यात्मा ब्रह्मा चैव पितामहः ॥३॥
रुद्रो महेन्द्रो वरुणः आकाशः पृथिवी जलम् ।

वायुः शशाङ्कः पर्जन्यो धनाध्यक्षो विभावसुः ॥४॥
य एष मण्डले ह्यस्मिन् पुरुषो वै प्रकाशते ।
सहस्ररश्मिः सूर्योऽयं द्वादशात्मा दिवाकरः ॥५॥
य एष मण्डले ह्यस्मिन् पुरुषो दीप्यते महान् ।
एष साक्षान्महादेवो वृत्तकुम्भनिभः शुभः ॥६॥
कालोह्येष महायोगी निरोधोत्पत्तिलक्षणः ।
य एष मण्डले ह्यस्मिंस्तेजोभिर्पूरयन्महीम् ॥७॥
भाषते ह्यव्यवच्छिन्नो धाता ह्यमृतलक्षणः ।
नातः परतरं किञ्चित् तेजसा विद्यते क्वचित् ॥८॥
पुष्णाति सर्वभूतानि एष एव सुधामृतैः ।
अन्त्यजान्म्लेक्षजातीयांस्तिर्यग्योनिगतांस्तथा ॥९॥
कारुण्यात्सर्वभूतानि पासि देव विभावसो !
श्वित्रिकुष्ठ्यन्धवधिराञ्जडान् पंगुलकांस्तथा ॥१०॥
प्रपन्नवत्सलो देवो नीरुजान् कुरुषे भवान् ।
दद्रुमण्डलमग्नाश्च निर्धनान्पुरुषांस्तथा ॥११॥
प्रत्यक्षदर्शी त्वं देव समुद्धरसि लीलया ।
कामे शक्तिः प्रभो स्तोतुं त्वामहं रोगपीड़तः ॥१२॥
स्तूयते त्वं सदा देव ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ।
महेन्द्रसिद्धगन्धर्वैरप्सरोभिः सगुह्यकैः ॥१३॥
स्तुतिभिस्ते किम् पवित्राभिरन्याभिर्वा महेश्वर ।
यस्य ते ऋग्युजुःसाम्नां त्रितयं मण्डले स्थितम् ॥१४॥
ध्यानिनां त्वं परं ध्यानं मोक्षद्वारञ्च मोक्षिणाम् ।
अनन्तस्यैकसाक्षि त्वं अचिन्त्याव्यक्तनिष्कल ॥१५॥
यन्मया व्याहृतं किञ्चित् स्तोत्रेस्मिञ्जगतः पते ।
आर्त्तिं भक्तिञ्च विज्ञाय तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥१६॥

इति सूर्यस्तोत्रम् ।

७ संकष्टनाशन गणेश-स्तोत्रम्

श्रीगणेशायनमः—नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥१॥
प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥
इति श्री नारदपुराणे संकष्टनाशनम् गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

---

८ सरस्वतीस्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं परम दुर्लभम् ।
वागीश्या मंत्रगर्भं तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥
ॐ अस्य श्री सरस्वतीस्तोत्रमंत्रस्य श्री कण्व ऋषिः विराट् छन्दः

श्री सरस्वती देवता ह्रीं वीजं ॐ शक्तिः ऐं कीलकं त्रिवर्गफलसाधने पाठे विनियोगः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं हृद्यैक वीजे शशिरुचिकमला कल्पवृक्षस्य शोभे,
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे ।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो मोदसम्पादयित्रि,
प्रोत्फुल्लाज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संसारसारे ॥१॥
ऐं ऐं ऐं इष्टमंत्रे कमलभवमुखाम्भोजभूतिस्वरूपे,
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे ।
न स्थूले नातिसूक्ष्मेऽप्यविदितविषये नापि विज्ञाततत्त्वे,
विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥२॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं जपतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते ।
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ।
विद्ये वेदान्तगीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे,
मार्गातीतस्वभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥३॥
धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्त्तनीये ।
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे ॥
पुण्ये पुण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे ।
मात्रा मात्रार्द्धतत्त्वे मति मति मतिदे माधवप्रीतिनादे ॥४॥
ह्रीं क्ष्रीं ध्रीं ह्रीं स्वरूपे हर हर दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते ।
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिनि स्तम्भविद्ये ॥
मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्त विध्वंसनीये ।
गीर्गीर्वाग्भारती त्वं कविवृपरसनासिद्धिदा सिद्धविद्या ॥५॥
स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित् त्यजेथाः ।
मा मे दुःखं कदाचिद्विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वम् ।
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाचित् ॥६॥
इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो ।

वाणीं वाचस्पतेरप्यभिमतविभवो वाक्पटुर्मूर्ध्नपङ्क्तः ॥
स स्यादिष्टार्थलाभो सुतमिव सततं पाति तं सा च देवी ।
सौभाग्यं तस्य लोके प्रवसति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥७॥
ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ।
सारस्वतो नरः पाठादस्य स्यादिष्टलाभवान् ॥८॥
पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम् ।
अविच्छेदं पठेद्विद्वान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥९॥
शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम् ।
वाञ्छितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः ॥१०॥
इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभम् ।
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वं च गच्छति ॥११॥
इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये सरस्वतीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

---

९ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

श्रीगणेशायनमः । ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य सहस्राक्ष ऋषिः इन्द्राक्षी देवता अनुष्टुछन्दः महालक्ष्मीः वीजम् भुवनेश्वरी शक्तिः भवानी कीलकम् ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वीजानि मम सर्वाभीष्टसिद्धयर्थे श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रजपे विनियोगः ।

करन्यासः—ॐ इन्द्राक्षी अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः । ॐ माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः । ॐ अम्बुजाक्षी अनामिकाभ्यां नमः । ॐ कात्यायनी कनिष्ठाभ्यां नमः । ॐ कौमारी करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडंगन्यासः—ॐ इन्द्राक्षी हृदयाय नमः । ॐ महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा । ॐ माहेश्वरी शिखायै वौ षट् । ॐ अम्बुजाक्षी कवचाय हुँ । ॐ कात्यायनी नेत्रत्रयाय व षट् । ॐ कौमारी अस्त्राय फट् । भूर्भुवः स्वः इति दिग्वन्धनम् ।

पूर्वस्यां पातु मां ब्राह्मी चाग्नेय्यां तु महेश्वरी ।
कौमारी पातु याम्ये वै नैर्ऋत्यां पातु भैरवी ॥१॥
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये नारसिंहिका ।
कालरात्रिरुदीच्यां वा ऐशान्यां सर्वशक्तिधृक् ॥२॥
ऊर्ध्वं मे भैरवी पातु चाधस्थं विन्ध्यवासिनी ।
यद् यद् विषमस्थानं, तत् तद् रक्षतु चेश्वरी ॥३॥
ध्यानम्—इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम् ।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥१॥
इन्द्राक्षीं युवतीं देवीं नानालंकारभूषिताम् ।
प्रसन्नवदनाम्भोजमप्सरोगणसेविताम् ॥२॥
द्विभुजां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम् ।
त्रैलोक्य मोहिनीं देवीमिन्द्राक्षींनामकीर्तिताम् ॥३॥
मन्त्रः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लूं इन्द्राक्ष्यै नमः ॥१०७ जपः ॥
इन्द्र उवाच । इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥४॥
कात्यायनी महालक्ष्मी चन्द्रघंटा महातपा ।
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥५॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥६॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटाङ्गी जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥७॥
अजिता भद्रजा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती करालीं च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥८॥
सदा संमोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ।
इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ॥९॥
महिषासुरसंहन्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।

वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥१०॥
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मी सरस्वती ।
अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकाऽपराजिता ॥११॥
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवंत्यम्बिका शिवा ।
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ॥१२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं ज्ञानं यशोबलम् ।
नाभिमात्र जले स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया ॥१३॥
जपेत्स्तोत्रमिमं मन्त्रं वाचासिद्धिभवेत् ततः ।
अनेन विधिना भक्त्या मंत्रसिद्धिश्च जायते ॥१४॥
सन्तुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षा संप्रजायते ।
शतमावर्तयेद् यस्तु मुच्यते नात्र संशयः ॥१५॥
आवर्तन सहस्रेण लभ्यतेवाञ्छितं फलम् ।
सायं शतं पठेन्नित्यं षण्मासात्सिद्धिरुच्यते ॥१६॥
चौरव्याधिभयस्थाने मनसा ह्यनुचिन्तयन् ।
संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥१७॥
राजानं वशमाप्नोति षण्मासान्नात्र संशयः ॥१८॥
इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

---

१० रामाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः । भजे विशेष सुन्दरं समस्त पापखण्डनम् ।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥
जटाकपालशोभितं समस्तपापनाशनम् ।
स्वभक्तभीतिभंजनं भजेह राममद्वयम् ॥२॥
निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
समं शिवं निरंजनं भजेह राममद्वयम् ॥३॥
सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।

निराकृतिं निरामयं भजेह राममद्वयम् ॥४॥
निष्प्रपंचनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम् ।
चिदेकरूपसंततं भजेह राममद्वयम् ॥५॥
भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं कृपाकरं भजेह राममद्वयम् ॥६॥
महावाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः ।
परब्रह्मव्यापकं भजेह राममद्वयम् ॥७॥
शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
विराजमानदैशिकं भजेह राममद्वयम् ॥८॥
रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यम्,
व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनंतकीर्तिम्,
संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

। इति श्री व्यासविरचितं रामाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

११ श्रीकृष्णस्तवराजः

श्री महादेव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं परम दुर्लभम् ।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्गच्छेन्नरो निरययातनम् ॥१॥
नारदाय व यत्प्रोक्तं ब्रह्मपुत्रेण धीमता ।
सनत्कुमारेण पुरा योगीन्द्रगुरुवर्त्मना ॥२॥

श्रीनारद उवाच

प्रसीद भगवन्मह्यमज्ञानात्कुण्ठितात्मने ।
तवांघ्रिपंकजरजो रागिणीं भक्तिमुत्तमाम् ॥३॥
अज प्रसीद भगवन्नमितद्युति पञ्जर ।
अप्रमेय प्रसीदास्मद्दुःखहन्पुरुषोत्तम ॥४॥

स्वसंवेद्य प्रसीदास्मादानन्दात्मननामय ।
अचिन्त्यसार विश्वात्मन्प्रसीद परमेश्वर ॥५॥
प्रसीद तुंगतुंगानां प्रसीद शिवशोभन ।
प्रसीद गुणगम्भीर गम्भीराणां महाद्युते ॥६॥
प्रसीद व्यक्तविस्तीर्ण विस्तीर्णानामगोचर ।
प्रसीदार्द्रार्द्र जातीनां प्रसीदान्तान्तदायिनाम् ॥७॥
गुरोर्गरीयः सर्वेश प्रसीदानन्तदेहिनाम् ।
जय माधव मायात्मन् जय शाश्वत शंखभृत् ॥८॥
जय शंखधर श्रीमन् जय नन्दकनन्दन ।
जय चक्रगदापाणे जय देव जनार्दन ॥९॥
जय रत्नवराबद्ध किरीटाक्रान्त मस्तक ।
जय पक्षिपतिच्छायानिरुद्धाककरारुण ॥१०॥
नमस्ते नरकाराते नमस्ते मधुसूदन ।
नमस्ते ललितापांग नमस्ते नरकान्तक ॥११॥
नमः पापहरेशान नमः सर्वभयापह ।
नमः सम्भूत सर्वात्मन्नमः संभृतकौस्तुभ ॥१२॥
नमस्ते नयनातीतं नमस्ते भयहारक ।
नमो विभिन्न वेषाय नमः श्रुति पथातिग ॥१३॥
नमस्त्रिमूर्तिभेदेन सर्गस्थित्यन्त हेतवे ।
विष्णवे त्रिदशाराति जिष्णवे परमात्मने ॥१४॥
चक्र भिन्नारि चक्राय चक्रिणे चक्रवल्लभ ।
विश्वाय विश्ववन्द्याय विश्वभूतानुवर्तिने ॥१५॥
नमोस्तु योगिध्येयात्मन्नमोस्त्वध्यात्मरूपिणे ।
भक्ति प्रदाय भक्तानां नमस्ते भक्तिदायिने ॥१६॥
पूजनं हवनं चेज्या ध्यानं पश्चान्नमस्क्रिया ।
देवेश कर्म सर्वं मे भवेदाराधनं तव ॥१७॥

इति हवन जपार्चाभेदतो विष्णुपूजा
नियत हृदयकर्मा यस्तु मंत्री चिराय ।
स खलु सकल कामान् प्राप्य कृष्णान्तरात्मा
जननमृति विमुक्तोऽत्युत्तमां भक्तिमेति ॥१८॥
गोगोपगोपिकावीतं गोपालं गोषु गोप्रदम् ।
गोपैरीड्यं गोसहस्रैर्नौमि गोकुलनायकम् ॥१९॥
प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमम् ॥२०॥
इति श्री नारदपञ्चरात्रे ज्ञानामृतसारे श्रीकृष्णस्तवराजः सम्पूर्णः ।

आठवाँ अध्याय

पितृपूजा अर्थात् श्राद्ध

१—श्राद्ध-भेद

श्राद्ध पितृकर्म है। यह मुख्यतः प्रेत तथा मृत पितरों की तुष्टि और पुष्टि के लिए किया जाता है। लोगों का विश्वास है तथा शास्त्र का मत है कि पिण्डदान और जलदान करने से दिवंगत दिव्यदेहधारी पितृ लोग प्रसन्न होते हैं तथा उन्हें सुख प्राप्त होता है। यही नहीं, जो व्यक्ति श्राद्ध करता है उसे तथा उसके कुटुम्ब को पुण्य होता है।

यह धारणा ठीक नहीं है कि श्राद्ध केवल अन्त्येष्टिकर्म अर्थात् मृत्यु के बाद का प्रेत-कर्म है। यह तो नित्य किया जा सकता है और आनन्द के अवसर पर किया जाता है। 'निर्णयसिंधु' में १२ प्रकार के श्राद्ध लिखे हैं—

(१) नित्यश्राद्ध—प्रातः और सायं सन्ध्या की उपासना के समय पितरों को जो तर्पण (जलदान) किया जाता है वही 'नित्यश्राद्ध' है।

(२) नैमित्तिक— यह श्राद्ध विशेष अवसर पर किया जाता है, जैसे अन्त्येष्ठि के समय। यह एक ही व्यक्ति के लिए किया जाता है। इसे 'एकोद्दिष्ट' कहते हैं। नैमित्तिक श्राद्ध प्रतिनिधि-द्वारा भी किया जा सकता है।

(३) काम्य—किसी कामना विशेष के लिए 'काम्य-श्राद्ध' किया जाता है, जैसे पुत्र की प्राप्ति आदि।

(४) वृद्धिश्राद्ध—सौभाग्य की वृद्धि के लिए यह श्राद्ध किया जाता है।

(५) सपिण्डन—सभी सपिण्ड सम्बन्धियों को सुख पहुँचाने के लिए यह श्राद्ध किया जाता है। इसे स्त्रियाँ भी करती हैं।

(६) पार्वण—यह पिता, पितामह और प्रपितामह आदि तीन पितरों के निमित्त किया जाता है।

(७) गोष्ठीश्राद्ध—यह कुटुम्ब के लोगों के एकत्र होने के समय किया जाता है।

(८) शुद्ध्यर्थ—शुद्धता के लिए किया जाता है। पितरों के प्रतिनिधि-रूप में परिमित संख्यक ब्राह्मणों को भोज दिया जाना इस श्राद्ध का मुख्य अंग है।

(९) कर्माङ्ग—यह श्राद्ध किसी संस्कार के अवसर पर किया जाता है।

(१०) दैविक।

(११) यात्रार्थ—यात्रा की सफलता के लिए।

(१२) पुष्ट्यर्थ—शरीर के स्वास्थ्य और भलाई के लिए।

श्राद्ध के लिए समय और स्थान भी निर्दिष्ट हैं। त्रयोदशी तिथि, मघा नक्षत्र, वर्षा-ऋतु और आश्विन का कृष्णपक्ष श्राद्ध के लिए उत्तम काल माना गया है। पवित्र नदियों या तालाबों के तट या विष्णु के पद-चिन्हित स्थल श्राद्ध करने के लिए उपयुक्त स्थान निश्चित किये गये हैं। श्राद्ध में पितरों के लिए अपना प्रिय भोजन दिया जाता है और दिया जाता है श्रद्धा के साथ, इसी लिए इस पितृकर्म को 'श्राद्ध' कहते हैं। इस कृत्य में 'वेदपाठी' ब्राह्मण-भोजन मुख्य माना गया है, क्योंकि ब्राह्मणों के द्वारा ही पितृगण श्राद्धान्न ग्रहण करते हैं।

२—मुख्य श्राद्ध-दिन

धर्म-सिन्धु में वर्ष में पितृश्राद्ध के ९६ दिन बताये गये हैं। उनमें १२ अमावस्यायें, १२ संक्रान्तियाँ, ४ युगादि तिथियाँ, भाद्रपद कृष्ण के १५ दिन, ५ अष्टक तथा ४० और दिन गिनाये गये हैं। मार्कण्डेय पुराण में इनमें अनेक ऐच्छिक कर दिये गये हैं। उसमें १२ अमावस्यायें और ३ अष्टक

अनिवार्य कहे गये हैं। परन्तु आजकल लोग भाद्रपद में छयाह को श्राद्ध करते हैं तथा वार्षिक के दिन। इसके सिवा कुछ लोग ४ अष्टकों में भी श्राद्ध करते हैं। कुछ लोग आश्विन के कृष्ण पक्ष के अन्तिम दिन ही श्राद्ध करते हैं।

१—पितृ-श्राद्ध के सोलह दिन—आश्विन के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक का काल महालय, पितृपक्ष या अपर पक्ष कहलाता है। इन दिनों सूर्य कन्याराशि में होते हैं। इस काल का प्रारम्भ होते ही पितृगण यमपुरी से आकर अपने वंशजों के यहाँ रहते हैं।

२—पितृपक्ष के मुख्य दिन—

(१) चौथ भरणी या भरणी-पञ्चमी—चौथ या पञ्चमी—गत वर्ष जिसकी मृत्यु हुई है उसका श्राद्ध इस तिथि पर किया जाता है।

(२) अविधा नौमी—अपने पति के जीवन-काल में मरनेवाली स्त्री का श्राद्ध इस तिथि पर किया जाता है। एक या अधिक ब्राह्मणियाँ खिलाई जाती हैं।

(३) घातचतुर्दशी—युद्ध में या और किसी तरह मारे गये व्यक्तियों का श्राद्ध इस तिथि में होता है।

(४) सर्वपितृ अमावस्या—इस दिन सब पितरों का श्राद्ध होता है।

(५) मातामह—नाना का श्राद्ध आश्विन-प्रतिपदा को होता है।

३—चार दिन चार अष्टक कहलाते हैं जो ये हैं—(१) मार्गशीर्ष की कृष्ण अष्टमी; (२) पौष की कृष्ण अष्टमी—यह पुष्पाष्टका कहलाती है, क्योंकि पुष्प दिये जाते हैं; (३) माघ की कृष्ण अष्टमी—यह मांसाष्टका कहलाती है, क्योंकि बकरे या हिरन का मांस दिया जाता है; (४) फाल्गुन की कृष्ण अष्टमी—यह शाकाष्टका कहलाती है, क्योंकि शाक दिया जाता है।

३—चार श्राद्धों की विधियाँ

(१) नान्दीमुख-श्राद्ध—नान्दीमुख-श्राद्ध मङ्गल-कार्य के समय का श्राद्ध

है। इसमें माताओं की प्रधानता है। पहले माता, पितामही, प्रपितामही का आवाहन-पूजा कर लिया जाता है तब पिता-पितामह और प्रपितामह का आवाहन-पूजन होता है। मातृकुल के पितरों, मातामह, प्रमातामह और वृद्ध प्रमातामह का आवाहन पत्नी-सहित किया जाता है। इस प्रकार नान्दीमुख-श्राद्ध में नौ आसन पितरों के तथा दो आसन दोनों कुलों के विश्वेदेवों के होते हैं। यह श्राद्ध करते समय जनेऊ दाहने कन्धे पर न रख कर सदा की भाँति बाँये कन्धे पर रक्खा जाता है, साथ ही दक्षिण की ओर मुख भी नहीं करना होता। पूर्व की ओर मुँह करके देव-कार्य्य के समान ही यह श्राद्ध किया जाता है। पार्वण और एकोद्दिष्ट श्राद्धों के समान इसमें बिकिर पिण्ड की भी विधि नहीं है। दही और बैर के फल का पिण्डदान करने का विधान है।

नान्दीमुख-श्राद्ध करते समय नियमानुसार शान्तिपाठ और मङ्गल-पाठ के बाद नान्दी-श्राद्ध का पूर्वाङ्ग-भूत मातृका पूजन होता है। सबका सङ्कल्प करते समय नियमानुसार उल्लेख किया जाता है।

नान्दी श्राद्ध करते समय फिर संकल्प करे। उसके अन्त में—मातृ-पितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः, मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञमाश्च विश्वेदेवाः एतानुद्देश्य यथाविधि नान्दीमुखश्राद्धं करिष्ये—इस वाक्य की योजना करे।

ॐ यतोऽसि सोमदेवत्यो गोसवे देवनिर्मितः प्रत्यूवद्भिः प्रत्तः पुष्ट्या नान्दीमुखाम् पितृमाँल्लोकान् प्रीणयाहि नः स्वाहा।

इस ऊपर के मन्त्र द्वारा—ॐ नान्दी मुखीं मातरम् आवाहयामि, पितामहीं आवाहमामि, प्रपितामहीम्—आदि क्रम से सब पितरों का तथा विश्वेदेवों का आवाहन करे बाद को उसी क्रम से पिण्डदान करके विविधोचार से पूजन करे।

अन्त में आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करे—

माता-पितामही चैव तथैव प्रपितामही।

एताभवन्तु मे प्रीतः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥
पिता-पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ।
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः ॥
एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥
यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि अर्पित करे और विसर्जन करे ।

---

(२) सक्तुकान्न (सेतुवा) श्राद्ध

कर्ता शुद्ध हो कर आसन पर बैठे । फिर आचमन कर पवित्री पहन कर हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प पढ़े । संकल्प के अन्त में नीचे के वाक्य की योजना अपसव्य होकर करे—

अमुक गोत्राणां अस्मत्पितापितामहप्रपितामहानां अमुकामुकामुक शर्मणां वसुरूद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां अमुकगोत्राणां अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकामुक शर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां कालकामविश्वेदेवपूर्वकं सक्तुकान्न श्राद्धमहं करिष्ये ।

यह संकल्प छोड़ कर फिर सव्य हो जाय और हाथ में जल-अक्षत लेकर—

पित्रादित्रय मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः कालकाम विश्वेदेवाः इद सक्तुकान्नं समिष्टं साम्रफलं सजलघटं यद्दत्तं तेन विश्वेदेव ब्राह्मणाः प्रीयन्तां वो नमः—

यह वाक्य पढ़कर दो जल-घट और दो दोने सत्तू पितरों को प्रदान करे ।

इसके बाद फिर अपसव्य हो जाय और दक्षिण की ओर मुँह कर हाथ में जल और तिल लेकर—

अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मा वसुस्वरुपः सपत्नीक इदं

सक्तुकान्नं समिष्टं साम्रफलं सजलघटं सदक्षिणं यद्दत्तं ते स्वधा—यह वाक्य पढ़कर पिता और माता को एक जल-घट और एक दोना सत्तू प्रदान करे।

इसी प्रकार उक्त वाक्य पढ़ कर और यथास्थान नामों और पदों की योजना कर पितामह और प्रपितामह को तथा मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह को भी अलग अलग क्रम से जलघट और सत्तू प्रदान करे।

अन्त में सव्य होकर हाथ में जल और अक्षत लेकर—

पितादित्रय मातामहादित्रय श्राद्धसंबन्धिनां कालकाम नाम्नां विश्वेदेवानां कृतैतत्सक्तुकान्नश्राद्धप्रतिष्ठा संगतासिद्धयर्थं ताम्रमयी दक्षिणा या दत्ता विश्वेदेव ब्राह्मणाः प्रीयन्तां वो नमः—यह वाक्य पढ़कर सांगता प्रदान करे।

तब पवित्री उतार डाले और आचमन कर विष्णु का स्मरण करे। यथा—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
नूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यह श्राद्ध वैशाख की अमावास्या को होता है।

---

(३) दीपकश्राद्ध

कार्तिक की अमावास्या को लक्ष्मी-पूजा और दीपमाला जलाने के पहले पितरों के लिए दीपक जलाये जाते हैं। यही दीपश्राद्ध है।

शुद्ध होकर शुद्ध स्थान में बैठकर पहले दीपक जलावे। तब आचमन कर पवित्री धारण कर संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में संकल्प का यह अंश, अपसव्य होकर पढ़े—

अमुक गोत्राणां अस्मत्पितापितामहप्रपितामह अमुकामुकामुक नाम शर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां अमुकगोत्राणां अस्मन्माता-

महप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य-स्वरूपाणां सपत्नीकानां कालकामविश्वेदेवपूर्वकं दीपश्राद्धमहं करिष्ये।

संकल्प छोड़ चुकने पर सव्य होकर हाथ में जल-अक्षत लेकर यह पढ़े—

पित्रादित्रय मातामहादित्रय श्राद्धसंबन्धिनः कालकामविश्वेदेवाः इमौ दीपौ प्रज्वलितौ यौ दत्तौ विश्वेदेव ब्राह्मणा प्रीयन्तां वो नमः।

अब अपसव्य होकर सपत्नीक पिता, पितामह और प्रपितामह को अलग अलग दो दो दीपों का दान करे। उसी तरह सपत्नीक मातामह आदि का भी करे। यथा—

अमुक गोत्र अस्मत्पिता अमुक शर्मा वसुरूप सपत्नीक एषः प्रदीपः यो दत्तः ते स्वधा।

उक्त वाक्य में यथा स्थान गोत्र तथा पितामह आदि का नामोल्लेख कर उन्हें क्रम से ६ प्रदीप प्रदान करे।

अन्त में विष्णु का स्मरण करे। यथा—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वंदे तमच्युतम्॥

---

(४) कृशरान्न (खिचड़ी) श्राद्ध

यह श्राद्ध माघ की अमावस्या को होता है। इसकी विधि यह है—

शुद्ध स्थान में शुद्ध होकर आसन पर बैठे। आचमन कर पवित्री धारण करे। हाथ में जल लेकर संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में—

अमुक गोत्राणां अस्मत्पितापितामहप्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकामुक शर्मणां वसुरुद्रादित्यस्व-रूपाणां कालकाम विश्वेदेवपूर्वकं कृशरान्नश्राद्धमहं करिष्ये—यह वाक्य अपसव्य होकर पढ़े।

संकल्प छोड़कर फिर सव्य हो जाय और पूर्वमुख होकर हाथ में जल-अक्षत लेकर यह वाक्य पढ़े—

पित्रादित्रय-मातामहादित्रय-श्राद्धसम्बन्धिनः कालकामविश्वेदेवाः इदं कृशरान्नं सघृतं सतिलमोदकं सदक्षिणं यद् दत्तं तेन विश्वेदेव-ब्राह्मणाः प्रीयन्तां वो नमः।

इस वाक्य को पढ़कर दो पात्र कृशरान्न प्रदान करे।

इसके बाद अपसव्य और दक्षिण-मुख होकर हाथ में जल और तिल लेकर—

अमुक गोत्रः अस्मत्पितः अमुक शर्मम् वसुस्वरूप सपत्नीक इदं कृशरान्नं सलवणं सघृतं सतिमोदकं सदक्षिणं यदत्तं ते स्वधा—यह वाक्य पढ़कर पिता और माता को एक पात्र कृशरान्न प्रदान करे।

इसी तरह ऊपर का वाक्य पढ़ पढ़कर गोत्र के सहित पितामह, प्रपितामह आदि के नाम ले लेकर व मातामह आदि के नाम ले लेकर एक एक पात्र कृशरान्न प्रदान करे।

इस प्रकार कृशरान्न का दान कर चुकने पर हाथ में जल, तिल और दक्षिणा-द्रव्य लेकर—

पित्रादित्रय-श्राद्धसम्बन्धिनां कालकामनाम्नां विश्वेदेदानां कृतैतत्कृशरान्नश्राद्धप्रतिष्ठासांगतासिद्ध्यर्थं ताम्रमयी दक्षिणा या दत्ता विश्वेदेवब्राह्मणाः प्रीयन्तां वो नमः।

यह पढ़कर पवित्री उतार डाले और आचमन कर विष्णु का स्मरण करे। यथा—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो बंदे तमच्युतम्॥

नवाँ अध्याय

विशेष पूजा-कृत्य

१ नवरात्र-देवीपूजन

आश्विनि और चैत्र के कृष्ण-पक्ष के प्रथम नौ दिनों तक यह पूजा होती है। इसकी विधि यह है—

स्नान आदि करके पवित्र होकर पत्नी के साथ शुद्ध स्थान में कलश की स्थापना करे। प्रतिपदा को सवेरे दस घड़ी के भीतर कलश की स्थापना हो जानी चाहिए। जिस स्थान पर कलश की स्थापना करनी हो वहाँ पहले शुद्ध मिट्टी की वेदी बनावे। फिर वहाँ से प्रभृतिक पञ्चपल्लव, दूर्वा-फल, ताम्बूल, कुंकुम, पुष्प, धूप, दीप आदि पूजा-सामग्री एवं कलश तथा शुद्ध जल लाकर रक्खे। फिर पति-पत्नी दोनों अलग अलग आसन पर बैठ कर संकल्प छोड़ें। संकल्प में यथा स्थान निम्न वाक्य जोड़कर संकल्प पढ़े—

मम इह जन्मनि दुर्गाप्रीति-द्वारा चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थं शारदीय (अथवा वासन्तीय) नवरात्रे-प्रतिपद-विहितं कलशस्थापनं दुर्गापूजां दुर्गा-सप्तशतीपाठं कुमारीपूजादिकर्म करिष्ये।

इसके बाद यथा विधि कलश की स्थापना कर गणेश, वरुण आदि का पूजन करे।

---

१ सप्तमृत्तिका—गजशाला, अश्वशाला, रथागार, वल्मीक, नदी-सङ्गम, गोशाला, चबूतरा आदि स्थानों की मिट्टी।

२ पञ्च पल्लव—पीपल, गूलर, पाकड़, आम, वट के पल्लव।

तदन्तर कलश के ऊपर दुर्गा की स्वर्ण-प्रतिमा स्थापित करे। फिर हाथ में जल लेकर संकल्प पढ़े। अन्त में यह वाक्य जोड़कर संकल्प पढ़े—अतुलविभूतिकामः संवत्सरसुखप्राप्तिकामः श्रीदुर्गापूजनं करिष्ये।

संकल्प कर चुकने पर यह मंत्र पढ़कर प्रतिमा में दुर्गा देवी का आवाहन करे—

जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥

इस प्रकार दुर्गा देवी का आवाहन कर उनकी 'पुरुषसूक्त' और 'श्रीसूक्त' के मंत्रों से १६ प्रकार से पूजा करे।

पूजा कर चुकने पर यह मंत्र पढ़ कर प्रार्थना करे—

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
मया यत्पूजितं देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
यशो देहि जयं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे॥

इस प्रकार प्रार्थना कर 'सप्तशतीस्तोत्र' का पाठ करे। पाठ करने के पहले संकल्प पढ़े, जिसके अन्त में यह वाक्य जोड़ ले—

श्री दुर्गाप्रीत्यर्थं कवच-अर्गला-कीलक-सहितं।
मार्कण्डेयपुराणीयं ॐ सावर्णिः सूर्य्यतनय इत्यादि सावर्णिर्भविता मनुरि त्यन्तं देवी-महात्म्य-पाठं करिष्ये।

इस प्रकार कर्ता नवरात्र के दिनों में प्रतिदिन व्रतपूर्वक दुर्गा-पूजन और सप्तशती-स्तोत्र का पाठ करे। व्रत के पार्वण के दिन कुमारी-पूजन और कूष्माण्ड का बलिदान करे। अन्त में कलश का विसर्जन करे।

कुमारी-पूजन—गणेश और वटुक के सहित नौ कुमारियों का पूजन

करे। यदि उतनी शक्ति न हो तो सात, पाँच, तीन या एक की पूजा करे। परन्तु पूजा करे गणेश और वटुक के साथ ही।

वायव्य कोण से आरम्भ करके ईशान कोण तक आसन बिछाकर पहले गणेश, फिर वटुक, उसके बाद कुमारियों को एक पंक्ति में बिठाकर पाद्य आदि उपचारों से उनकी पूजा करे। पहले संकल्प पढ़कर छोड़े। संकल्प के अन्त में यह वाक्य पढ़े—

सर्वापच्छान्तिपूर्वकं ममाभीष्टसिद्धये गणेशवटुकादिसहितं कुमारी-पूजनं करिष्ये।

पहले गणेश का—ॐ गं गणपतये नमः—इस मन्त्र से पूजन करे।

इसके बाद वटुक का—ॐ वं वटुकाय नमः—इस मन्त्र से वटुक का पूजन करे।

इसके बाद—

ॐ मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नव दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाह्याम्यहम्॥

इस मंत्र से कुमारियों का आवाहन कर पूजन करे। पाद्यादि उपचारों से पूजन कर सबको माला पहना कर उन सब को लड्डू, दही, दूध आदि धीरे-धीरे खिलावे। पानी माँगने पर पानी पिलावे। जब वे भले प्रकार तृप्त हो जायँ तब उनका हाथ-मुँह धुलाकर उनके हाथ में अक्षत और दक्षिणा देकर उनको प्रणाम करे। गणेश और वटुक के प्रतिनिधि किसी छोटे लड़के को बनावे। दो वर्ष की कन्या 'कुमारी', तीन वर्ष की 'त्रिमूर्ति', चार वर्ष की 'कल्याणी', पाँच वर्ष की 'रोहिणी', छः वर्ष की 'कालिका', सात वर्ष की 'चण्डिका', आठ वर्ष की 'शांभवी', नौ वर्ष की 'दुर्गा', और दस वर्ष की 'सुभद्रा' के रूप में पूजे।

कूष्माण्ड-बलिदान—कर्ता स्वस्तिवाचन करके संकल्प करे। संकल्प के अन्त में यह वाक्य कहे—प्रतिपद् गणपत्यादिस्थापितानां देवानां नारिकेल (कूष्माण्ड) बलिसहितं उत्तर-पूजनमहं करिष्ये।

इसके बाद यथोपचार गणेश आदि का पूजन करे। अन्त में नारियल या कूष्माण्ड लेकर उसे धोकर रक्खे और उसमें प्राणप्रतिष्ठा-मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठा करे। फिर उसका पंचोपचारों से पूजन करे और बलि दे। बलि का आधा भाग देवी के सामने रखकर यह मंत्र पढ़े—

ॐ महामाये जगन्मातः सर्वकामप्रदायिनि।
ददामि नारिकेल (कूष्माण्ड) बलिः प्रसीद वरदा भव॥

फिर—यह मन्त्र पढ़कर देवता का नमस्कार करे।

ॐ सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम्॥

कलश-विसर्जन—इसके अनन्तर कलश का एक फूल उठाकर—ॐ दुर्गायै नमः—यह मंत्र पढ़कर ईशान कोण में फेककर विसर्जन करे। फिर कर्ता कलश का जल अपने मस्तक पर छिड़क उसे उठा ले और जलाशय के पास जाकर नीचे के मंत्र पढ़कर उसे जल में प्रवाहित करे—

ॐ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता।
संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै॥
इमां पूजां मया देवि यथाशक्योपपादिताम्।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम्॥

---

२ खड्ग-पूजा

खड्ग को म्यान से निकाल कर आधार पर रक्खे। उसमें 'ह्रीं'—बीज-मन्त्रचन्दन से लिखे। इसके बाद हाथ में फूल लेकर यह ध्यान करे। यथा—

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्।
रक्ताम्बरधरञ्चैव पाशहस्तं कुटुम्बिनम्।
पिबमानञ्च रुधिरं भुञ्जानं क्रव्यसंहतिम्॥

इस प्रकार खड्ग का ध्यान कर उसे आगे के मन्त्र से अक्षत छोड़कर अभिमंत्रित करे—

ॐ रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः। फिर—ॐ ऐं ह्रीं खड्गाय नमः—इस मंत्र से पाद्यादिषोडशोपचार से खड्ग की पूजा करे।

इसके बाद—ॐ महादेवाय नमः—इस मंत्र से मूठ की,—ॐ यमाय नमः—इस मन्त्र से धार की और—ॐब्रह्मणे नमः—से नोक की पूजा करे।

फिर खड्ग को नीचे के मन्त्र पढ़कर नमस्कार करे।

ॐ असिविसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपालः नमोस्तु ते॥
इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्रिका तुभ्यं गुरुर्देवो महेश्वरः।
हिरण्यञ्च शरीरन्ते धाता देवो जनार्दनः॥
पिता पितामहो देवस्वं मां पालय सर्वदा।
नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः॥
भाव शुद्धोमर्षणश्च अतितेजास्तथैव च।
इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः॥
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः।

इस प्रकार नमस्कार कर आगे का मन्त्र पढ़कर खड्ग पर पुष्प छोड़े—ॐ तीक्ष्णदंष्ट्राय नमः।

---

३ वर्षगाँठ

जन्मतिथि के दिन नित्य-कर्म कर चुकने पर जन्म-तिथि-सम्बन्धी कर्म करने का संकल्प करे। संकल्प के अन्त में—शुभवर्षवृद्धौ सकलमंगल-संम्बलितदीर्घायुष्यकामो मार्कण्डेयादिपूजनमहं करिष्ये— यह वाक्य पढ़े।

संकल्प छोड़कर स्वस्तिपाठपूर्वक कलश की स्थापना कर गणेश, वरुण आदि का पूजन करे।

इसके बाद मार्कण्डेय का ध्यान करे। यथा—

द्विभुजं जटिलं सौम्यं सुवृद्धं चिरजीविनम्।
दण्डाक्षसूत्रहस्तं च मार्कण्डेयं विचिन्तयेत्॥

इस प्रकार ध्यान कर—ॐ मार्कण्डेयाय नमः—इस मंत्र से मार्कण्डेय का षोडशोपचार से पूजन करे।

पूजा कर चुकने पर पुष्पांजलि प्रदान करे। यथा—

ॐ आयुःप्रद महाभाग सोमवंशसमुद्भव।
महातप मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेय नमोस्तु ते॥

इसके बाद प्रार्थना करे यथा—

चिरजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।
रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रियायुक्तश्च सर्वदा॥
मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पांतजीविन।
आयुरिष्टार्थसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव॥

इसके बाद व्यास, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, बलि, प्रह्लाद हनूमान, और विभीषण की पूजा करे।

व्यासाय नमः व्यासमावाहयामि इदंपाद्यं, एषोऽर्घ्यः, इदमाचनीयं, इदं स्नानीयं जलं, अयं गन्धः, इमेऽक्षताः, इमानि पुष्पाणि, एष धूपः, एष दीपः, इदं नैवेद्यं, इदं आचमनीयं, इदं ताम्बूलं, एषा दक्षिणा।

इस प्रकार प्रत्येक का पूजन करे। सब का पूजन कर चुकने पर अन्त में कहे—

एभिः गन्धाक्षतपुष्पैर्यथाकृतमर्चनं तैः सर्वेदेवाः प्रीयन्तां सन्तुष्टा वरदाश्च भवन्तु।

फिर—ॐ षां षष्ठ्यै नमः—इस मंत्र से दधि और अक्षत से देवी की

पूजा कर नमस्कार करे। यथा—मातृभूतासि भूतानां ब्रह्मणा निर्मित पुरा। तन्मनाः पुत्रवत्कृत्वा पालयित्वा नमोऽस्तु ते।

षष्ठी देवी की प्रार्थना के बाद नीचे का मंत्र पढ़कर तिल-गुड़ मिलाकर दूध पिये—

सतिलं गुडसंमिश्रमञ्जल्यर्धमितं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये॥

इसके बाद नीचे का मंत्र पढ़कर अभिषेक करे—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि।

तब यह मन्त्र पढ़कर तिलक लगावे—

ॐ युञ्जन्ति ब्रध्न मरुषं चरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचना दिवि।
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य विश्वमाभासि रोचनम्॥

---

४ अश्वत्थ-पूजा-प्रदक्षिणा

अश्वत्थ (पीपल) के अग्निकोण में बैठकर पहले आत्म-शोधन और आसन-शोधन करे। इसके बाद पूजा करे। पहले विनियोग छोड़े—

ॐ आरात्ते इति मंत्रस्य आरण्यक ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अश्वत्थ-रूपी नारायणो देवता निरंजनो बीजं श्रीः शक्तिः अश्वत्थरूपिणो नारायणस्य प्रीतये समाभीष्टसिद्धये विनियोगः।

तब नीचे के मन्त्रों से करन्यास करे—

ॐ आरात्ते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ अग्निरस्त्वारात् तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ परशुरस्तु ते मध्यमाभ्यां व षट्। ॐ निवातेत्वाभिवर्षतु अनामिकाभ्यां हुँ। ॐ स्वस्ति तेऽस्तु वनस्पते कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। ॐ स्वरित मेऽस्तु वनस्पते करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी तरह षडंग-न्यास करे। न्यास कर चुकने पर ध्यान करे। यथा—

श्वेतवर्णं सलक्ष्मीकं भुजाष्टकविभूषितम्। अभयं वरदं शान्तं खड्ग-खेटकधारिणम्॥ शंखचक्रधरं देवं पीतवासःसमन्वितम्। धनुर्बाण-समायुक्तं चिन्तयेत् पुरुषोत्तमम्॥

ध्यान कर चुकने पर नारायण के मन्त्र से या प्रणव से पाद्य आदि उपचारों से अश्वत्थ का पूजन करे। इसके बाद नीचे के मन्त्र से नमस्कार करे--

मूले विष्णुश्च रुद्रश्च शिखायाञ्च प्रजापतिः। पत्रतो जाह्नवीतोयं गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते॥

नमस्कार करके नीचे का मन्त्र १० बार जपे—

ॐ आरात्ते अग्निरस्त्वारात् परशुरस्तु ते निवाते त्वाभिवर्पतु। स्वस्ति तेऽस्तु वनस्पते स्वस्ति मेऽस्तु वनस्पते॥

जप करके इसी मंत्र को पढ़ता हुआ सात बार प्रदक्षिणा करे। अन्त में यह स्तुति पढ़े तथा देवताओं का विसर्जन करे--

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय वृक्ष-राजाय ते नमः॥ अग्निगर्भं शमीगर्भं यज्ञगर्भं सनातन। हिरण्यगर्भं श्रीगर्भं वेदगर्भं नमोऽस्तु ते॥ चक्षुः स्पन्दं भुजस्पन्दं दुःस्वप्नं दुर्विचि-न्तनम्। शत्रूणाञ्च समुत्थानमश्वत्थ प्रतिहन्यताम्॥ एकादशोऽसि रुद्राणां वसूनामपि चाष्टमः। नारायणोऽसि देवान वृक्षराजोऽसि पिप्पलः। त्वां दृष्ट्वा मुच्यते पापात्स्पृष्ट्वा लक्ष्मीः प्रवर्द्धते। प्रदक्षिणा-द्भवेदायुः सदाश्वत्थ नमोऽस्तु ते॥ अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्ष राजे। नारायणस्तिष्ठति सर्वकालम्। तस्मात् शुचिस्त्वं सततं तरूणाम्। धन्योऽसि चारिष्टविनाशनोऽसि ते। क्षीरदस्त्वं फलं दाता येन श्रीस्त्वां निषेवते। तेन सत्येन वृक्षेन्द्र मामपि श्रीनिषेवताम्।

ब्राह्मण मूल का स्पर्श करे और यह मन्त्र पढ़े- ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योतिव्याधिर्महारथी जायताम्॥

वैष्णव मध्य-भाग का स्पर्श करे और—ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा

पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्—शैव वृक्ष का अग्रभाग स्पर्श करे और—ॐ त्र्यम्बकं०—यह मंत्र पढ़े।

मङ्गल, रवि, भृगुवार, द्वादशी, रात्रि और सन्ध्याकालों में अश्वत्थ का स्पर्श न करे। शनिवार को अश्वत्थ के मूल का स्पर्श करने से मृत्युबाधा दूर होती है।

---

५ पतिव्रता-पूजा

पतिव्रता स्त्री को प्रतिदिन स्वामी का पूजन करना चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है—

पत्नी सवेरे उठ कर पति को प्रणाम करे। इसके बाद स्नान करे। तब पति को स्नान करावे। फिर उन्हें आसन पर बिठाकर माथे में चन्दन लगा गले में माला पहनावे। इसके बाद प्रणाम कर—ॐ नमः कान्ताय शान्ताय सर्वदेवाश्रयाय स्वाहा—इस मंत्र से पैरों पर पाद्य, शिर पर अर्घ्य, पुष्प, चन्दन तथा नैवेद्य, जल एवं ताम्बूल प्रदान करे। तदन्तर नीचे लिखे स्तोत्र को पढ़ कर स्तुति करे—

ॐ नमः शान्ताय शास्त्रे च शिवचन्द्रस्वरूपिणे।
नमः शान्ताय दान्ताय सर्वदेवाश्रयाय च॥
नमो ब्रह्मस्वरूपाय सतीप्राणपराय च।
नमस्याय च पूज्याय हृदाधाराय ते नमः॥
पञ्चप्राणाधिदेवाय चक्षुषस्तारकाय च
ज्ञानाधाराय पत्नीनां परमानन्दरूपिणे॥
पतिर्ब्रह्मा पतिर्विष्णुः पतिर्देवो महेश्वरः।
पतिश्च निर्गुणाधारो ब्रह्मरूप नमोस्तुते॥
क्षमस्व भगवन् दोषं ज्ञानाज्ञानाकृतञ्च यत्।
पत्नीबन्धो दयासिन्धो दासीदोषं क्षमस्व च॥

इदं स्तोत्रं महापुण्यं सृष्ट्यादद्ये पद्म्या कृतम्।
सरस्वत्या च धरया गङ्गया च पुरा व्रज॥
सावित्र्या च कृतं भक्त्या कैलासे शंकराय च।
मुनीनां च सुराणां च पत्नीभिश्च कृतं पुरा॥
पतिव्रतानां सर्वासां स्तोत्रमेतत् शुभावहम्।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं या श्रणोति पतिव्रता॥
नरोऽन्यो वापि नारी वा लभते सर्ववान्छितम्।
इति पतिपूजा—स्तोत्रम् ब्रह्मवैवर्तक पुराणे।

---

६ नागपञ्चमी की पूजा

कर्ता आसन पर बैठकर जल-अक्षत लेकर संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में यह वाक्य कहे—

अमुक शर्मा सांवत्सरिक योगक्षेमार्थं गणेशगौरीसहतक्षकाद्यष्ट-कुलीनागानां यथोपचारैः पूजनमहं करिष्ये।

फिर कलश-स्थापन-पूर्वक गणेश आदि का पूजन कर नागों का नीचे दिये मंत्र से पूजन करे—

ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ये अन्तरिक्षे ये दिविम्न तेभ्यः सर्वेभ्यो नमः इति नागेभ्यो नमः।

पूजा कर चुकने पर समर्पण पढ़े। यथा—

धूपदीपनैवेद्यादिभिर्यथाकृतमर्चनं तेन गणेशगौर्या सह तक्षका-द्यष्टकुलीनागाः सन्तुष्टाः वरदाः भवन्तु।

फिर विसर्जन करे। यथा—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामप्रदानाय पुनरागमनाय च।

---

७ तुला-दान

माघ की अमावास्या को बालकों का तुलादान होता है। उसकी विधि यह है—

पहले कलश का स्थापन कर गणेश आदि का पूजन करे। इसके बाद—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण—यह मन्त्र पढ़कर तुला का गन्ध, अक्षत और पुष्प से पूजन करे। फिर घी-गुड़ की नैवेद्य देकर और आचमन कराकर नमस्कार करे—

नमस्ते सर्वभूतानां साक्षिभूते सनातनि।
पितामहेन देवि त्वं निर्मिता परमेष्ठिना॥
त्वया धृतं जगत्सर्वं सहस्थावरजंगमम्।
सर्वे भूतात्मभूतेशि नमस्ते सर्वधारिणि॥

इस प्रकार तुला का नमस्कार कर उस पर बालक को बैठाकर यह मन्त्र पढ़े—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

फिर बालक के हाथ में जल देकर संकल्प पढ़े। संकल्प के अन्त में यह वाक्य जोड़ दे—

इदं द्रव्यं आत्मसन्तुलितं विभज्य नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे तेन श्रीयज्ञपुरुषोवासुदेवः प्रीणातु।

इसके बाद बालक पर जल छिड़क कर मंत्र से तिलक करे।

फिर दक्षिणा देकर यह मंत्र पढ़े—

कृतैतत् तुलारोहणकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं इमां ताम्रमयीं दक्षिणां ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

अन्त में अक्षत छोड़ कर विसर्जन करे—

यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् । इष्टकामप्रदानाय पुनरागमनाय च ॥

---

८ होलिका-पूजन

कर्त्ता हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प पढ़े। संकल्प-वाक्य के अन्त में यह कहे—

अमुक शर्मा सांवत्सरिकयोगक्षेमार्थं गणेशादिसह होलिकायाः यथोपचारैः पूजनमहं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प पढ़ गणेश आदि का पूजन कर होलिका का—

शिशिरस्यान्तके देवि वसन्तमदनप्रिये।
आगतासि विधानेन पूजां मे हर होलिके॥—इस मंत्र से पूजन करे।

पूजन कर चुकने पर समर्पण पढ़े। यथा—

धूपदीपनैवेद्यादिभिर्यथाकृतमर्चनं तेन गणेशगौर्यासह होलिकादेवि सन्तुष्टा वरदा भव।

फिर यह मंत्र पढ़ कर नमस्कार करे—

अर्चिता ब्रह्मणा देवि विष्णुना शंकरेण च।
इन्द्रादिलोकपालैश्च होलिके कमलालये॥

तब अग्नि लाकर होली को जलावे और उसकी प्रदक्षिणा करे। फिर सूत अपने बराबर से कुछ अधिक नाप कर अपने सिर पर सात बार घुमाकर सरसों के साथ होली में छोड़ दे।

फिर होली को तापे और उसके जल चुकने पर विसर्जन करे। यथा—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामप्रदानाय पुनरागमनाय च॥

---

९ शमीपूजन

विजयादशमी के दिन लोग साफ-सुथरे वस्त्र पहन कर ग्राम के बाहर निकलते हैं। उस समय वे शमी-वृक्ष के पास जाकर उसकी पूजा करते हैं। पूजा के पहले संकल्प छोड़े। उसके अन्त में यह कहे—मम दुष्कृतादि-निरासार्थक्षेमार्थञ्च शमीपूजां करिष्ये। इसके बाद नीचे के मन्त्र से उसकी सोलह प्रकार से पूजा करे।

अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।

पूजा के बाद नीचे के मन्त्र से प्रार्थना करे—

शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका।
धरित्र्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी॥
करिष्यमाणयात्रायां यथाकालं सुखं मया।
तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते॥

प्रार्थना करने के बाद शमी की एक शाखा तथा उसकी जड़ की मिट्टी को लेकर घर लौट आवे।

---

१० गङ्गास्नान

गंगा-स्नान की बड़ी महिमा है। गंगा-स्नान करके गंगा की बन्दना नीचे दी गई 'स्तुति' से करे—

ॐ विष्णोः पादप्रसूतासि वैष्णवी विष्णुपूजिता।
पाहि नस्त्वेनसस्तस्मादाजन्ममरणान्तकात्॥
तिस्रः कोट्यार्धकोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत्।
दिविभुव्यंतरिक्षे च तानि ते सन्ति जाह्नवि॥
नंदिनीत्येव ते नाम देवेषु नलिनीति च।
वृन्दा पृथ्वी च शुभगा विश्वकाया शिवा सिता॥

विद्याधरी सुप्रसन्ना तथा लोकप्रसाधिनी ।
क्षेम्या च जाह्नवी चैव शान्ता शान्तिप्रदायिनी ॥
एतानि पुण्यनामानि स्नानकाले प्रकीर्तयत् ।
भवेत्संनिहिता तस्य गंगा त्रिपथगामिनी ॥
नमामि गंगे तव पादपंकजम् सुरासुरैर्वंदितदिव्यरूपम् ।
भुक्तिञ्चमुक्तिञ्च ददासि नित्यम् भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥
या गतिर्योगयुक्तानां मुनीनामूर्ध्वरेतसाम् ।
सा गतिः सर्वजन्तूनां जाह्नवीतीरवासिनाम् ॥

---

११ भस्मधारण विधि

यज्ञ-कुण्ड की भस्म या अपने किये हवन की भस्म बायें हाथ में लेवे, उसके ऊपर दाहना हाथ रख कर नीचे लिखे मंत्र पढ़े—

ॐ अग्निरिति भस्म । वायुरिति भस्म । जलमिति भस्म । स्थलमिति भस्म । व्योमेति भस्म । सर्वं ह वा इदं भस्म । मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि ।

ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमः । भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्म्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽस्तु सदा शिवोम् ।

इस प्रकार भस्म को अभिमन्त्रित कर उसमें नीचे की विधि से जल मिलावे। पहले मन्त्र का विनियोग पढ़े—

ॐ त्र्यम्बकं इति मंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिः मृत्युञ्जय देवता अनुष्टुप् च्छन्दः जलमिश्रणे विनियोगः।—

इसके बाद—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात्।

यह मन्त्र पढ़ कर जल मिलाकर अनामिका, मध्यमा और तर्जनी से ललाट, हृदय, नाभि, कंठ, दक्षिण-बाहुमूल, मध्यमणिबन्ध, वामबाहु मध्य मणिबन्ध, पृष्ठ, और शिर में गायत्री-मन्त्र पढ़ता हुआ भस्म लगावे। भस्म से खड़ा तिलक न लगावे।

---

१२ पादोदक-ग्रहणमंत्र

विष्णु का पादोदक या निर्माल्य ग्रहण करने का मन्त्र यह है—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं य इच्छति।
शालिग्रामशिलावारि पापहारि नमोऽस्तुते॥

---

१३ भोजन-विधि

भोजन करने के पहले आचमन करे। उसके बाद भोजन की थाली को जल से घेर दे।

तब निम्न वैदिक मंत्र पढ़े—

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्ययो विश्वा रूपाणि हरिता बभूव।
यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो-अस्तु वयꣳ स्याम पतयोरयीणाम्।

ॐ यन्तुनदयोवर्षन्तु पर्जन्यः सुपिप्पलाओषधयो भवन्तु। अन्नवतां ओदनवतां आमिक्षवतां एषां राजा भूयांसम् ॥

ॐ ओदनं उदब्रुवते, परमेष्ठि वा एषः, यद् ओदनः परमां एवैनं श्रियं गमयति ॥

इसके बाद अपने दाहने थाली के पास निम्न मन्त्रों से ५ ग्रास रक्खे—

१ चित्राय स्वाहा, २ चित्रगुप्ताय स्वाहा, ३ यमाय स्वाहा, ४ यमधर्माय स्वाहा, ५ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

भोजन कर चुकने के बाद उक्त ग्रास गाय, कुत्ता या बिल्ली आदि के आगे डाल दे।

---

१४ यज्ञोपवीतधारण

पहले नीचे का विनियोग पढ़े—

ॐ यज्ञोपवीत मंत्रस्य गौतमात्रेयभरद्वाजा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि ब्रह्माविष्णुर्महेश्वरो देवताः मम नित्यनैमित्तिककाम्यकर्म्मकर्तुं यज्ञोपवीतग्रहणे विनियोगः।

इसके बाद करन्यास करे—

ॐ यज्ञोपवीतं अंगुष्ठाभ्यां नमः। परमं पवित्रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। बृहस्पतेर्यत्सहजं मध्यमाभ्यां व षट्। पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यम् अनामिकाभ्यां हुँ। प्रतिमुञ्च शुभ्रं कनिष्ठाभ्यां वौ षट्। यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। इसी प्रकार षडंगन्यास करे।

न्यास के बाद ध्यान करे—

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती। नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी। हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥

अब नीचे का मन्त्र तीन बार पढ़े—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं बृहस्पतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
इसके बाद गायत्री-मन्त्र तीन बार पढ़े।

ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती।
यशोभगश्च मा विदध्व सोमा प्रतिपद्यताम्॥—यह मन्त्र एक बार पढ़े।

ॐ यस्त्वे प्राणः पंशुषु प्रविष्टो देवानाविष्टा मुनयो वितस्थे।
आत्मन्वान् सोमघृतवाहिसूं गच्छ स्वर्यजमानाय विन्द॥—यह मन्त्र एक बार पढ़ कर यज्ञोपवीत धारण करे।

पुरातन यज्ञोपवीत-विसर्जन मन्त्र।

ॐ पवित्रमन्तं यदि जीर्णवन्तं वेदान्तवेद्यं पुरुषं प्रधानम्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतन्तु विसर्जनीयम्॥
यह मन्त्र पढ़कर पुराने यज्ञोपवीत का त्याग करे।

---

१५ गोग्रास-दान का मंत्र

नीचे के मन्त्र से गाय को ग्रास दे—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥

---

१६ सोमवती अमावास्या का संकल्प

सोमवती अमावास्या को स्त्रियाँ पीपल-वृक्ष का पूजन करती हैं तथा ११३ या १३ लड्डुओं, छुहारों या गरी के गोलों आदि का दान करती हैं। संकल्प में यथास्थान नीचे का वाक्य मिलाकर पढ़े—

अमुक गोत्रा अमुक नाम्नी सोमवतीव्रत परिपूर्णता सिद्ध्यर्थं इमान् मिष्ठमयमोदकान् वा खजूरफलान् वा नारिकेल फलान् त्रयो-

दशोत्तर शतसंख्यकान् अथवा त्रयोदश संख्यकान् नाना नाम ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

यह संकल्प कर यथाविधि दान करे। इसके बाद हाथ में जल लेकर—

मोदक वा फलदान कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं ताम्रमयी दक्षिणां विष्णुप्रीतये ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

पंचगव्य-निर्माण

गायत्री-मन्त्र से छना हुआ गोमूत्र पात्र में डाले; फिर—ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्—इस मन्त्र से गोबर; फिर—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमविष्ण्यम्। भवावाजस्य संगथे—इस मन्त्र से दूध; फिर—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्राणऽआयूंषि तारिषत्—इस मन्त्र से दही; फिर—ॐ तेजोसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि। प्रियं देवानामना धृष्टं देव यजनमसि—इस मन्त्र से घी पात्र में डाले। इसके बाद—ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्—यह मन्त्र पढ़कर उन सबको एक में मिला दे।

४ नवग्रह-पूजा

नवग्रहों के होम में—

सूर्य को मदार, चन्द्रमा को पलाश, मंगल को खैर, बुध को अपामार्ग, बृहस्पति को पीपल, शुक्र को गूलर, शनि को शमी, राहु को दूब और केतु को कुश अर्पण किया जाता है।

सूर्य की मूर्ति मिश्रित धातु की गोल १२ अंगुल व्यास की, चन्द्रमा की एक बीता अर्द्ध चन्द्राकार, मंगल की ६ अंगुल चौड़ी त्रिकोणाकार, बुध की दो अंगुल चौड़ा सोने का धनुष, बृहस्पति की कमलाकार, शुक्र की चाँदी की चौकोर, शनि की लोहे का त्रिशूल, राहु की लोहे का मकर और केतु की लोहे के साँप की होती है।

***

दसवाँ अध्याय

व्रत, पूजा और स्नान के दिन

हिन्दुओं में व्रत या उपवास की बड़ी महिमा है। प्राचीन काल में तो बड़े कठोर व्रत किये जाते थे। उदाहरण के लिए 'अतिकृच्छ' और 'चान्द्रायण' को लीजिए। 'अतिकृच्छ' में एक कौर भोजन किया जाता था। यह नौ दिन का व्रत था। चान्द्रायण-व्रत पूर्णिमा को १५ कौर खाकर शुरू किया जाता था। उसके बाद प्रत्येक दिन एक कौर कम खाया जाता था, यहाँ तक कि प्रतिपदा को एक ही कौर खाने को रहता था। इसके बाद फिर एक-एक कौर के क्रम से भोजन बढ़ाया जाता था और अमावास्या को १५ कौर हो जाते थे। इस प्रकार यह एक महीने का व्रत था।

परन्तु वर्तमान समय में ऐसे व्रतों का प्रचार नहीं रहा, तो भी व्रत नियमपूर्वक बराबर किये जाते हैं। वैष्णव लोग प्रत्येक मास दोनों एकादशियों का व्रत करते हैं, परन्तु व्रत में कन्द-मूल, फल और दूध खाया-पिया जाता है। शैव भी महीने में दो बार त्रयोदशी को प्रदोष का व्रत करते हैं।

---

१ विष्णु-सम्बन्धी व्रत

(१) रामनवमी—चैत्र शुक्ल नवमी रामचन्द्र का जन्म-दिन है। इस अवसर पर रामायण का नौ दिन तक पाठ होता है। नौमी को व्रत रक्खा जाता है और रात में जागरण।

राम की मूर्ति सीता और लक्ष्मण की मूर्तियों के सहित बनाकर पूजी जाती है। जिस दिन नवमी को पुनर्वसु मिले उसी दिन व्रत होता है। यदि

पुनर्वसु न हो तो जिस दिन दोपहर को नवमी हो तो उसे व्रत का दिन मानना चाहिए।

(२) नृसिंह-चतुर्दशी—वैशाख शुक्ल चतुर्दशी नृसिंह का जन्म-दिन है। नृसिंह के उपासक त्रयोदशी के दिन केवल एक बार भोजन करते हैं। और चतुर्दशी को दोपहर के समय स्नान करते हैं। सन्ध्या को चावल, गेहूँ या दूसरे धान्य की राशि पर जल-घट स्थापित करके उसके मुँह के ऊपर के पात्र पर सोने की नृसिंह-मूर्ति रखकर उसकी पूजा होती है। रात्रि भर जागरण होता है। दूसरे दिन मूर्ति की पूजा करके देवता का विसर्जन कर वह मूर्ति पुरोहित को दे दी जाती है। जिस दिन सूर्यास्त तक चतुर्दशी होती है उस दिन व्रत किया जाता है और सन्ध्या-समय नृसिंह की पूजा होती है।

(३) कृष्ण-जन्माष्टमी—भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को कृष्ण का जन्मोत्सव होता है। इस अवसर पर लोग व्रत तथा जागरण करते हैं।

(४) वामन-द्वादशी—भाद्रपद शुक्ल द्वादशी वामन का जन्म-दिन है। इस अवसर पर एकादशी को व्रत रक्खा जाता है और दोपहर में वामन की पूजा होती है। धान्य-राशि पर जल-घट रखकर उसके ढँकने के पात्र में चावल भर उसपर भिक्षुक के रूप में वामन की मूर्ति रखकर पूजा की जाती है। रात भर जागरण होता है। द्वादशी को तड़के स्नान करके पिछले दिन की तरह फिर पूजा होती है। इसके बाद भोजन होता है। एक लड़का जिसका उपनयन हो गया हो, खिलाया जाता है और उसे धोती, जूता, छाता और दण्ड दिया जाता है।

(५) वर्ष के प्रत्येक मास की दोनों एकादशी तिथियों को विष्णु का व्रत और जागरण किया जाता है।

---

२ शिव-सम्बन्धी व्रत

(१) प्रत्येक मास की त्रयोदशी शिव के व्रत का दिन है। शुक्ल पक्ष की

त्रयोदशी 'प्रदोष' कही जाती है। इस अवसर पर नक्षत्र-दर्शन तक व्रत रक्खा जाता है। सन्ध्या-काल में शिव का पूजन करके नक्षत्र देखे जाने पर भोजन किया जाता है। इसमें सन्ध्या-काल ही पवित्र समय माना गया है।

कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी 'शिवरात्रि' कही जाती है। प्रदोष के ही नियम शिवरात्रि में भी बरते जाते हैं। माघ की शिवरात्रि 'महाशिवरात्रि' कही जाती है। इस दिन पूरी तिथि का व्रत होता है। प्रत्येक तीसरे घंटे पर रात्रि में शिवलिंग की पूजा की जाती है। क्रम से दूध, दही, घी और मधु से स्नान तथा केतकी-पुष्प और बिल्वपत्र से पूजा की जाती है। दूसरे दिन चतुर्दशी को तिल का तेल लगाकर स्नान होता है। शिवलिंग का मंत्रों से तथा सहस्रनाम के पाठ से पूजन होता है तथा १०८ बिल्वपत्र चढ़ाये जाते हैं। इसके बाद भोजन करते हैं। जिस दिन चतुर्दशी अर्द्धरात्रि में मिलती हो, फिर प्रदोष में मिलती हो तो वह शिवरात्रि है। इसे कालरात्रि कहते हैं।

(२) प्रत्येक सोमवार को भक्तजन शिव का विशेष रूप से पूजन करते हैं।

(३) प्रत्येक मास की प्रत्येक चतुर्थी को गणेश की पूजा होती है।

(४) कार्तिक शुक्ल पञ्चमी कार्तिकेय का दिन है। इस दिन २४ घंटे का व्रत रक्खा जाता है और रात के चारों प्रहर में कार्तिकेय की चार बार पूजा होती है।

(५) त्रिपुरा पूर्णिमा—कार्तिक की पूर्णिमा महाशिवरात्रि कहलाती है। इसी दिन शिव ने त्रिपुरासुर का वध किया था। भक्त लोग गंगा-स्नान और ब्राह्मणों को दीपदान करते हैं। सन्ध्या-समय दीपक जलाकर शिव-मन्दिरों में रक्खे जाते हैं। घरों में भी जलाये जाते हैं जो रात भर जलते हुए रक्खे जाते हैं। स्त्रियाँ दीपक के सामने प्रार्थना करती हैं।

(६) मौन-व्रत भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा को रक्खा जाता है। पुरुष ही मौन रहकर शिव का पूजन करते हैं। घर के सब लोग भोजन करते समय मौन रहते हैं और स्त्रियाँ भोजन बनाते समय।

(७) घण्टाकर्ण-पूजा—फाल्गुण की अमावास्या को होती है।

(८) कालभैरव की पूजा--प्रत्येक मास की कृष्णाष्टमी को होती है।

(९) विष्णु-शिव दोनों की तिथियाँ—

(क) वैकुण्ठ चतुर्दशी—कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को विष्णु और शिव दोनों की एक साथ पूजा होती है।

(ख) हरिहर-यात्रा—कार्तिक पूर्णिमा।

(ग) दत्तात्रेय-पूर्णिमा—मार्गशीर्ष पूर्णिमा।

---

३ देवी-संबन्धी व्रत

(१) नवरात्र—आश्विन शुक्ल पक्ष के प्रथम नौ दिन नवरात्र के माने जाते हैं। नवरात्र का पारणा नवमी-विद्धा दशमी में प्रातः करके देवी का विसर्जन करना चाहिए। यदि दशमी नवमी-विद्धा न हो तो नवमी को ही करना चाहिए।

पूजा करने वाला प्रतिदिन दोनों समय सतैल स्नान करता है। प्रतिमा या घट स्थापित कर दुर्गा की दिन में तीन बार पूजा करता है और एक बार भोजन करता है।

(२) सरस्वती-पूजा—आश्विन शुक्ल सप्तमी को जब चन्द्रमा मूल नक्षत्र में जाता है, घर के सब धर्म-ग्रंथ एकत्र रक्खे जाते हैं और उनके ऊपर सरस्वती की प्रतिमा रखकर आवाहनादि-द्वारा मंत्रों से सरस्वती की पूजा की जाती है। दूसरे दिन अष्टमी को भी उसी प्रकार पूजा की जाती है। तीसरे दिन नवमी को दक्षिणा देकर विसर्जन होता है।

(३) सीता नवमी--वैशाख शुक्ल नवमी—यह उत्सव अब बंगाल में मनाया जाता है। इसके लिए मध्याह्न-व्यापिनी तिथि ग्रहण की जाती है।

(४) षष्ठी देवी—बच्चों के जन्म पर स्त्रियाँ उसके कल्याण के लिए षष्ठी की पूजा करती हैं।

(क) अशोक षष्ठी--चैत्र शुक्ल षष्ठी को उत्तरी भारत में स्त्रियाँ बच्चों के

कल्याण के लिए षष्ठी की पूजा करती हैं। स्त्रियाँ अशोक की छः कलियाँ पानी में डुबो कर पीती हैं।

(ख) अरण्य षष्ठी—ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी—बंगाल और दक्षिणी भारत में। स्त्रियाँ जंगल में जाती हैं, केवल फल खाती हैं और पंखा आदि षष्ठी के मन्दिर में चढ़ाती हैं ताकि सुन्दर और बलवान् बच्चे पैदा हों।

(ग) षष्ठी—ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी—पश्चिमी भारत में। बिल्ली और देवी की पूजा की जाती है। पूजा करनेवाली फलाहार करती है और दूध पीती है।

(घ) खसषष्ठी—पौष शुक्ल षष्ठी को व्रत रक्खा जाता है।

(५) महालक्ष्मी-व्रत—आश्विन कृष्ण सप्तमी को व्रत और पूजन होता है। सन्ध्या-समय लक्ष्मी का षोडशोपचार से पूजन होता है और उनको नैवेद्य बाँटी जाती है।

(६) शीतलादेवी—इनकी पूजा के लिए मुख्य मुख्य दिन नियत हैं।

(क) शीतला सप्तमी—श्रावण कृष्ण सप्तमी गुजरात में।

(ख) शीतला षष्ठी—माघ शुक्ल षष्ठी बंगाल में।

(ग) शीतला अष्टमी—फाल्गुन अष्टमी उत्तरी भारत में।

शीतला की पूजा के दिन गरम या पकाया भोजन नहीं करना चाहिए, न पानी पीना चाहिए।

(७) देवी के अन्य दिन—

(क) चैत्र शुक्ल अष्टमी—उत्तरी भारत में इस अवसर पर अन्नपूर्णा की पूजा होती है। स्त्रियाँ इस दिन पार्वती का जन्मोत्सव भी मनाती हैं।

(ख) रम्भा-तृतीया—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया—उत्तरी भारत में स्त्रियाँ रम्भा की पूजा करती हैं।

(ग) राधा-अष्टमी—भाद्रपद शुक्ल अष्टमी—बंगाल में इस अवसर पर राधा की इच्छा-शक्ति के रूप में पूजा होती है। पुरुष फल, फूल और रत्नों से पूजा करते और व्रत रखते हैं।

(८) पिठोरी—श्रावण की अमावास्या—इस दिन सधवा स्त्रियाँ ७ शक्तियों और ६४ योगिनियों की पुत्र-प्राप्ति के लिए और अपने सौभाग्य के लिए पूजा करती हैं। यह पूजा कभी-कभी करती हैं। वही स्त्रियाँ नियम-पूर्वक करती हैं, जिनका पुत्र मर जाता है।

पूजा करनेवाली स्त्रियाँ अमावास्या को व्रत करती हैं। स्नान करने के बाद एक कपड़ा लेकर उसपर शुभ चिन्ह बनाती हैं। उसके ऊपर ८ घट रखती हैं और उनके पास ६४ योगिनियों के लिए भूमि पर चावल के आटे की ६४ मूर्तियाँ बनाती हैं या सुपारी रखकर नाम ले लेकर पूजा करती हैं। पूजा के बाद घर के लड़के को प्रसाद दिया जाता है। फिर पुरोहित को दक्षिणा दी जाती है। इसके बाद एक या अधिक सधवाओं को भोजन दिया जाता है।

---

४ सूर्य के पर्व

१—प्रत्येक संक्रान्ति के दिन सूर्य देवता की पूजा की जाती है, परन्तु अब केवल चार ही मुख्य संक्रान्तियाँ मानी जाती हैं—मकर, मेष, कर्क और तुला।

सूर्य की पूजा में जल, दूध, दही, घी, तिल, सरसों, चावल और कुश लगते हैं।

२—श्रावण के प्रत्येक रविवार को सूर्य देवता की पूजा होती है।

३—जब सूर्य हस्त नक्षत्र में आश्विन के महीने में आते हैं तब सूर्य देवता की पूजा होती है। इस अवसर पर सोने के बने हाथी पर शिव, गौरी और गणेश की सोने की प्रतिमायें रखकर ब्राह्मण को दान देने का माहात्म्य है। इसे 'गजगौरी-व्रत' कहते हैं।

---

५ चन्द्र-सम्बन्धी दिन

(१) पूर्णिमा और अमावास्या के दिन चन्द्रमा की पूजा होती है और व्रत रक्खा जाता है।

(२) विनायकी संकष्ट—प्रत्येक शुक्ल और कृष्णपक्ष की चौथ को कुछ लोग चन्द्रमा की पूजा करते हैं और व्रत रखते हैं, सन्ध्या होने के बाद अँधेरा होने पर खाते हैं। परन्तु अब चन्द्रमा के स्थान पर गणेश की पूजा और व्रत किया जाता है। कृष्णपक्ष में चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा की पूजा होती है।

(३) शुक्ल पक्ष की द्वितीया—प्रत्येक महीने की शुक्ल द्वितीया चन्द्रमा की पूजा का दिन है।

(४) सोमवार—यह दिन भी चन्द्रमा की पूजा का दिन है।

---

६ ग्रह-सम्बन्धी

(१) श्रावण मास के बुध और बृहस्पति के दिन बुध और बृहस्पति की पूजा के दिन हैं। इनकी पूजा सवेरे माला से होती है। यदि अन्न की कामना है तो इनकी प्रतिमायें अन्नपात्र पर बनाई जाती हैं और यदि धन की कामना है तो धन-भण्डार में।

(२) शुक्र—श्रावण के शुक्रवार शुक्र की पूजा के दिन हैं। परन्तु अब श्रावण के इन दिनों दोपहर बाद चार बजे तक लक्ष्मी का व्रत रक्खा जाता है।

(३) शनि—श्रावण के शनिवारों में धन की प्राप्ति के लिए शनि की पूजा की जाती है। ये शनिवार 'संवत्' शनिवार कहे जाते हैं। इन दिनों पीपल के वृक्ष की जड़ पर (उस वृक्ष के नीचे) वेदी बनाई जाती है। उस पर शनि की मूर्ति बनाई जाती है। वृक्ष की परिक्रमा की जाती है और शनि

को काली वस्तुएँ जैसे काला नमक, कोयला या भैंसा प्रदान किया जाता है। लोहे की अंगूठी भी पहनी जाती है।

---

७ स्नान और दान के कुछ पर्व

(१) बृहस्पति का प्रवेश यदि कुम्भ-राशि में हो तो वह काल गंगा और यमुना में स्नान के लिए विशेष रूप से शुभ होगा। यही कुम्भ पर्व होता है।

(२) अर्धोदय—निम्न पाँच बातों के एक साथ होने से अर्धोदय होता है १ सूर्योदय अमावास्या के साथ हो, २ सूर्य मकर राशि में हो, ३ चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र में हो, ४ ये बातें रविवार को हों, ५ पूष के महीने में हो। इस योग पर स्नान और दान का बड़ा माहात्म्य है। यह योग बीस-पचीस वर्ष के बाद पड़ता है।

(३) कपिल-षष्ठी—निम्न छः बातों के एक साथ होने से यह योग होता है—१ भाद्रपद का मास, २ कृष्ण पक्ष की षष्ठी, ३ मङ्गलवार, ४ रोहिणी चन्द्रमा से युक्त, ५ हस्त में सूर्य और ६ व्यतीपात योग हो। दान के लिए यह अपूर्व योग है। यह योग प्रति ६० वर्ष के बाद पड़ता है।

(४) सोमवती—अमावास्या का सोमवार के दिन होना सोमवती है। इस दिन दान का माहात्म्य है।

सोमवार को अमावास्या पड़ने पर वह सोमवती कहलाती है। इस दिन लोग स्नान करते और व्रत रखते हैं। यही नहीं, उस दिन रेशमी वस्त्र पहनते हैं, मौन रहते हैं और पीपल की १०८ परिक्रमायें करते हैं। सोना, रत्न और फल की भेट चढ़ाते हैं, जो बाद को ब्राह्मण को दे दिया जाता है। सोमवती के लगने का समय ही इस पर्व का स्नान-काल है। स्नान करके शिव का विधिपूर्वक पूजन करे।

(५) ग्रहण—चन्द्र या सूर्य दोनों ग्रहण शुभ हैं। चन्द्र-ग्रहण सोमवार को और सूर्य-ग्रहण रविवार को पड़े तो यह चूड़ामणि-योग होगा, जो और भी शुभ होता है।

(६) अक्षय तृतीया—वैशाख कृष्ण तृतीया—यदि यह बुध को पड़ती है और चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में होता है तो विशेष रूप से शुभ होती है।

(७) निम्न तिथियों में दान देने की विशेष महिमा है—

१—शुक्ल या कृष्ण पक्ष की चौथ जब मङ्गलवार को हो, २—शुक्ल पक्ष की सप्तमी यदि रविवार को हो या संक्रान्ति में पड़े, ३—अष्टमी यदि बुध के दिन हो, ४—एकादशी यदि पुनर्वसु के साथ हो, ५—द्वादशी यदि दो साथ साथ पड़नेवाली एकादशियों के बाद या दो साथ साथ पड़नेवाली पूर्णिमाओं के पहले पड़ जाय।

(८) वारुणी—चैत्र कृष्ण त्रयोदशी या फाल्गुण कृष्ण त्रयोदशी—जब चन्द्रमा शत तारका नक्षत्र में जाता है तब यह पर्व माना जाता है। यह स्नान का पर्व है।

---

८ फुटकर

१ ध्वजारोपण—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नये वर्ष के प्रवेश पर।

एक बाँस के सिरे पर स्त्री की कंचुकी या वस्त्र का टुकड़ा तथा पीने का पात्र बाँध कर मकान के पास के वृक्ष पर या अपने घर में ध्वजा के रूप में स्थापित करते हैं। इस दिन नीम की पत्तियाँ चबायी जाती हैं।

२—अक्षय-तृतीया—इस दिन के स्नान, जाप, दान आदि का बड़ा माहात्म्य माना जाता है। इस अवसर पर स्नान के बाद ब्राह्मणों को पंखे, छाते और द्रव्य का दान किया जाता है, जो अक्षय समझा जाता है। इसके सिवा ताजा पानी घट में भर कपूर, सुपारी, द्रव्य, फूल, अक्षत, दूर्वा आदि छोड़, मुँह पर नारियल रख, माला पहना तथा पूजाकर तथा तुलसी-पत्र डालकर ब्राह्मण को दान करते हैं। इसे उदक-कुम्भ-दान कहते हैं। यह तृतीया परशुराम का जन्मदिन भी है अतः इस दिन परशुराम की पूजा का विधान

किया गया है। यदि इस तिथि को बुधवार और रोहिणी नक्षत्र पड़ जाय तो इस पर्व का माहात्म्य और भी अधिक हो जाता है।

३ दशहरा या गंगोत्सव—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक। यदि ज्येष्ठ में मलमास पड़ता है तो यह उत्सव मलमास के ज्येष्ठ में होता है। दशहरा के गंगा-स्नान व पूजन के लिए नवमीविद्धा दशमी न मिले तो सूर्योदय-व्यापिनी दशमी ग्रहण करनी चाहिए।

४ वट-सवित्री—ज्येष्ठ की पूर्णिमा—यह पूजा सधवा स्त्रियाँ करती हैं। घर में वट, सावित्री, यम और सत्यवान की मूर्तियाँ चन्दन और चावल के आटे से भूमि या दीवार पर बनाई जाती है। फिर उनकी पूजा की जाती है और वट की पत्तियाँ उनपर चढ़ाते हैं। घर के बाहर वट की पूजा की जाती है और डोरे से उसे लपेटते हैं तथा पैसे और फल चढ़ाये जाते हैं।

५ व्यास-पूजा—कार्तिक पूर्णिमा को तथा आषाढ़ की पूर्णिमा को छात्र-गण गुरु-पूजा करते हैं। आषाढ़ की पूर्णिमा को हरि-पूजा, कोकिला-व्रत, अम्बिका-व्रत, शिवपूजा आदि भी की जाती है। पूजा और व्रत के लिये सायंकाल तक रहनेवाली पूर्णिमा ली जाती है।

६ नागपञ्चमी—श्रावण शुक्ल पञ्चमी—इस अवसर पर चौथ की दोपहर से व्रत रखा जाता है। पंचमी को सवेरे स्नान कर द्वार के दोनों ओर दीवार पर सर्प की मूर्ति गोबर या कोयले से बनाकर उसकी या चित्र की पूजा की जाती है। पूजा पुष्प, लाजा, अक्षत, और दूध से होती है। साँप के रहने के स्थान में लाजा और दूध रक्खा जाता है। उस दिन खेत नहीं जोतते हैं, न भूमि ही खोदते हैं। स्त्रियाँ भी उस दिन चक्की नहीं चलातीं, न चावल पीसती हैं, न तरकारी काटती हैं। नागपूजा के बाद इन्द्राणी की पूजा की जाती है।

७ श्रावण-पूर्णिमा—पवित्र रोपण और रक्षा-बन्धन। श्रावणी-कर्म के लिए कार्यकाल-व्यापिनी पूर्णिमा ली जाती हैं।

८ कुशोत्पाटनी अमावास्या—भाद्रपद की अमावास्या को प्रातःकाल स्नान करके कुश खोदे जाते हैं। इस दिन के खोदे कुश वर्ष भर काम में लाये जाते हैं। यह अमावास्या कार्यकाल-व्यापिनी ग्रहण की जाती है।

९ हरितालिका—भाद्रपद शुक्ल तृतीया।

हरितालिका-पूजा कुमारी पति-प्राप्ति के लिए और विवाहिता सौभाग्य के लिए करती हैं। उस दिन तड़के सतैल स्नान करती हैं। स्वच्छ मिट्टी के चार शिवलिंग बनाती हैं, जिसमें एक पार्वती के लिये होता है। पूजा के बाद सधवा स्त्री को दान दिया जाता है। दिन भर निर्जल व्रत रक्खा जाता है, केवल केला खाया जाता है। रात्रि भर जागरण होता है। दूसरा दिन होते ही तड़के फिर पूजा करके विसर्जन होता है।

१० ऋषि-पञ्चमी—भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी—इस पंचमी तथा श्रावण की पूर्णिमा को नक्षत्रों की पूजा की जाती है। जिन सप्तर्षियों की पंचमी के दिन पूजा होती है, वे ये हैं—कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ (अरुन्धती)। यह स्त्रियों की पूजा है। फलाहार करके वे ऋषिपूजन करती हैं।

जो स्त्री पंचमी के दिन पूजा नहीं कर पाती है वह वामन-द्वादशी को कर लेती है।

काष्ठ-खण्ड पर चौक पूर कर पानी से भर एक ताम्र-घट रखा जाता है। यह नये वस्त्र से लपेटा जाता है। इसके बाद अक्षतों की आठ कुरियाँ लगाई जाती हैं। प्रत्येक कुरिया पर सुपारी और पवित्री (कुश की) रखी जाती है। द्रव्य, सुगन्ध, फूल और अक्षत पात्र पर रक्खे जाते हैं और उन कुरियों की पूजा की जाती है।

इस दिन १०८ बार डुबकी लगाकर स्नान किया जाता है। अगर घर में स्नान होता है तो १०८ बार लोटे से ही पानी छोड़कर, तिल-तैल आदि लगाकर स्नान होता है। स्नान के बाद पंचगव्य का पान करना पड़ता है :

सात वर्ष लगातार पूजा करने पर इसका उद्यापन कर दिया जाता है, पर दूसरा मत है कि प्रति वर्ष करना चाहिए।

इसी तिथि को दधीचि का जन्म हुआ था, अतएव इस दिन दधीचि-जयन्ती भी मनाई जाती है।

११ अनन्त चतुर्दशी—भाद्रपद शुक्ल १४—इस दिन अनन्त की विष्णु रूप में पूजा की जाती है। यह पूजा पुरुष ही करते हैं। यह उदया-तिथि ली जाती है।

सवेरे स्नान करके व्रत रखा जाता है। दोपहर के समय ताम्र-कलश में पानी भर कर रक्खा जाता है जो वस्त्र से ढँका जाता है। फिर दूब को उमेठ कर साँप के आकार का करते हैं। फिर चावल की वेदी बनाकर उस पर घट को रखते हैं। उसके आगे दूब का साँप रखते हैं। फिर मंत्रों से दोनों की पूजा की जाती है और १४ प्रकार के फल चढ़ाये जाते हैं। फिर लाल रेशम के १४ तागों का एक डोरा बटते हैं और उसमें १४ गाँठें लगा कर उस डोरे की पूजा कर हाथ में बाँधते हैं। यह प्रत्येक वर्ष नया बदला जाता है। पुराना डोरा दक्षिणा आदि के साथ पुरोहित को दे दिया जाता है।

१२ विजया दशमी—आश्विन शुक्ल दशमी—इस अवसर पर निम्न बातें की जाती हैं—

(क) शमी वृक्ष की पूजा की जाती है और उसकी पत्तियाँ मित्रों में सोने के रूप में बाँटी जाती हैं।

(ख) सन्ध्या-समय गाँव के बाहर एक विशेष स्थान में भैंसे की बलि दी जाती है, जिससे ग्रामवासी रोगादि से बचे रहें। वह भैंसा एक महीना पहले इस कार्य के लिए चुन लिया जाता है और खूब खिलाया जाता है। बलिदान हो चुकने पर वह उसी स्थान में गाड़ दिया जाता है।

(ग) ग्रामवासी गाँव की सीमा के पार तक जाते हैं। लौटने पर स्त्रियाँ उनका स्वागत और आरती करती हैं।

(घ) लोग अपने अपने पेशे के औजारों की पूजा करते हैं। क्षत्रिय लोग अस्त्र-शस्त्रों और हाथी-घोड़े आदि की पूजा करते हैं।

१२ कोजागर—आश्विन शुक्ल पूर्णिमा—इसे नवान्न भी कहते हैं। फसल का नया अन्न इस दिन खाया जाता है। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है और जागरण किया जाता है। इसके लिए लोग पाँसा खेलते हैं। इस पूर्णिमा को रास पूर्णिमा भी कहते हैं। रात के समय कृष्ण की गोपियों की पूजा की जाती है। खीर पकाकर चाँदनी में रख दी जाती है। उसी का भोग लगाते हैं। रात भर जागरण करके चार बजे प्रातः स्नान कर वह खीर लोग खाते हैं।

१३ दीपावली—इस अवसर पर ५ त्योहार होते हैं—

(१) धनत्रयोदशी—कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस कहते हैं। इस दिन लोग सतैल स्नान करते हैं। व्यापारी लोग अपना हिसाब-किताब समाप्त करते हैं और बही-खाता तथा रोकड़ एकत्र कर उनकी पूजा करते हैं। दीप-माला इसी दिन से जलाई जाती है और ५ दिन तक बराबर जलाई जाती है।

(२) नरक-चतुर्दशी—चन्द्रोदय तक मिले वह चतुर्दशी ग्रहण करे। नरकासुर को कृष्ण ने इसी दिन मारा था। इसी से इसे नरक-चतुर्दशी कहते हैं। इस दिन तेल लगाकर अपामार्ग और चकबक से शरीर का प्रोक्षण कर और उसे चारों ओर घुमाकर स्नान करे। ऐसा करने से साल भर चोरों का भय नहीं रहता। इस दिन यम और भीष्म को वे भी जलदान दें जिनके माता-पिता जीवित हों। सन्ध्या समय नरक-निवृत्ति के लिए ४ बत्ती का दीपक यम देवता के लिए सर्वप्रथम जलाना चाहिए।

(३) लक्ष्मी-पूजा—यदि अमावास्या आधी रात तक हो तो उसी दिन लक्ष्मी-पूजा करनी चाहिए। इसको महारात्रि कहते हैं। रात्रि में लक्ष्मी और कुबेर का पूजन होता है। इस दिन निर्जल व्रत करना चाहिए या फिर फलाहार या दूध लेना चाहिए। सन्ध्या से रात्रि भर घर का प्रत्येक भाग प्रकाशित रखकर जागरण करना चाहिए। दूसरे दिन सवेरे (दीपावली)

दधि, दूध आदि से पार्वण-श्राद्ध करे, फिर महालक्ष्मी को दीपदान करे और श्वेत वस्त्र पहनकर भोजन करे। इस दिन श्वेत वस्त्र पहने और पूजा में श्वेत पुष्प ही काम में लावे।

(४) कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्द्धन की पूजा, गोपूजा और अन्नकूट होता है। अन्नकूट को वह प्रतिपदा ली जाती है जिसमें शाम को द्वितीया न पड़ती हो।

(५) यम-द्वितीया--दोपहर तक द्वितीया हो उसे ग्रहण करना चाहिए। भाई को बहन के घर जाकर भोजन करना चाहिए। विशेषतः चावल खिलाने का विधान है। भाई बहन का वस्त्र, द्रव्य आदि से सत्कार करे। यमुना-स्नान और सूर्य तथा यम का पूजन करे।

१४—युगों के प्रारम्भ के दिन—(१) सत्ययुग का वैशाख शुक्ल तृतीया; (२) त्रेता का कार्तिक शुक्ल नवमी; (३) द्वापर का भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी; (४) कलियुग का माघ शुक्ल पूर्णिमा। युगों के आदि के इन दिनों पर लोग पवित्र नदियों या सरोवरों में स्नान कर ब्राह्मणों को दान देते हैं तथा पितरों का तर्पण करते हैं।

त्रेता और द्वापर युगादि की तिथियाँ तो नहीं मनाई जाती हैं। परन्तु कलि की युगादि माघ पूर्णिमा को सारे उत्तरी भारत में मनाई जाती है। इन चारों में सत्य युगादि की बड़ी महिमा है। इसके जन्म-दिन को अक्षय-तृतीया कहते हैं।

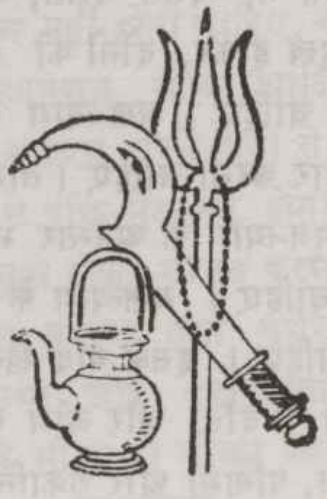

ग्यारहवाँ अध्याय

शास्त्र का आदेश

१ स्मृति का सदाचार

(१)

आत्मा की उन्नति के लिए सदाचार का पालन करना आवश्यक है। जो कर्म धर्म को लक्ष्य कर किया जाता है, वह सदाचार कहा जाता है।

सदाचारों में पहला कृत्य ब्रह्ममुहूर्त में अर्थात् सूर्योदय से एक घंटा पहले सोकर उठ बैठना है। उस समय सावधान होकर ईश्वर का स्मरण आदि करना चाहिए। फिर पृथ्वी को नमस्कार कर शैय्या से उठकर हाथ-मुँह धोकर मलमूत्र त्याग करने के लिए बाहर जाना चाहिए। मलमूत्र त्याग करते समय बोलना, खखारना और हाँफना नहीं चाहिए। अग्नि, जल, सूर्य, वायु और पूजनीय लोगों के सामने मलमूत्र नहीं त्याग करना चाहिए। जहाँ मलमूत्र त्याग करे, वहाँ अधिक देर तक न ठहरा रहे। रास्ते में, भस्म पर, गोचारण-भूमि में, जोती हुई भूमि में, चिता-स्थान में, पर्वत पर, जीर्ण देव-मन्दिर में, वल्मीक पर, प्राणियुक्त गर्त में, चलते चलते, खड़े खड़े, दिन में उत्तर-मुख होकर, रात्रि में दक्षिण-मुख होकर, दोनों की सन्धियों में उत्तर-मुख होकर मलमूत्र नहीं त्याग करना चाहिए। मल-त्याग के बाद शौच-क्रिया में मिट्टी और शुद्ध जल का व्यवहार करना चाहिए। तीन बार मिट्टी लगा कर हाथ-पैर भी धोना चाहिए। मूत्र-त्याग के अनन्तर भी जल से शुद्ध होना चाहिए और हाथ-पैर भी धोना चाहिए। मलत्याग के बाद हाथ-पैर धो चुकने पर मुख और आँखें धोनी चाहिए। इसके बाद खैर, कदम्ब, आम, नीम, बेल और मौलसिरी की दातून से दाँत और जीभ साफ़ करनी चाहिए। चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति के दिन काठ की दातून से

दाँत-जीभ नहीं साफ़ करनी चाहिए। पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके दतून करनी चाहिए।

दतून आदि कर चुकने पर स्नान करना चाहिए। स्नान मौन रहकर करना चाहिए। अस्वस्थ होने पर सिर न धोकर भी स्नान हो सकता है अथवा गीले वस्त्र से शरीर पोछकर स्नान का काम चल सकता है। स्नान के समय शरीर में विशेष कर सिर, कान और पैर में तेल लगाना चाहिए। परन्तु सवेरे के स्नान में, व्रत या श्राद्ध के दिन, द्वादशी तथा ग्रहण-काल में तेल नहीं लगाना चाहिए।

स्नान के बाद अपने अपने सम्प्रदाय के अनुसार चन्दन, भस्म और तिलक लगाकर माता, पिता, गुरुजन तथा घर में जो कुल-देवता हो इन सब को प्रणाम कर नित्य-कर्म तथा इष्ट-देवता का पूजन करना चाहिए।

मध्याह्न-कृत्य में भोजन मुख्य है। परन्तु भोजन करने के पहले होम, वैश्वदेव, बलि, अतिथि-सेवा, नित्य-श्राद्ध, गोग्रासदान आदि कर्म कर लेना चाहिए। भोजन-कर्म भी एक प्रकार का यज्ञ है, इसलिए उसमें पवित्रता का पूरा ध्यान रक्खा जाता है। चाहे जिस स्थान में तथा खड़े खड़े भोजन नहीं करना चाहिए। अर्थात् भोजन का स्थान गोमय, जल आदि से शुद्ध हो तथा एकान्त में हो। भोजन करनेवाला भी स्नान आदि से शुद्ध हो तथा भोजन-सामग्री भी शुद्ध और सात्विक हो। भोजन में नीच तथा अधम जनों का संसर्ग नहीं होना चाहिए, क्योंकि अधमों के परस्पर आलाप, स्पर्श, एकत्र शयन, उपवेशन, भोजन आदि में शरीर से शरीरान्तर में पाप का संक्रमण होता है। अतएव अपने जनों से भी एक पंक्ति में भोजन के समय भस्म, तृण या जल से पंक्ति-भेद कर लेना चाहिए। गोमयलिप्त स्थान में लघु आसन पर पूर्व-मुख होकर भोजन करना चाहिए।

अपराह्न-कृत्य में इतिहास, पुराण तथा धर्मशास्त्र की चर्चा करनी चाहिए। सन्ध्या-समय सायं-सन्ध्या और इष्टोपासनादि कार्य करने चाहिए। फिर रात्रि में एक प्रहर रात्रि के भीतर ही भोजन करके सो जाना चाहिए।

---

(२)

श्रुति-स्मृति में कहे हुए धर्म के मूल सदाचार का सदा सेवन करे। सदाचारवान् पुरुष वेद में कही हुई आयु, पुत्र, पौत्रादि और अक्षय धन पाता है। परवश का जो जो कार्य है वह सब दुःख है, अपने वश का सब सुख है। जिस कर्म को करते हुए अन्तरात्मा को सन्तोष हो उसको करे और जो मन को न जँचे उसे न करे। परलोक में अविश्वास, धर्म में आलस्य, वेद और देवताओं की निन्दा, अभिमान, क्रोध और क्रूरता कभी न करे।

सत्यधर्म, सदाचार और पवित्रता में सदा मन लगावे। जिसको पिता, पितामहादि ने ग्रहण किया हो उसी का सदा अनुसरण करे, क्योंकि वह सत्पुरुषों का मार्ग है। जो उस पर चलता है उसका कभी कोई अनिष्ट नहीं होता। ऋत्विक, पुरोहित, आचार्य, मामा, अतिथि, आश्रित, बालक, वृद्ध, पीड़ित, वैद्य, सम्बन्धी, कुटुम्बी, माता, पिता, भागिनेय, बधू, भ्राता, स्त्री, कन्या और सेवक से झगड़ा कभी न करे।

यदि भूख से पीड़ित हो तो भी दान न ले। कोई कुछ माँगे तो उसके ऊपर रुष्ट न होकर यथाशक्ति उसे अवश्य दे। जलदान करने से तृप्ति होती है और अन्नदान से अक्षय सुख मिलता है। जहाँ दाता आदर के साथ देता है और लेनेवाला आदर के साथ लेता है, वही देना-लेना सार्थक है।

परलोक में पिता, माता आदि सम्बन्धी कोई भी सहायता करने को नहीं होगा, एक धर्म ही सहायक होगा, अतएव ऐसे महत्त्वपूर्ण धर्म का अवश्य संग्रह करना चाहिए। धर्म की सहायता से प्राणी नरक से निस्तार पाते हैं और स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त करते हैं। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को वश में करके तथा मन को संयम में रखके शरीर को क्लेश न देकर उपाय से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना चाहिए। रूप-रस आदि इन्द्रियों के विषयों में बहुत आसक्त नहीं होना चाहिए।

आये हुए विद्या और अवस्था में ज्येष्ठ का अभिवादन अवश्य करना चाहिए।

शास्त्रानुसार कुटुम्ब का पालन, नित्य-नैमित्तिक कर्म का अनुष्ठान आदि करने के लिए, शरीर को भोजन-वस्त्र आदि का क्लेश न होने देने के लिए अनिन्दित कर्मों से धन का सञ्चय करना चाहिए।

सन्तोष, अपकार करने वाले से बदला न लेना, विषय की ओर मन को न जाने देना, अन्याय से पराये धन को न लेना, स्नान आदि से शरीर को शुद्ध रखना, इन्द्रियों को अपने हाथ में रखना, शास्त्र-ज्ञान, आत्म-ज्ञान, सत्य का व्रत और क्रोध न करना—ये दस बातें मुख्य धर्म है। इनका सदा पालन करना चाहिए।

शरीर, मन और वचन से जो शुभाशुभ कर्म किये जाते हैं उस कर्म की गति के अनुसार ही लोक में मनुष्यों को उत्तम, मध्यम तथा अधम गति मिलती है। पराया धन अन्याय से लेने की इच्छा, मन से दूसरे का अनिष्ट सोचना, परलोक को न मानना—ये तीन अशुभ मानस-कर्म हैं। कठोर वचन, मिथ्याभाषण, परोक्ष में दूसरों की निन्दा करना, राजा तथा अपने ग्रामवासियों के सम्बन्ध में अंडबंड बकना—ये चार वाणी के अशुभ कर्म है। बिना दिए धन का लेना, अवैध हिंसा करना, पराई स्त्री में अनुरक्त होना—ये शरीर के अशुभ कर्म हैं।

अपनी अवस्था, कर्म, धन, वेदपाठ और कुलाचार के अनुसार वेष, वाणी और बुद्धि से व्यवहार करता हुआ प्राणी इस लोक में अपना जीवन बितावे।

---

२ तन्त्र का उपदेश

(१)

आध्यात्मिक सत्य एक पवित्र वस्तु है। यही नहीं वह ईश्वरीय सन्देश है। ईश्वर की प्रेरणा के बिना वह किसी को विदित नहीं होता और न वह उसको विदित होता है जो विशेष ईश्वरीय विभूति से विभूषित नहीं होता।

प्रत्येक धर्म के दो रूप होते हैं। एक सैद्धान्तिक और दूसरा व्यावहारिक।

हिन्दू-धर्म प्रारम्भ से लेकर अन्त तक क्रियामय है। सिद्धान्त की अपेक्षा उसमें क्रिया को अधिक महत्व दिया गया है। क्रिया के ही द्वारा उसके सत्य तत्त्वों का ज्ञान हो सकता है। उसका सैद्धान्तिक भाव केवल अध्ययन तथा विचार के लिये है। परन्तु उससे अधिक महत्वपूर्ण उसका क्रिया-भाग साधकों के लिये है।

सभी वस्तुओं में ब्रह्म के अस्तित्व का अनुभव होना सर्वोच्च स्थिति है। विचार करना मध्यम है और निम्नतम स्थिति स्तोत्र-पाठ तथा जप है। बाह्य पूजा तो सब से निकृष्ट है।

मानसिक पूजा श्रेष्ठ और बाह्य पूजा हीन होती है। देवता के पूजन से स्वयम् साधक आदृत होता है। जप से मन्त्र की सिद्धि होती है और हवन से सभी बातों में सिद्धि प्राप्त होती है। इस कारण साधक को ये तीन बातें—पूजा, जप और हवन—करनी ही चाहिए।

पूजा तीन प्रकार की होती है—नित्य, नैमित्तिक और काम्य—नित्य-पूजा वह है जिसे साधक नित्य करता है और जिसका न करना पाप है, जैसे—सन्ध्या आदि। नैमित्तिक वह जिसका न करना पाप नहीं है, परन्तु जिसे किसी विशेष अवसर पर करना पड़ता है। काम्य-पूजा वह है जो किसी उद्देश की सिद्धि के लिए की जाती है।

जो साधक इष्ट-देवता का नित्य पूजन करता है वही नैमित्तिक-पूजा का अधिकारी है और जब वह नैमित्तिक पूजा में सिद्धि प्राप्त कर लेता है तब काम्य पूजा करने का उसे अधिकार प्राप्त होता है। शास्त्र का यही आदेश है कि जब साधक नित्य और नैमित्तिक दोनों प्रकार के पूजनों में निरत रहता है तभी वह काम्य पूजा करने के योग्य होता है।

पूजा-यज्ञ के चार हाथ ध्यान, अर्चना, जप और हवन हैं; मातृका, षोढा तथा दूसरे न्यास उसका शरीर है; इष्ट-देवता के रूप में असली सत्य का ज्ञान उसकी आत्मा है; भक्ति उसका मस्तक है; सम्मान उसका हृदय है; और कर्म-काण्ड उसका नेत्र है। यज्ञ के शरीर को इस प्रकार निर्मित जानते हुए श्रेष्ठ

साधक को उसे अवयव-सहित करना चाहिए, विभाग करके उसका अङ्ग-भङ्ग नहीं करना चाहिए।

मनुष्य को देवता का पूजन देवता बनकर करना चाहिए। उसे देवता की पूजा बिना स्वयं देवता बने कदापि न करनी चाहिए। यदि वह बिना देवता बने देवता की पूजा करता है तो उसे उस पूजा का फल नहीं प्राप्त होता है।

जब तक साधक पंच-शुद्धि नहीं करता तब तक वह देवता की पूजा कैसे कर सकता है? आत्म-शुद्धि, स्थान-शुद्धि, मन्त्र-शुद्धि, द्रव्य-शुद्धि और देव-शुद्धि पंचशुद्धियाँ हैं। पंच शुद्धि के बिना पूजा अभिचार मात्र है। (१) स्नान, भूत शुद्धि, प्राणायाम, आदि और षडङ्ग न्यास तथा अन्य न्यास करना आत्म-शुद्धि है। (२) पूजा-गृह को दर्पण के समान स्वच्छ रखना और मङ्गल-जनक रङ्ग विरङ्गे आभूषणों, पुष्प-मालाओं, धूप-दीप से सज्जित रखना स्थान-शुद्धि है। (३) मूल-मन्त्र को मिला कर मातृका मन्त्र को अनुलोम और विलोम जपना मन्त्र-शुद्धि है। मूल मन्त्र और अस्त्र मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को पूजा-द्रव्यों पर छिड़कर धेनु मुद्रा दिखलाना द्रव्य-शुद्धि हुई (५) देवता की मूर्ति पीठ पर बिठाकर प्राण-मन्त्र से उसकी शक्ति का आवाहन कर उसे तीन तीन बार मूल मन्त्र से स्नान करा और कपड़े, आभूषण आदि पहना धूप-दीप से पूजन करना देवता-शुद्धि है।

(२)

यदि आत्मा ही आत्मा को हानि से दूर नहीं रखती है तो इस संसार में कहाँ ऐसा उपकारी है जो आत्मा की इस संसार-सागर से रक्षा कर सकता है? यदि मनुष्य नरक को ले जाने वाले रोग की चिकित्सा इस संसार में नहीं करता है तो वह क्या करेगा जब इस रोग के साथ दूसरे लोक में पहुँचेगा जहाँ इस रोग की कोई दवा ही नहीं है। जब तक यह शरीर है तब तक परम सत्य की खोज करनी चाहिए।

शेरनी की भाँति वृद्धावस्था जीव को निगल जाने के लिए मुँह खोले हुए प्रतीक्षा कर रही है। जैसे फूटे हुए घड़े से पानी बराबर निकलता रहता

है, उसी प्रकार जीवन-काल सदा क्षीण होता रहता है। रोग सदा चोट करते रहते हैं जैसे शत्रु मकान को घेर लेते हैं। अतएव लोगों को चाहिए कि जहाँ तक सम्भव हो शीघ्र ही अपने लाभ के काम में लग जायँ।

समय भिन्न भिन्न बातों में बीतता रहता है किन्तु उसका ज्ञान जीव को नहीं रहता। संसार के सुख-दुख जीव को मार डालते हैं, तो भी वह आत्मा की भलाई का मार्ग नहीं जानता। कितने जीव जन्म लेते, संकटों में पड़ते, दुःख और कठिनाइयाँ झेलते और अन्त में मर जाते हैं। ऐसों की दशा भी जीव को ज्ञान नहीं प्रदान करती, क्योंकि भ्रम की मदिरा पीने से वह उन्मत्त रहता है और अपनी भलाई का ज्ञान उसे नहीं रहता।

सुख स्वप्न के सदृश है यौवन पुष्प की भाँति क्षणिक है और जीवन बिजली की झलक की भाँति निकल जाता है। जिस व्यक्ति ने यह सब कुछ देख लिया है वह कैसे सन्तुष्ट रह सकता है?

मनुष्य अधिक से अधिक सौ वर्ष तक जी सकता है। इसका आधा सोने में बीत जाता है। शेष आधा बचपन, रोग, वृद्धावस्था, दुःख और ऐसे ही दूसरी बातों में बेकार हो जाता है।

मूर्ख जीव आत्मगत तत्त्व को नहीं देखता, किन्तु उस मूर्ख गड़रिये की भाँति शास्त्रों के अध्ययन के चक्कर में पड़ा रहता है जो बकरा तो अपनी गोद में लिये हुए है तो भी वह उसे छाया में देखता है जो कुएँ के पानी में दिखाई पड़ती है।

कुछ लोग सत्य के स्थल के सामने, कुछ उसके पीछे, कुछ बायें और कुछ दाहने खड़े हुए हैं और यह कहते हुए आपस में लड़ रहे हैं कि सत्य का रूप ऐसा है जैसा हम बताते हैं।

वेद और दूसरे शास्त्र बहुत हैं, परन्तु जीवन क्षणिक है। इसके सिवा इस जीवन में लाखों विघ्न-बाधायें हैं। अतएव लोगों को केवल शास्त्रों का तत्त्व ग्रहण करना चाहिए, जैसे पानी में मिले हुए दूध को हंस निकाल कर पी जाता है।

बुद्धिमान आदमी आज ही कल का काम कर डालेगा और सन्ध्या का दोपहर में ही, क्योंकि मृत्यु किसी काम के समाप्त या असमाप्त होने की परवा नहीं करती, वह अपना हाथ साफ करने से नहीं चूकती ।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा दूसरे देवता एवं सभी प्रकार के प्राणी अपने अपने विनाश की ओर जारहे हैं । अतएव जीव को ऐसे ही कामों के करने में मन लगाकर तत्पर होना चाहिए जो इहलोक तथा परलोक में फलप्रद होने वाले हों ।

सारे अस्तित्व की जड़ शक्ति है । शक्ति से ही विश्व का उद्भव हुआ है, उसी से वह रक्षित है और अन्त में उसीमें लीन हो जायगा । शक्ति ही परब्रह्म है । परब्रह्म सत्, चित् और आनन्द है । शक्ति के ही द्वारा इन तीनों गुणों का एक में निर्देश होता है । चित् शक्ति को कहते हैं और शेष दो उसके साथ साथ चलते हैं, क्योंकि चित् के बिना न तो सत् है और न आनन्द है । अतएव शक्ति ही एकमात्र सच्चिदानन्द है ।

परिशिष्ट

१ शवदाह

तिथितत्त्व में लिखा है—मृत्यु के बाद शव को श्मशान में ले जाकर रक्खे। दाह करनेवाला स्नान करके पिण्डदान के लिए अन्न का पाक करे। फिर मृतक के शरीर में घी लगावे। इसके बाद शव को स्नान करावे। स्नान कराते समय नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़ता जाय—

ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः।
कुरुक्षेत्रञ्च गंगां च यमुनां च सरिद्वराम्॥
कौशिकीं चन्द्र भागां च सर्वपापप्रणाशिनीम्।
भद्रावकाशां गण्डक्यां सरयूं पनसां तथा॥
वैनवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि सरितः सागरांस्तथा॥

स्नान कराकर शव को नये वस्त्र से लपेट दे। फिर कुश डालकर शव का मस्तक दक्षिण की ओर करके उसे कुशों पर रक्खे। इसके बाद उसकी आँखों, नाक के दोनों छिद्रों, दोनों कानों और मुँह—इन सात छेदों में सोने के टुकड़े रख दे।

यह सब कर चुकने पर दाहकर्त्ता चिता के पास जाकर पिंडदान करे। वहाँ पहले भूमि पर थोड़ा गोबर गिराकर अपसव्य हो जाय और बायें घुटने को टेक कर बैठे। इसके बाद—ॐ अपहता सुरारक्षांसि वेदिसद—यह मंत्र पढ़कर कुश की जड़ से भूमि पर एक रेखा खींचे। फिर उस रेखा पर कुश बिछाकर—ॐ एहि प्रेत सौम्य गम्भीरेभिः पूर्वणेभिदे ह्यस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रपिञ्च नः सर्ववीरं नियच्छ—यह मंत्र पढ़कर प्रेत को बुलावे। फिर बायें हाथ में तिल पड़े हुए जलपात्र को लेकर दाहने हाथ में उसे ले लेवे और—ॐ अद्य अमुक गोत्र प्रेत अमुक नाम शर्मा अवने-

निक्ष्व—यह पढ़कर पात्र के जल को कुशों पर गिरा दे।

इसके बाद तिल-सहित पिण्ड लेकर कुशों पर रख दे।

यह सब हो जाने पर शव को उठाकर चिता पर रक्खे। पुरुष के शव को पट और स्त्री के शव को चित रक्खे। इसके बाद दाहकर्त्ता अग्नि को अपने हाथ में लेकर यह वाक्य कहे—रानं दहन्तु। फिर उस अग्नि को हाथ में लिये वह चिता की तीन बार प्रदक्षिणा करे। प्रदक्षिणा करते समय नीचे लिखे मंत्र बराबर पढ़ता रहे—

ॐ कृत्वा तु दुष्करं कर्म जानता वाप्यजानताम्।
मृत्युकालवशं प्राप्य नरं पञ्चत्वमागतम्॥
धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमा वृतम्।
दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु॥

प्रदक्षिणा कर चुकने पर दाहकर्त्ता दक्षिण की ओर मुँहकर शव के सिर की ओर चिता में आग लगा दे। जब चिता जल जाय तब प्रादेश प्रमाण की सात लकड़ियाँ लेकर सात बार चिता की प्रदक्षिणा करे। प्रत्येक प्रदक्षिणा के पूरी होने पर उक्त सात लकड़ियों में से एक एक लकड़ी चिता में डालता जाय। जब शव जल जाय तब—कव्यादाय नमस्तुभ्यम्—यह मंत्र पढ़कर एक बाँस से चिता पर सात बार प्रहार करे। सातवें बार इस तरह प्रहार करे कि शव का सिर फूट जाय। यह कृत्य करके दाहकर्त्ता बिना चिता की अग्नि की ओर देखे वामभाग होते हुए जाकर स्नान करे। उसके साथ आये हुए लोग भी उसका अनुसरण करें। गुरुजनों को आगे करके दाहकर्त्ता स्नानार्थ जलाशय में प्रवेश करे।

स्नान हो जाने पर वस्त्रादि पहनकर अपसव्य होकर दक्षिण की ओर मुँह कर प्रेत को जल-दान करे।—ॐ अमुक गोत्र प्रेत अमुक नाम शर्माएतत ते तिलोदकं तृप्यस्व—यह मंत्र पढ़कर तीन बार अंजलि से जलदान करे। तर्पण कर चुकने पर सब लोग फिर स्नान करें और दाहकर्त्ता को आगे कर

सब लोग जलाशय से बाहर निकलकर किसी अच्छी जगह बैठकर सब लोग थोड़ी देर तक संसार की अनित्यता पर मन ही मन विचार करें।

इसके बाद घर आकर नीम की पत्ती को दाँत से काटे और—शमी पापं शमयन्तु—यह पढ़कर शमी का स्पर्श करे। फिर—अश्वमेव स्थिरो भूयांस—यह कह कर पैर से पत्थर का और—अग्निर्नः शमयच्छतु—यह कह कर अग्नि का स्पर्श करे। इसके बाद गाय, छाग, गोमय, उदक और पीली सरसों छू कर घर में प्रवेश करे।

शवदाह के बाद अंत्येष्टि का मुख्य कृत्य प्रारम्भ होता है, जिसके प्रारम्भ में दस दिन तक 'दशगात्र' होता है। दाह के बाद प्रतिदिन दस दिन तक पिण्ड-दान होता है। इस कर्म से दिवंगत आत्मा के नव शरीर का संगठन होता है। प्रथम दिन के पिण्ड-दान से कला-विकास, दूसरे दिन के पिण्ड से मांस, त्वचा और शोणित की उत्पत्ति, तीसरे दिन के पिण्ड से मति, चौथे दिन के पिण्ड से अस्थि-मज्जा, पाँचवें दिन के पिण्ड से हाथ, अंगुलियाँ, सिर और मुख, छठे दिन के पिण्ड से हृदय, कण्ठ, तालु, सातवें दिन के पिण्ड से आयु, आठवें दिन के पिण्ड से वाक्, नवें दिन के पिण्ड से समस्त इन्द्रियाँ और दसवें दिन के पिण्ड से अंग-प्रत्यङ्ग की पूर्ति होती है और तब वह आत्मा श्राद्ध आदि कृत्यों से सम्बन्ध स्थापित करने के योग्य हो जाती है।

---

२ दशगात्र-विधि

शास्त्र में बताये गये नियम के अनुसार शव का दाह करने के बाद सब से पहले जो प्रेत-कृत्य किया जाता है, उसे दशगात्र कहते हैं। इस दशगात्र में प्रेत के भिन्न-भिन्न दस अङ्गों की पूर्त्ति के लिए दस पिण्ड दिये जाते हैं। इसकी विधि यह है कि ये दसों पिण्ड दस दिन में एक एक कर के दिये जायँ। किन्तु सुविधा की दृष्टि से लोग दो-दो, तीन-तीन दिन के बाद भी पिण्डदान करते हैं और अशौच की समाप्ति तक दस पिण्ड समाप्त कर देते हैं।

नारायण-बलि करने पर केवल तीन दिन का अशौच होता है। इसलिए उन्हीं तीन दिनों में दस-गात्र के दस पिण्डदान कर देने होते हैं। इसका क्रम यह है कि पहले दिन तीन पिण्डदान किया जाय, दूसरे दिन चार और तीसरे दिन फिर तीन। कहीं कहीं यह क्रम भी है कि पहले दिन एक पिण्डदान कर दिया जाता है, दूसरे और तीसरे दिन क्रमशः चार और पाँच पिण्डदान किये जाते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रेत के अङ्गों की पूर्त्ति के निमित्त अशौच का अन्त होने से पहले दस पिण्डदान अवश्य करना चाहिए।

दशगात्र कर्म करने के निमित्त कर्त्ता के लिए उचित है कि वह स्नान करके पवित्र स्थान पर हविष्य तैयार करे, फिर "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा" इस मन्त्र के द्वारा कुशा से स्वयं अपने ऊपर तथा श्राद्ध की वस्तुओं पर जल छिड़क कर सबको पवित्र करे। बाद को आचमन करने के बाद अपसव्य होकर बाँयें घुटने के बल दक्षिण की ओर मुँह करके बैठे। पिण्ड-स्थान पर तीन कुशा इस प्रकार रक्खे कि उनका अग्रभाव दक्षिण की ओर हो। फिर एक दोने में जल; तिल, गन्ध, पुष्प डालकर उसे हाथ में ले और मोटक, तिल, जल लेकर अवनेजन का सङ्कल्प करे। सङ्कल्प के अन्त में यह वाक्य जोड़ना चाहिए—अमुकगौत्र पितः(या मृतक का कर्त्ता से जो सम्बंध हो) अमुक प्रेत प्रथम दिने शिरःपूरक प्रथमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इसके बाद तीनों कुशाओं के ऊपर दोने का आधा जल चढ़ा दे। फिर पिण्ड बना कर उसका सङ्कल्प करे। सङ्कल्प के अन्त में नीचे लिखा वाक्य जोड़ा जाता है—अमुकगोत्र पितः (या जो सम्बन्ध हो) अमुक प्रेत एष शिरःपूरक प्रथमपिडः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इसके बाद दोने में जो आधा जल बचा होता है, उसका संकल्प करके उसे पिण्ड पर चढ़ा दिया जाता है। संकल्प में नीचे लिखा वाक्य जोड़ दिया जाता है—

ॐ अद्य अमुकगोत्र पितः (सम्बन्ध नाम) अमुक प्रेत शिरःपूरक प्रथमपिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

बाद को प्रेत के निमित्त पिण्ड के ऊपर गन्ध, पुष्प, ऊन आदि चढ़ाकर, धूप, दीप, आदि से पूजन करे। बाद को पिण्ड पर तिलाञ्जलि (तिल और जल) चढ़ावे। जिसके संकल्प की कल्पना इस प्रकार है—

ॐ अद्य अमुक गोत्रस्य पितुः (या जो सम्बन्ध हो) अमुक प्रेतस्य यमाध्वगमन जन्यतृपाश्रमनिवारणार्थम् एष तिलतोयाञ्जलिः ते मया दीयते तवोपतष्ठिताम्।

बाद को पुष्प, जल, दीप, दक्षिणा आदि का संकल्प करे।

ॐ अद्य अमुक गोत्र पितः अमुक-प्रेत इदं पुष्पं इदं जलं।
एष धूपः एष दीपः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

दक्षिणा का संकल्प—

ॐ अद्य अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य शिरःपूरक प्रथम पिण्डदानप्रतिष्ठार्थम् इदं ताम्र सूर्य्यदेवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातु महमुत्सृजे।

इस प्रकार पिण्डदान कर चुकने पर शुद्धि के लिए फिर स्नान करना चाहिए।

ऊपर एक दिन के पिण्डदान की विधि बतलाई गई है। इसी प्रकार दस दिन तक प्रतिदिन पिण्डदान करना चाहिए और जैसा कि पहले कहा गया है, यदि कम दिनों में ही समस्त क्रिया समाप्त करनी हो तो प्रत्येक पिण्ड के लिए अलग-अलग पात्रों में हविष्य बनाकर क्रम से प्रत्येक दिन के कृत्य करने चाहिए। यहाँ हम क्रिया का विस्तार न देकर दूसरे दिन से लेकर दसवें दिन तक की क्रिया के समय पढ़े जानेवाले वाक्यों का ही संग्रह कर रहे हैं। पहले दिन के संकल्प की कल्पना के अनुसार मृतक का नाम-गोत्र और

उसके साथ अपने सम्बन्ध का उच्चारण करके क्रम से नीचे लिखे वाक्य पढ़कर प्रत्येक के अन्त में—अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्—यह जोड़ देना चाहिए और दोने का आधा जल कुशा पर चढ़ा देना चाहिए।

२ द्वितीयदिन—	कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयापिण्डस्थाने
३ तृतीयदिन—	गलांसभुजवक्षः पूरकतृतीयपिण्डस्थाने
४ चतुर्थदिन—	नाभिलिगगुदपूरकचतुर्थपिण्डस्थाने
५ पञ्चमदिन—	जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डस्थाने
६ षष्ठदिन—	सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डस्थाने
७ सप्तमदिन—	सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डस्थाने
८ अष्टमदिन—	दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डस्थाने
९ नवमदिन—	बलवीर्यपूरकनवमपिण्डस्थाने
१० दशमदिन—	पूर्णत्वतृप्तित्वक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डस्थाने

इस प्रकार अवनेजन कर चुकने के बाद पिण्ड का संकल्प करना चाहिए। जैसा कि प्रथम दिन की क्रिया के सिलसिले में बताया गया है, हाथ में मोटक, तिल और जल लेकर प्रत्येक पिण्ड के लिए नीचे लिखे वाक्य पढ़कर संकल्प करना चाहिए—

ओमद्य अमुक गोत्र पितः अमुक प्रेत

२ कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।
३ गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डः ते० ताम्।
४ नाभिलिङ्गगुदपूरकचतुर्थपिण्डः ते० ताम्।
५ जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डः ते० ताम्।
६ सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डः ते० ताम्।
७ सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डः ते० ताम्।
८ दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डः ते० ताम्।
९ बलवीर्यपूरकनवमपिण्डः ते० ताम्।

१० पूर्णात्वतृप्तित्वक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डः ते० ताम् ।

पिण्ड का संकल्प करने के बाद उसे प्रेत के निमित्त आसन पर रखकर प्रत्यवनेजन करना होता है अर्थात् नीचे लिखे वाक्य पढ़कर दोने का बचा हुआ जल पिण्ड पर चढ़ा देना होता है ।

ओमद्य अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत

२ कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डोपरि
३ गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डोपरि
४ नाभिलिङ्गगुदपूरकचतुर्थपिण्डोपरि
५ जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डोपरि
६ सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डोपरि
७ सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डोपरि
८ दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डोपरि
९ बलवीर्यपूरकनवमपिण्डोपरि
१० पूर्णत्वतृप्तित्वक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डोपरि

ऊपर लिखे हुए प्रत्येक वाक्य के अन्त में—"अत्रावनेनिक्ष्व ते मया-दीयते तवोपतिष्ठताम्"— यह वाक्य जोड़ देना चाहिए ।

प्रत्यवनेजन कर चुकने के बाद प्रेत की तृप्ति के निमित्त पिण्ड का पूजन करना चाहिए । इस सिलसिले में सब से पहले तिलतोयांजलि अर्थात् अञ्जलि के द्वारा तिल और जल चढ़ाना चाहिए । तिल-तोयाञ्जलि अर्पण करने की विधि यह है कि पिण्ड के क्रम से उसे बढ़ाता ·.य । पहले दिन एक अञ्जलि, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन आदि ।

तिलतोयाञ्जलि अर्पण करने का संकल्प इस प्रकार है—

१ ओमद्य अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डे एष तिल-तोयाञ्जलिः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ एषः प्रथमः तिलतो-याञ्जलिः ॥

२ ओमद्य० कर्णोक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डे द्वौ तिलतोयाञ्जली ते मया दीयते तवोपतिष्ठेताम् ॥

३ ओमद्य० गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डे त्रयः तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

४ ओमद्य० नाभिलिङ्गगुदपूरकचतुर्थपिण्डे चत्वारः तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

५ ओमद्य० जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डे पञ्चतिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

६ ओमद्य० सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डे षट्तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

७ ओमद्य० सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डे सप्ततिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

८ ओमद्य० दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डे अष्ट तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

९ ओमद्य० बलवीर्यपूरकनवमपिण्डे नव तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

१० अमोद्य० पूर्णत्वतृप्तित्वज्ञुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डे दश तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

अब गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य,, दक्षिणा आदि से पिण्ड का पूजन करके प्रथम दिन के कृत्य के सिलसिले में तिलतोयाञ्जलि अर्पण करने का जो मन्त्र दिया गया है उससे विशेष रूप से तिलतोयाञ्जलि अर्पण करना चाहिए; बाद को श्राद्ध की पूर्ति के निमित्त विष्णु का स्मरण करके विसर्जन करे।

दक्षिणा के सङ्कल्प की विधि प्रथम दिन के कृत्य के सिलसिले में बतलाई गई है, इसमें दिन के क्रम से वाक्य में परिवर्त्तन कर लेना चाहिए।

---

३ प्रेतलोक-दीपदान

शवदाह के बाद मृतक के लिये प्रति दिन सन्ध्या समय दीपक जलाया जाता है। उस समय जो संकल्प पढ़ा जाता है उसके अन्त में निम्न वाक्य जोड़ कर संकल्प छोड़ा जाता है।

प्रेतलोकादित्यवद् द्योतनकामः इमं दीपं विष्णुदैवतं नमः

---

४ वैतरणी-गोदान

मृत्यु के पहले जो गोदान किया जाता है उसे वैतरणी-गोदान कहते हैं। उसका जो संकल्प पढ़ा जाता है उसके अन्त में निम्न वाक्य जोड़कर संकल्प छोड़ा जाता है—

वैतरणी तरणार्थं इमां गां अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय विष्णु रूपाय तुभ्यं अहं संप्रदहे।

इस गोदान की दक्षिणा के संकल्प में यह वाक्य पढ़े—

ॐ अद्य वैतरणी गोदान प्रतिष्ठार्थं दक्षिणात्वेन तुभ्यं अहं सम्प्रददे।

---

५ आराध्य-देव।

ऋग्वेद, मण्डल १०, सूक्त १२१

(१)

स्वर्णगर्भ था आदि सृष्टि में, स्वामि सृष्ट भूतों का जो,
विश्व जगत का एक परम पति, पिता प्राणि पूतों का जो,
निम्न अवनितल ऊर्द्ध व्योम रच, रचना सुथल सुधारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है ?

(२)

आत्मद और बलद है जग का, जिसका विश्व पुजारी है,
जो उपास्य देवों का जिससे सृष्टि सुशासित सारी है,
छाया मृत्यु और अमृत है, जो अनादि अविकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है?

(३)

जड़ जङ्गम सचराचर सबका सबल स्वामि सुखदायक जो,
ज्येष्ठ स्वयम्भू, सर्वश्रेष्ठ, जग-नायक विश्व-विधायक जो,
भूचर, जलचर, नभचर, सबका जो प्रभु पोषणकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है?

(४)

सरिता सिन्धु सरोवर के मिस प्रकटी जिसकी रस धारा,
उपजाया जिसकी महिमा ने,गिरिवर का समूह सारा,
जिसकी बाहु दिशोपदिशायें, जो अनन्त अविकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें कौन हव्य अधिकारी है?

(५)

नीलाम्बर नभमण्डल जिसने धीर गँभीर स्तब्ध किया,
ऊपर स्वर्ग रचाया जिसने वसुधा को स्थिर रूप दिया,
दीप्त विमान समान बनाया अन्तरिक्ष सुखकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें कौन हव्य अधिकारी है?

(६)

पाकर शरण क्रन्दसी जिसकी धन्य सुभाग्य मनाते हैं,
मन ही मन इहलोक और पर जिसकी महिमा गाते हैं,
जिससे लेकर दीप्ति दिवाकर तेजोमय तमहारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है?

(७)

विस्तृत विश्व विशाल व्याप्त कर सलिल रूप में रमता था,
प्रकट किया पावक को उसने जिसे गर्भ में रखता था,
जिससे पाकर प्राण जगा, सब सुर-समूह सुखकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है?

(८)

जिसने उस जलमय स्वरूप से यज्ञ-अग्नि को उपजाया,
महिमा पूर्ण दृष्टि से देखा विपुल विश्व जो विरचाया,
जो देवाधिदेव देवों का ध्येय ज्ञेय अविकारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है,

(९)

जिसने रचा स्वर्ग, पृथ्वी का पालक पिता पुराना है,
सत्यधर्म सर्वेश्वर जिसने हिंसाभाव न जाना है,
सुन्दर सिन्धु, सुधाकर शीतल रचा विमल छविधारी है,
पूजें किसे, किसे आराधें, कौन हव्य अधिकारी है?

(१०)

विश्व प्रजापति जो कुछ तुमने जड़ चेतन जग विरचाया,
नियमित विधिगत है तुमसे ही यह अपार महती माया,
मनकामना सहित प्रभु अर्पित हव्य इसे स्वीकार करो,
पूर्ण करो, लो चरण-शरण में विभुवर बेड़ा पार करो।

(अनुवादक श्री भगवानदीन पाठक)

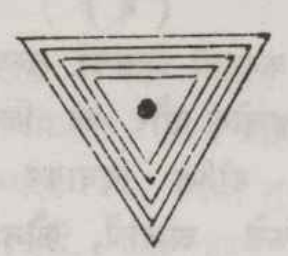

हिन्दुओं की पोथी

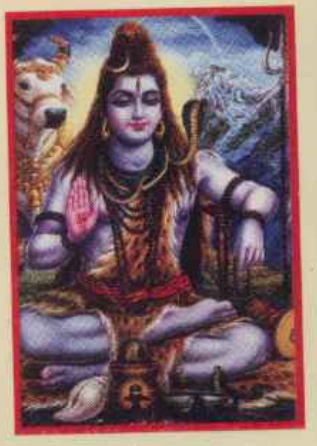

हिन्दुओं के दश संस्कार

हिन्दुओं के नित्य कर्म

सर्व-देव पूजा-विधि

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६ ☎ ०९२३५९१००७१